दिव्य आदेश

(भाग दो)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहांपुर, उ. प्र. (भारत)

दिव्य आदेश
(भाग दो)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर
दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी
साहब फ़तहगढ़ी, जिला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 19 जुलाई लग़ायत 26 सितम्बर, 1944 ई०

प्रथम संस्करण- 1999 - 1100 प्रतियां

© श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्य: Rs. 65/-

प्रकाशक :

श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग,
शाहजहांपुर, उ. प्र. (भारत)

मुद्रक :

वैरा प्रिन्टर्स, B-165, पाण्डव नगर, दिल्ली- 110092

प्रस्तावना

यह हमारे सौभाग्य की बात है कि हमें एक महान हस्ती के कुछ संदेशों को एक किताब के रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिला। यह **दिव्य संदेश** जो हमारे पूज्य बाबूजी महाराज को एक आदेश के रूप में मिले अगर उन सबको अपनी बुद्धि से सोचें तो यह प्रतीत होता है कि हमारे बाबूजी महाराज क्या हैं और किस-किस महान शक्तियों की प्रेरणा से उन्होंने सहज मार्ग की स्थापना की और मानव समाज के उद्धाधार के लिये जीवन पर्यान्त कार्यरत रहें। बाबूजी अपने जीवन में यह हमेशा कहा करते थे कि एक स्पेशल पर्सनालिटी का जन्म हो चुका है और उसके माध्यम से आध यात्मिक भावी दुनियाँ की अवरचना होगी। यहाँ तक कि उनके संदेशों में महाप्रलय तक की बात कह दी गयी है और यह समय ही बताएगा कब इसका प्रारम्भ होगा। यह संदेश कोई मामूली संदेश नहीं हैं बल्कि आगे आने वाली पीड़ी के लिए एक अनौखा संदेश है। हम सब को जीवन और मृत्यु की पहचान अभी से बना लेनी चाहिए। मनुष्य के जीवन में कितनी कठिनाईयाँ आती हैं जिनको भोगते हुए अनेकों जीवन बीत जाते हैं। उस जीवन मृत्यु के चक्र के बन्धन से कैसे छुटकारा मिले। यह हमारे पूज्य बाबूजी महाराज ने एक मार्ग दर्शाया जिस को 'सहज मार्ग' का नाम दिया। यह एक ऐसा मार्ग है जिससे इन्सान को जीवन और मृत्यु से छुटकारा मिल सकता है, और वह मोक्षा प्राप्त कर सकता है, मगर यह सब पाने के लिए हर अभ्यासी को अपना प्रयत्न जारी रखना है, बताये हुए उसूलों पर चलना है जिसमें भक्ति (Devotion), विश्वास (Faith) और आत्म समर्पण (Surrender) का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्वास एक ऐसी चीज है जो हर इन्सान की (thinking) विचारधारा को बदल देती है और जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं, उस पर दृढ़ विश्वास हो जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक, जिसका नाम **'दिव्य आदेश'** दिया गया है, उन संदेशों पर (Messages) आधारित है, जो डैरेक्ट हमारे बाबूजी महाराज को conscious state में दिये गये और अपनी जिन्दगी में उन्होंने अपने हाथों से डायरी में लिखे जो कि कई भाषाओं में लिखे हुए हैं। उसका रूपांतरण उर्दू के जानने वाले एक अच्छे अभ्यासी

श्री मदन मोहन गुप्ता जी के प्रयासों से किया गया, और यह पुस्तक उनके प्रयासों के वजह से आपके सामने इस शताब्दी वर्ष के सुअवसर पर प्रस्तुत करने में समर्थ हुए। साथ ही कम्प्यूटर चलाने वाले श्री पुनीत कुमार सक्सेना, श्री सुनीत कुमार सक्सेना, श्री गुरु प्रसाद तथा श्रीमती अमिता कुमारी के पारिश्रमिक सहयोग से संभव हुआ है। प्रस्तुत किताब के खूब-ब-खूब original script के तर्जुमें को सामने रक्खा गया है और इसमें किसी प्रकार का विचार परिवर्तन और नाही उनके शब्दों में परिवर्तन change किया गया है। इसमें से कुछ अंश ऐसे हैं जिसे हम छाप नहीं सकते और जिसे छापने से समाज में revolution पैदा होने का डर हो सकता है। चूंकि हमारा सहज मार्ग जात-पात, distinction in colour में विश्वास नहीं रखता है। हर जाति के लोग हमारी संस्था (system) में प्रवेश पा सकते हैं और हमारे सहज मार्ग से लाभान्वित हो सकते हैं। हमारी संस्था में लोग ना हीं किसी मजहब या धर्म की बात करते हैं ना ही किसी मजहब की हमारे यहाँ प्रधानता है। हमारे गुरु महाराज महात्मा रामचन्द्र जी ने एक Universal brotherhood, harmony का संदेश दिया है और हमारी यही कोशिश है कि हर भाई-बहन में भाईचारे की भावना पैदा हो और हमारे सहज मार्ग से जुडें और आत्म साक्षात्कार तथा ईश्वर साक्षात्कार का उन्हें ज्ञान हो सके। आधुनिक युग में कोई भी प्राणी बिना आध्यात्मिक सहायता के दिन-प्रतिदिन के जीवन को उचित रूप से चलाने में असमर्थ है। अब जो युग आने वाला है वह एक मुश्किलों का प्रतीक है और हर इन्सान को अब कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। इन कठिनाईयों का सामना करने में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

इसलिए यह हमारा सुझाव है कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना जरूरी है और यही एक मार्ग है जो आप को शांति पथ पर अग्रसर कर सकता है, गुरु जी महाराज के आशीर्वाद की सहायता से।

यह दिव्य आदेश 12 वाल्यूम में सबके सामने प्रस्तुत होंगे और कोशिश यह है कि यह 12 वाल्यूम 6 साल में लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकें। यही हमारी कोशिश है।

उमेश चन्द्र
अध्यक्ष
श्री राम चन्द्र मिशन

हिस्सा दोयम इरशादाते पीर

19.7.44

मुताल्लिक़ा बाबू दिलाराम= बाबू मदन मोहन लाल को बच्चों की ख़ैरियत और ख़ैरोआफ़ियत से कोई सरोकार नहीं है। अलबत्ता दुआ कर सकते हैं। और उनको लिख भी सकते हैं कि मैं उस लड़के की सेहत के लिए दस्त-ब-दुआ हूं।

ब्रह्मण की पदबी तक कल्याण नहीं है। जो शख़्स ब्रह्ममंडल में घूमता है और उससे आगे उसकी रसाई नहीं होती, वह ब्रह्मण कहलाता है। इन में भी ऊंचा दरजा महाब्रह्मण का होता है। उनकी चढ़ाई पारब्रह्ममंडल तक होती है। उसके आगे जाने वाला चारों वर्ण से रहित हो जाता है। मगर कल्याण यहां पर भी नहीं है। महब्राह्मण को ख़्याल पर मल्का अच्छा होता है। और वो कर्म कांड के पाबंद नहीं रहते। (नक़्शा सामने आ गया) वाक़ई दोनों बंधन में हैं। वो अपनी हद से किसी को ज़्यादा नहीं खींच सकते। यह सिर्फ़ संत में ताक़त है। इससे आगे संत का दर्जा शुरू होता है। इसको ज़ात की हवा काफ़ी लग चुकी है। (नक़्शा सामने आ गया)। आलमे कुद्स भी ठहरने की जगह नहीं और न उसको काफ़ी समझना चाहिऐ। (नक़्शा सामने आ गया)।

नोटः- नक्शे पर ग़ौर करने से मालूम हुआ कि यह एक इब्तदाई मरहला है। आगे बढ़ कर देखा तो इन्तिहा नहीं पाई।

भंडारे से पहले मैं तुमको एक चीज़ दूंगा।

मैंने अर्ज़ किया जो हुजूर मुनासिब समझें।

सुपर्दम ब तो माया ख़ेशरा।

(अर्थात= मैंने अपना सब कुछ आप के सुपुर्द कर दिया)।

फ़रमाया= मैं भी यह ही पढ़े देता हूं।

सुपर्दम ब तो माया ख़ेशरा

बादआ फरमाया= इसको नोट कर लेना ताकि आईंदा आने वाले सबक़ लें कि तुमने किस क़दर मझसे हमआहंगी इख़्तियार कर ली।

21.7.1944

तुम्हारी दिल की सैर **मुकम्मिल** हो चुकी है। दिल का (लतीफ़ाए-क़ल्ब) पहला Stage यह है कि तबियत में **यकसुई** पैदा हो जाए। दूसरा स्टेज **हुज़ूर-दवाम** है। यह कोई मामूली लतीफ़ा नहीं है। तीसरा स्टेज इसका **भूल** जाना है। इसके बाद फिर **सैर** शुरू होती है। बहुत सी बातें खुलना शुरू हो जाती हैं। आगे **अनुभव** से ताल्लुक़ है। ज़बान से अदा नहीं हो सकतीं।

रूह की सैर में यही बातें **ख़्याली सूरत** में रहती हैं। जोशो ख़रोश **खत्म** हो जाता है। **सब तरफ़** एक **हल्की** सी हालत मालूम होती है। तबियत **एतदाल पसंद बनने** लगती है। चड़क-भड़क **ग़ायब** हो जाती है। **सादगी** पैदा हो जाती है। इसको कहां तक बतलाया जावे, यह सब **अनुभव** से ताल्लुक़ है। ये क्या ख़्याल तुमने बांधा? **हर** लतीफ़े की सैर तुम्हारी **मुकम्मिल** हो चुकी और तुम्हें उस पर **मल्का** भी हासिल है। कोई बात बाक़ी नहीं है। यह सब बातें मैं अपनी ज़िंदगी ही में कर चुका था। **बन्दिशें** क़ायम रखी नहीं। उसका नतीजा यह हुआ कि तुम और भी ज़्यादा सुलग गये। **और** ताक़त कूट-कूट कर भर गई। और ज़ोर पैदा हो गया। क्योंकि उसके निकलने का रास्ता बंद था। अब सिर्फ ये बात पैदा की गई कि सबको **असल** में शामिल कर दिया गया। मगर और कोई नई बात नहीं की गई। जिन लोगों ने तुम्हारी हालत के बारे में कुछ कहा है, वो सही अंदाज़ा नहीं लगा सके। इसलिए कि उनकी पहुंच वहां तक नहीं थी।

नक़्शा

कंठ **चक्र** कोई **मुक़ाम नहीं है**।

कमज़ोरी तुम्हारी बेवजह नहीं है। कमज़ोर किया गया है। ताकि तंदरूस्त होने पर उसकी गर्मी तुम्हारी हालत में शामिल न हो। इस हालात वाला तंदरूस्ती की उमंग में न मालूम क्या से क्या कर बैठे। कुदरत ने तुम्हें कमज़ोर ही पैदा किया। अगर तंदरूस्त हुए होते तो ख़्यालात की हालत यह न होती। **हठयोगी** के लिए तंदरूस्ती की ज़रूरत है (नक़्शा सामने आ गया) यह मालूम हुआ कि अपने कुल ज़र्रात भंडार के ज़र्रात में लय हो गये और सतगति को प्राप्त हो गये। जब इसको मुस्तकि़ल करूंगा फिर तंदरूस्ती का ख़्वाब देखोगे। तुम सोचो तो सही कि जो काम तुम इतनी कमज़ोरी में कर सकते हो, वो क्या कोई शख़्स तंदरूस्ती में कर सकता है। अभी मैंने तुम्हें वो बातें नहीं बतलाईं हैं जिनसे मौजज़े सरज़द होते हैं। तुम अपने ख़याल से सब कुछ कर सकोगे। अभी कुछ काम ले लेने दो। अमलीयात से जो सिद्धि हासिल की जाती हैं मैं उनको ग़ैर मौतबर समझता हूं। इन बातों के बताने की तुम्हारी कमज़ोरी ने बुनियाद डाल रखी है। नक़्शा मैंने दिखा दिया है। मुझमें ये सब बातें मौजूद थीं। चलने-फिरने के लिए मैं तुम्हें यूं मजबूर करता हूं ताकि चुस्ती बनी रहे। जाने ऐसी **कितनी कापियाँ** ख़त्म हो जाऐंगी। मुझे तो यही करना है। **अभी तक सिलसिले की बातें और राज़ किसी ने खोले नहीं। ब्रजमोहन में अनमिल बेजोड़** बातें मौजूद हैं; कोई बात मुकम्मिल नहीं है। भला मैं तुम्हारे लिए उनसे यह कहता (कि रामचन्द्र में ब्रजमोहन की निस्बत आई है) जबकि मैं खुद तुमको बना चुका था। मैंने इजाज़त का ख़्याल तुम्हारे लिए पैदा ही नहीं होने दिया ताकि तुम उसके बारे-अहसान न हो जाओ। डाक्टर श्री किशन ने **वैसे** ही कह दिया था। उसको **इजाज़त नहीं मानना चाहिऐ।** मैंने तुम्हारी कुल बातों का ज़िम्मा खुद ही लिया था। **डाक्टर श्यामलाल** को **श्री किशन लाल** ने **इजाज़त** दी है। वो **ठीक नहीं** दी गई। उनमें कोई हालत पैदा नहीं हुई। ये उनको अपनी इजाज़त समझना चाहिये। तुमने करुणाशंकर को जो **इजाज़त** दी वो मेरी तरफ़ से थी और ठीक थी। दोनों को नक़्शा दिखला कर मुवाज़ना करा दिया गया। ऐसी श्री इजाज़तें (श्री किशन वाली) काम नहीं देतीं। **इजाज़त** का देना किसी को मालूम ही नहीं है। अदना सी पहचान मैं बतलाता हूं कि जब अपनी तबियत खुद-ब-खुद मजबूर करने लगे और उसका बार-बार ख़्याल आवे तब समझना चाहिये कि यह **ऊपर** से प्रेरणा हो रही है। दूसरी बात यह भी है कि जब तक उस काम को कर न ले तब तक बैचेनी महसूस हो। मै समझता हूं कि ख़लीफ़ों में यह बात पैदा नहीं हुई और इजाज़त दे बैठे। इसमें जो बातें दूसरों के लिये मुफ़ीद हैं वो उनको बताना पड़ेंगी। मदन मोहन लाल से कह

देना कि खलीफ़ों को बता दें कि इजाज़त किस तरह से दी जाती है। उनसे (मदन मोहन) कह दो कि खरी बात कहने की भी आदत छोड़ दें। क्योंकि लोग इस वजह से और भी नाराज़ रहते हैं गुफ़्तगू में मोहब्बत टपकती हो। बे- ऐब ज़ात खुदा की है। ऐबबीनी ऐब है। और इससे अपने आपको तकलीफ़ भी होती है। अगर वो मेरे पास एक अरसे तक रहते तो मेरे भी ऐब देखने लगते। इस आदत को छोड़ दें। जब यह आदत पड़ जाती है तो तबियत उसमें ऐब बना लेती है। जब बाप का साया सर से उठ जाए तो फूँक-फूँक कर क़दम रखना चाहिए, ताकि ऐसा न हो कि उसकी बातें बाप को बदनाम करने वाली हों।

22.7.1944

तुमको मैं इन झगड़ों से अलहदा रखना चाहता हूं। मैंने मदन मोहन लाल की सिफ़ारिश जो तुमने की है, मंजूर कर ली है। यह झगड़े उनके सुपुर्द कर दिया करना। ताक़तें Transfer मत करना। दिमाग़ की बात जो मैंने बतलाई है उसको खोलते ही उनकी क़ुतुब की हालत शुरू हो जाएगी। उनसे कह दो कि अब तो अपने आप को सम्भालें। ये उस मेहनत का सिला है जो उन्होंने तुम्हारे साथ में की है।

तुममें (मदन मोहन) फ़राख़ दिली मौजूद नहीं है। बल्कि तंग नज़री की झलक है। इन हालतों का सम्भाल लेना उस बड़ी हालत का पेश ख़ेमा है। जितना ज़्यादा रामचन्द्र को आप (मदन मोहन) के सुधार का ख़्याल मौजूद है उससे दोचंद मुझको भी पैदा हो गया है। जो ख़्याल राम चन्द्र के दिल में गूंजता है वह कई गुना फ़ोर्स का मुझ में पैदा हो जाता। यह एक फ़लसफ़ा है जिसके खोलने की ज़रूरत नहीं। अभी तक रामचन्द्र तुम्हारे ज़ेरे अहसान थे। अब तुमको उनका होना पड़ेगा। मेरे ख़्यालत जो कुछ भी तुम्हारी (मदन मोहन) निस्बत अब पैदा हो रहे हैं वो सब उन्हीं की बदौलत हैं। दौरे का काम तुम्हारे सुपुर्द रहा करेगा। मगर राम चन्द्र को भी इस मामले में कोई रुकावट न होगी। तुम बहुत अरसे तक खेले कूदे मगर ये वक़्त अब ख़त्म हो गया। मैंने अब रूख़ बदल दिया है। बहुत ही जल्द वो (मदन मोहन) बराहे रास्त हमकलाम हो सकेंगे। मगर यह ख़्याल रहे कि "जिनके रूतबे है सिवा उनकी सिवा मुश्किल है।"

तुमने (मदन) मुझको बाप समझ कर मोहब्बत की है, लिहाज़ा उसी तरीक़े से जैसे बाप बेटे पर सख़्ती कर सकता है, सख़्ती करूंगा। रामचन्द्र ने मुझे माशूक़ माना है

और पूरे तौर से अपने आप को निसार कर दिया है। उन्होंने (R.C.) कोई बात ऐसी नहीं रखी जो मुझ पर निसार न कर दी हो। ग़ुरबत पसंद की। सख़्तियां झेलीं मगर मुझको नहीं छोड़ा। इसलिए मैं वो दिल कहां से लाऊं जो उन पर सख़्ती क़र सकूं। मुझे उनके नाज़ उठाना ही पड़ेंगे। और तुम्हें (मदन मोहन) भी ख़्याल रखना चाहिए। मुझे आज तक कोई भी ऐसा नहीं मिला कि जो मुझे माशूक़ समझकर मोहब्बत करता। मैं भी अपना दिल उस पर निसार कर देता। मैंने कुछ नहीं छोड़ा जो उनको न दे दिया हो। और मुझ को यह फ़िक्र रहती है कि मैं क्या और दे डालूं। अगर रामचन्द्र का रग रेशा चीर कर देखा जाए और चीरने वाले की आंख मौजूद हो तो उसमें मेरी पूरी ताक़त का इज़हार होगा। अब मेरी कैफ़ियत यह है कि बावजूद आज़ाद रहने के मैं उनके ख़्याल में महव रहता हूं। मैं आपको (मदन मोहन) इत्मीनान दिलाता हूं कि इस पाये का शख़्स होना मुश्किल है। जैसे लोग मेरे लिए तरस रहे हैं और मेरे बाद उनको कुछ-कुछ मेरी कैफ़ियत क़ा पता चला है, ऐसा ही उसके (R.C.) साथ होगा। मैं फिर कहता हूं कि किसी के आंखें नहीं हैं जो उनको देख सके। उन्हों (R.C.) ने अपने आपको ऐसा मिटाया है कि उसका इज़हार नहीं होता और यह उनकी आदत पड़ गई है। यह ख़ता मेरी भी है। अगर मैं बारह (12) साल तक उनकी (R.C.) ताक़त को बंद न रखता तो उनकी यह आदत न पड़ती और फ़ौरन खुल निकलते। अब रामचन्द्र की हालत यह है कि दुनिया भर की दौलत लिए बैठे हैं, और सिर्फ़ ख़्याल का लगाव उस दौलत की तरफ़ है। मगर उसका एहसास नहीं। मुझे मदन मोहन लाल से भी उम्मीदें पैदा हो गई हैं। एक नुक़्स उन में बड़ा ज़बरदस्त बाक़ी रहा कि जिस अहमियत को वो दूसरे में देखते हैं वो उनमें सबसे ज़्यादा मौजूद है। इसका पता शायद उनको न हो। मैं बताता हूं। उन्हें हर बात पर ख़्याल होता है कि मैं जो कुछ कहता हूं वह सही है। इस पाए के आदमी के लिए यह बात ज़हरे क़ातिल है। मैं फिर कहता हूं कि अगर रामचन्द्र से फ़ायदा लोगों ने न उठाया तो उनकी बड़ी बदनसीबी होगी। अक्सर लोगों का ख़्याल था कि लाला जी साहब का जो जॉनशीन होगा, वो एक अजीब हस्ती होगी। अब मौजूद है; देख लें। रामचन्द्र में जो पिदरी असर मौजूद है उसको मैं दूर करना नहीं चाहता। कम कर दिया है। अगर इस असर को क़तई तौर पर खींच लिया जावे तो उनकी परवाज़गी आल्मे बाला की हो जावेगी और जिस्म छोड़ देंगे।

ये भनभनाहट जो उनमें पैदा हो जाती है और मैं भी उसको देखता हूं; यह असर पिदरी है। कभी ज़िद भी पकड़ जाते हैं और तालीम में भी उसका असर पड़ता है। वो

असर यह पड़ता है कि तालीम लेने वाले में परवाज़गी जल्दी होने लगती है। इस बात को मैंने बहुत कम कर दिया है। और मैं उसको एक अदा समझता हूं। मैं फिर कहता हूं कि चचा को लोगों ने मेरा ज़िमनी माना है। उनकी (नन्हे) उस वक़्त की हालत रामचन्द्र के ख़ाके-पा भी न थी। यह मैंने इसलिए कहा कि लोग इससे अंदाज़ा लगा लें कि उनकी (R.C.) क्या हालत है। डाक्टर श्री किशन लाल वग़ैरा उनके सामने तिफ़्ले मकतब अबज्दखाँ हैं। मैं यह बातें इसलिए बता रहा हूं कि लोग इससे अंदाज़ा लगा लें। जिन लोगों में नब्ज़ शनासी का माद्दा नहीं होता, वो symptom (सिम्पटम) से मरीज़ का हाल जान लेते हैं। हर खलीफ़े को अपने आप को उनके ज़ेरेअसर समझना चाहिये।

बाबू मदन मोहन लाल की उस हालत की खोलने की कोशिश न करना जब तक इसको तकमील न दे लो। (यानी मौजूदा हालत को)। जो अमलो-शग़ल उन्होंने (R.C.) किया है उसका मुझ पर असर इतना पड़ा कि वो अमलो-शग़ल मैं उनके लिए करता था। ये (R.C.) चौबीस घन्टें मेरी याद नहीं भूलते थे तो मैं भी चौबीसों घन्टे उनकी याद नहीं भूलता था। और यह बात बरसों रही। उनकी (R.C.) बहुत आरज़ू है कि मैं यही अमल और शग़ल सबको बतला दूं ताकि सबको ऐसा ही फ़ायदा पहुंचे। मगर मैं उनको (R.C.) यक़ीन दिलाता हूं कि यह अमल बताने में कोई हर्ज नहीं। यह बात सब हासिल न कर सकेंगे। और इस वक़्त तक मुझे कोई आदमी ऐसा नज़र नहीं आ रहा है। रामचन्द्र! पहले तो लोगों को यक्रूख़ कर लो।

बाबू मदन मोहन लाल ने तुम से मोहब्बत बहुत की, उस का मैं भी शुक्र गुज़ार हूं। इसी का समरा मिल रहा है। मैं चाहता हूं कि और लोग भी मोहब्बत रखें ताकि वो भी मुस्तफ़ीज़ हों। तुमसे (R.C.) जो कोई जिस क़दर मोहब्बत करेगा उसी क़दर उससे मुझको मोहब्बत होगी। ये भी एक रूहानी फ़लसफ़ा है।

नन्हे ने एक हाथ तुम पर (R.C.) और मारा जिसकी मुझे भी ख़बर न हुई। वो ये था कि जिस Point पर तुम Concentrate कर रहे थे, उसको फैला दिया। और बजाए ज़ब्त (ख़ामोशी) के बातूनी बना दिया। तुमने (R.C.) अच्छा किया कि उन से मोहब्बत मुन्तिक़ल करके मेरी तरफ़ लगा दी। यह सज़ा उनकी ठीक थी जो क़ुदरत से मिली। ये सबसे पहला वार था। और तुम्हारी, इब्तदा में ही गरदन घोंटने की कोशिश की गई। इसका असर अब भी मौजूद है। ख़्यालात की परागन्दगी उस रोज़ से बढ़ गई।

उन्हें यह अंदाज़ हो गया था कि जब इसके Concentration ने मुझको आने पर मजबूर कर दिया तो आगे जाने क्या ग़ज़ब ढ़ायेगा। उनके लिए यह ख़ुश होने का मौक़ा था। इस नुक़्स का जब तुमने (R.C.) मुझे आज ख़्याल दिलाया तब मेरा भी ख़्याल पैदा हुआ। इससे पहले मैं बेख़बर था। मुझे भी ताज्जुब था कि ऐसे संस्कारी आदमी के ख़्यालात तितर-बितर कैसे हैं। आज इस हरकत को उन्हीं की तरफ़ लौट दो। मैं तुम्हारी (R.C.) याददाश्त की तारीफ़ करता हूं।

इनको (मदन मोहन) ऐसी जगह मुकर्रर करना जहां इन्हें कुछ काम करने का फ़ील्ड (Field) मिले। उनके दिमाग़ के लिए मैं एक नुस्ख़ा बताऊंगा फ़िलहाल मिर्च खाना कम कर दें। सब्जियों में ऐसी बहुत सी चीज़ें हो सकती हैं जो दिमाग़ को फ़ायदा करें। गोश्त खाना छोड़ दें। इसकी इजाज़त सिर्फ़ तुम्हारे (R.C.) ही लिए है। गोश्त से इनके (मदन मोहन) दिमाग़ में हिद्दत पैदा होती है जो इनके लिए मुज़िर हैं। तुममें हिद्दत की कमी है, इसलिए मुफ़ीद है। इनके लिए सैरोतफ़रीह की ज़रूरत नहीं है। मतलब शिकार से है। तुम्हारे लिए ज़रूरत है। इनका मुक़ाम एक दम से मत खोलना।

अगर डाक्टर श्री किशन तुम्हारे ऊपर ईमान लाते तो वो भी कुछ-से-कुछ बन गये होते।

डाक्टर चतुभुर्ज सहाय को देखना है।

अगर कुछ दिनों तुम गांव में रहो और शिकार का विरद रखो तो तंदरूस्ती सम्भल जाये। इसमें एक बात और भी है कि जब तुम अपने आपको शिकार की तरफ Concentrate करोगे; उसको रूहानी फ़ायदा पहुंच जायेगा और वो असर अपने साथ ले जायेगा। राम (श्री रामचन्द्र जी महाराज) ने रावण के साथ यही किया था। इसलिए दोष नहीं है। तुम रामेशर से इस क़दर खुश थे कि तुम्हारी सिफ़ारिश मुझे मंज़ूर करना पड़ती। तुम्हें (R.C.) नन्हे से बहुत नुक़सान पहुंचा। रामेशर को नन्हे ने किसी दीन का नहीं रखा। मुझे खौफ़ है कि ये कहीं ज़िनाँ करना शुरू न कर दें। उसके हाथ से बहुत से मौक़े निकल चुके हैं। अगर थोड़े दिनों उनकी (रामेशर) यह कैफ़ियत रही तो उनकी गया हुवा समझो। तुम्हें दोस्त बहुत मिलेंगे; इत्मिनान रखो। अब रामेशर के यहां लोगों को जाने से रोक दो। (एहसास ख़ुद= कानपुर से उनके पास कोई खत आया है)। मैं तुम में गर्मी पैदा करना नहीं चाहता वरना तुम एक दम ग़ज़ब ढ़ाओगे।

24.7.44

ईशर के काम मसलहत से ख़ाली नहीं। ग्लान बेकार है। जो काम कि मेरे ऊपर छोड़ दिया गया उसमें फ़िक्र कैसी। जो शख़्स अपने आप को मुझे हवाले कर चुका, उसको फ़िक्र कैसी। माद्दे की तुग्यानी, जब तक जिस्म क़ायम है, रहती है। सवाल बदरियाफ़्त डाक्टर चतुभुर्ज सहायः कि अरसे से ख़त नहीं आया। फ़रमाया= कि परेशान न हो, यह आज़माइश का वक़्त है। मुझे देखना है कि मेरे कितने दोस्त हैं। दिलाराम को गया गुज़रा समझ लो। जब कभी जागेंगे देखा जायेगा।

बदरिफ़्त इस अमर के "बाबू रामचन्द्र की ताक़त का इज़हार ज़ाहिर में नहीं होता?"

फ़रमाया= कि इसके मुत्ताल्लिक़ उन्होंने सादगी मेरी तरह ली है। माद्दे की तरफ़ उनका ख़्याल रुजूअअ नहीं होता है। तुम्हारे (R.C.) गुस्से का मैं पहले ही ख़ात्मा कर चुका था। जिस शख़्स को इख़्तियारात दिये जाऐं, सबसे पहले उससे गुस्सा खींच लिया जाता है। मुझे दुबार्सा (ऋषि) बनाना मंजूर नहीं है।

सवाल मदन मोहन= "मुझमें गुस्सा क्यों नहीं जाती?"

फ़रमाया= यह उनका ख़्याल है। मदन मोहन लाल से कह दो कि KMS के राज़ कहीं ज़ाहिर न करें। मैंने दुनियावी काम की हिम्मत बांधी और ईशर के आधार पर छोड़ दिया। इस तरीक़े में काम बनने में देर नहीं लगती। और वो जाहिलों का तरीक़ा है। यह बात हर एक में पैदा नहीं होती। **हिम्मत** को लोग बिलकुल ग़लत समझे हुए हैं। मन को तेज़ करने को लोग हिम्मत कहते हैं। मन को इस क़दर ग़ायब कर दिया जाये कि अपने आपमें गिराव सा महसूस होने लगे तो यह दुआ या हिम्मत, हुक्म का काम रखती है। तुमने देखा होगा कि कोई शख़्स किसी से ज़्यादा नुक़सान उठा जाता है; और उसको उसके ऐवज़ लेने की हिम्मत और जुर्रत नहीं होती। वो अपने आप को बेनवा या दुखिया समझता है। मजबूरन सब्र करके बैठ जाता है। ऐसी कैफ़ियत में Depression के साथ उसका जो ख़्याल बंध जायेगा, वह ठीक होकर रहेगा। हिम्मत में बराबरी और हमसरी की बू है। जो बन्दगी के ख़िलाफ़ है। ज़रा ताव आया कि अहमियत शामिल हो गई। मगर तुम (R.C.) किसी के नुक़सान पहुंचाने या बुराई के लिए कभी रुजूअ न होना। और आम लोगों के लिए मैं एक और तरकीब बतलाता

हूं। वो मन को दख़ल न दें। उनके लिए यही हिम्मत है। यानी हां या ना का ख़्याल न करें। यह मज़मून हर शख़्य के समझने का भी नहीं है और इसको कोई पसंद भी न करेगा। यह मैंने आम बात बतलाई। हर काम के लिए जुदा तरकीबें हैं।

मुहास्बाए नफ़्स की तरकीब यह मेरी इल्हामी है। जिस जगह से कि ख़्यालात उठते हैं, उस को अपने आप में लय कर दे। मुझ से (यानी अपने आप से) मतलब आत्मा से है। जितनी मर्तबा ख़्यालात उठें, उनकी बुनियाद को लय करते जाओ। इसका नतीजा इतना अच्छा होगा कि लोग ताज्जुब करेंगे। आमतौर पर क़ायदा यह है कि अपने आप को पीर तसव्वुर करे, उसमें लय कर दे। जिस शख़्स को पीर पर एतक़ाद नहीं, उसके लिये यह तरीक़ा मुफ़ीद नहीं। एक साहब को चचा ने बतलाया था कि मुहास्बा नफ़्स यह है कि दिल के बायें जानिब एक भट्टी तसव्वुर कर लो और जो ख़्याल उठें उसमें झोंकते जाओ।

इरशाद हुआ= **नन्हे** इसकी खूब गढ़-गढ़ के बताते रहे।

यहाँ का उसूल टप-बाथ (Tub-bath) से मिलता-जुलता है। उसमें भी गर्मी जिस्म से खिंच जाती है, और इसमें भी गर्मी जिस्म की कम की जाती है। नहाना-धोना इन सब का यही मक़्सद है। तुमको मैं उस हालत पर अभी इसलिए नहीं लाया हूं कि कुछ काम लेना है। तुम्हारी प्रकृति ख़्वाबीदा हालत में हो चुकी है। इसलिए मैंने नाकारा लफ़्ज़ इस्तेमाल किया था। तुम अपने माद्दे को जो ईशर ने दिया है ख़ामोश करते चले जा रहे हो। इससे ज़्यादा यानी जो मौजूदा शक्ल है, नहीं चाहता। महज़ इस वजह से मुझे और भी जल्दी करना पड़ी वरना कुछ वक़्त और लेता। तुमने बारह साल तक यह मश्क़ नादानिस्ता की है। यह ज़रूर हुआ है कि ज़र्रात सब नूरानी हो गये। मगर इससे ज़्यादा हालत बढ़ाने में मेरा मतलब फ़ौत होता है।

अर्ज़ किया= कि क्या मतलब फ़ौत होता है?

फ़रमाया= ईशर कुछ काम नहीं करता। तुमने अपने ज़र्रात अगर ज़्यादा ख्वाबीदा कर दिये तो यही कैफ़ियत पैदा हो जाएगी। और यह कैफ़ियत तुम्हारी मैं मौत के बाद चाहता हूं। गौ मौत तुम्हारी हो चुकी है। तुम्हारा ज़ाहिरा जिस्म इस दुनिया में मौजूद है, यह मिसाल कहीं नहीं मिलेगी। **याद रखो, यह हालत कभी किसी में पैवस्त न करना। यह हालत इन्सानों की नहीं है।** ऐसी हालत **सज्जादा-नशीनों** में भी पैदा नहीं की जाती।

यह हालत अपना ख़ुद मिसाल रखती है। मगर इससे मेरा कोई फ़ायदा नहीं। क्या कोई शख़्स इस हालत का अज़ ख़ुद पैदा करने का दावा कर सकता है। यह तुम्हारी ही मिसाल है जो **आबे-ज़र** से लिखने के क़ाबिल है। तुम्हारे बाद जो इसको समझेंगे, ताज्जुब करेंगे। पर कहना पड़ा "कि **ईंसआदत बज़ौर" बाज़ु नेस्त**।

(अर्थात= यह सौभाग्य बाहूबल से प्राप्त नहीं होता।)

फिर लिख लो कि अगर यह हालत बढ़ा ली (नक़्शा सामने आ गया) **तो यह कैफ़ियत पैदा हो जाऐगी।** नक़ल में यह पुख़्तगी ज़रूर आती मगर तुमने उसको इतना असल बनाया कि उस नक़ल से भी बढ़ गये। मैं उसमें (कैफ़ियत) रहता ज़रूर था मगर एक बात जो तुमने पैदा की, वो मुझमें नहीं थी। जितनी ज़रूरत थी मैं उतना रहता था। तुम उससे आगे तजावज़ कर गये। इसको समझने के लिए ऐसी ही बुद्धि की ज़रूरत है। मैं समझता हूं कि इस हालत को सिर्फ़ ख़ुदा ही जान सकता है। इससे आगे कहना कुछ नहीं चाहता। जो स्टेज कि मैंने तुमको बख़्शा है, उसकी हवा तुम अज़ख़ुद क़ायम कर चुके थे। यही वजह थी कि इस दौरान (यानी तीन माह के अंदर) में तुम जितना आगे बढ़ गये हो, बरसों में बढ़ना मुश्किल था। मैं तुमसे अब यही कहूंगा कि तुमने अपनी तरक़्क़ी **इंतहा** को पहुंचा दी। और वहां भी ख़ामोश नहीं हो। हर लम्हा क़दम आगे ही जा रहा है। मगर अफ़सोस, इसका कोई समझने वाला पैदा नहीं। तुम्हारी मिसाल जो शख़्स समझेंगे, उनके लिए ज़र्बुल मिसल रहेगी। **बस अब दुआ देता हूं और जाता हूं।**

वक़्ते शब= नुस्ख़ा= मुल्लैठी 3 (तीन) माशा; मिश्री 3 (तीन) माशा; ख़ूब कूट छान कर सोते वक़्त हमराह ताज़ा पानी इस्तेमाल करें। अगर बलग़म की शिकायत हो तो नुस्ख़ा गुनगुने पानी के साथ मुफ़ीद होगा। यह नुस्ख़ा मदन मोहन लाल के लिए है। खटाई और मिर्च से परहेज़ रखें। धनिया तरकारी के साथ में इस्तेमाल करें। अगर घी मुय्यसर नहीं है तो बहुत सी चिकनी तरकारियां घी का फ़ायदा करती हैं। सिरसा का साग चिकनी तरकारी है। आलू कम खाऐ। यही नुस्ख़ा बाबू रामचन्द्र भी उसी तरीक़े से इस्तेमाल कर सकते हैं। मगर दूध के साथ। इससे उनका Weight (वज़न) बढ़ जायेगा।

25.7.44

मैंने तुमको जो कल तुम्हारी हालत के बारे कुछ कहा है और उसमें एक अमल करने के लिये रोका है; यह विसाल से एक साल क़ब्ल कर सकते हो। और पिदरी असर विसाल के क़रीब ही खोना। यह हालत किसी के ख़्याल में भी नहीं आ सकती (अंदाज़ बताया) कल मदन मोहन लाल ने जो शग़ले-राबता की बाबत कहा था, वो सबके लिए मुफ़ीद होगा। इसमें तुम्हारा तरीक़ा मुस्तनद है।

हिन्दू क़ौम की बरबादी के आसार पैदा हो गये हैं। उन्होंनें अपने संस्कार ऐसे बनाये हैं जो उनको नीचे की तरफ़ ले जा रहे हैं। मुसलमान उनसे बदरजहा बेहतर हैं।

तुम्हारी तीसरी या चौथी Generation के यही काम सुपुर्द होगा। मगर वो अपनी दौराने जिंदगी में Complete न कर सकेगी। उसके बाद एक ख़ास हस्ती नुमायाँ होगी जो इस मक़सद को पूरा कर देगी। Materialism बढ़ेगा। तुम्हारे ख़ानदान में कोई फ़क़ीर नहीं हुआ। तुमने रास्ता खोल दिया; और ऐसा कि बायादो शायद। यह कुदरत का खेल है कि कीचड़ में से लाल बरामद कर लेती है।

ख़ास हस्ती जो पैदा होगी उसका नक़्शा सामने आया। रंग नीलबर्ण था। डाढ़ी-मूंछ कुछ नहीं। तंदरूस्त; पेट ख़फ़ीफ़ निकला हुआ। क़द पस्ता। तबियत में रूखापन। मुरव्वत ग़ायब; सख़्ती पंसद। सिवाए ख़ूँरेज़ी के और कोई मतलब नहीं।

क़ुदरत ने जिस वक़्त सृष्टि पैदा की थी तो शुरू से आख़िर तक का सब इंतज़ाम उसी वक़्त कर दिया था। दोबारा या दरम्यान में कोई बात मुख़िल होने के लिए नहीं छोड़ी थी। मैंने भी यही काम अब किया है। इस Generation (यानी आइंदा सिलसिले की नस्ल में) सिर्फ़ एक शख़्स का खटका मुझे ज़रूर है। बाबू रामचन्द्र का अन्दाज़ है कि 15-16 पुश्त के बाद एक शख़्स की बाबत खटके का ज़िक्र किया है। उस वक़्त में ख़ास कोशिश करना पड़ेगी। जब सिलसिला आगे बढ़ेगा। मेरी आख़िरी गद्दी प्रलय के वक़्त खत्म होगी। (नक़्शा सामने आ गया) चूंकि मेरा जिस्म नहीं है; इसलिए जितना फ़ायदा तुम पहुंचा सकते हो उतना मैं नहीं पहुंचा सकता। इंतहाई तरक़्क़ी के बाद अलबत्ता बराहेरास्त मुझ से फायदा उठा सकता है।

26.7.1944

इन्ताहाई तरक़्क़ी से मेरी मुराद यह थी कि जैसे तुमने (R.C.) तरक़्क़ी की है। जब तक कोई मुझे तरक़्क़ी करते-करते न मिल जाए उस वक़्त तक फ़ायदे की उम्मीद छोड़ दे। यह मेरा **रहम** है कि मैं कुछ न कुछ फ़ायदा पहुंचा देता हूं। मगर यह उसकी काबलियत नहीं। वहां पर मजबूरी है, यहां पर मजबूरी नहीं। यह बात हर शख़्स को बताने की नहीं है। यह बड़े लोगों के लिए है जो धोखा खा रहे हैं।

ध्यान करने से वो उस हालत पर पहुंच जाएगा जहां से मेरी प्रेरणा बराहे-रास्त होती है। मेरा दौरा हर जगह होता रहता है। जो जिस लायक़ है फ़ायदा उठा जाता है।

अधिकारी नेक चलन और सीधा हो। मगर उसका यह मतलब नहीं होगा कि यहां की ब्रह्म विद्या का जो ऊंचे पैमाने पर है, वो पात्र है। उसके अंदर एक हालत होती है जिसका तर्जुमा तुमने वुसअत ठीक किया। हर शख़्स अपनी क़ाबलियत साथ लाता है। वुसअत कई दर्जे की होती है। मैंने तुम्हें (R.C.) आला दर्जे की वुसअत बतलाई थी। इसमें जितनी कमी है उतनी ही ब्रह्मविद्या में कमी रहेगी। इसका अगर अभाव (यानी वुसअत का क़तई वजूद न हो) तो कुछ-न-कुछ तरक्की करेगा। यह मेरा तजुर्बा है। मैंने अपनी समझ से ख़ास-ख़ास नुक़ात तुमको बतला दिये। अब जैसा-जैसा मौक़ा पड़ता जायेगा, बतलाता रहूंगा। या तुम्हारी समझ में आ जाये। मुझसे पूछ लेना। मेहनत करने से संस्कार भी बदल सकता है। चंदन में भी आग पैदा हो जाती है।

सवाल मदन मोहन= "संस्कार बदलने की क्या तरकीब है?"

फ़रमाया= आला दर्जे की बात तो यह है कि संस्कार मेरे ही समझ लिए जावें। जो संस्कारी नहीं होगा उसका यह ख़्याल पैदा ही क्यों होने लगा। दमज़दन में किसी हालत का इनकशाफ़ करा देना तुम्हारा ही हिस्सा है। और किसी में यह बात पैदा नहीं हुई। इसमें एक बात का ख़्याल रखने की ज़रूरत है; कि अगर किसी हालत का दर्साना ज़रूरी हो या इम्तिहानन ऐसा मौक़ा पड़ जाये तो उसको फिर अपनी असली हालत पर उतार लाओ। क़ायम करने की ज़रूरत नहीं है

बदरियाफ़्त फ़रमाया कि और लोग इस बात के अहल नहीं थे, इसका तुममें क़ुदरती माद्दा मौजूद था उसको मैंने develop कर दिया। जाहिलों पर इन कैफ़ीयात का दर्सा देना मुनासिब नहीं।

वेद पशु भी जहालत के ज़ुमरे में शामिल हैं। गुरु पशु वो कहलाता है जिसका गुरु क़ाबिल न हो यानी ब्रह्मविद्या का ठीक तौर से उपदेश न कर सकता हो। और तालिब उसको ख़ुदा बना ले। मन के गुलाम को तिरिया पशु कहते हैं। और उसकी ज़ाहिरी शक्लें देखने में आती हैं। मिसाल की ज़रूरत नहीं। नर पशु वो है जिसमें ठोस हालत में अहंकार मौजूद हो। एक तरीक़े के पशु और होते हैं जो अपनी रूहानी कैफ़ियत को जिसमें आनंद आता है; छोड़ना नहीं चाहते। पशुओं की तादाद उससे आगे भी रहती है।

सवाल किया, कि पशुपन का ख़ात्मा भी है?

फ़रमाया= जो तुम्हारी मौजूदा हालत है उस पर पहुंच कर पशुपन का ख़ात्मा हो जाता है। मौजूदा कैफ़ियत से मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे सज्जादा नशीन होने की वजह से यह बात है। ये अलामतें ज़रूर हैं जो सज्जादा नशीनों में पाई जाती हैं मगर हर जगह नहीं। तुमने अपने ख़्यालात में जो कुछ कूड़ा-करकट था वो सब बहा दिया। अब ख़ालिस हालत रह गई। कूड़ा-करकट से मेरी मुराद यह है कि ख़्याल पर जो चीज़ें वज़न डालने वाली थीं वो नाबूद हो गईं ख़ालिस कैफ़ियत रह गई। जो पशुपन से साफ़ है। यह मिसाल मैंने इसलिए दी ताकि तुम दूसरों को इससे तौल सको। अलावा सज्जादा नशीनों के यह बातें दूसरों में भी पैदा हो जाती हैं। मदन मोहन लाल इसकी मिसाल हैं। मगर उनकी अंदरूनी कैफ़ियत यह है। ज़ाहिरी नहीं सम्भाली है।

भंडारा एक ही रहेगा। अगर तुम्हारा काम वहां बन गया तो यहां ज़रूरत नहीं रहेगी। तुम्हारे बाद यहां भंडारे की शुरूआत होगी। भंडारा उखाड़ने के लिए कानपुर में बड़ी कोशिश की गई मगर चूंकि यह बात मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ थी इस वजह से कामयाब नहीं हुए। अगर नन्हे के बाद उनका, लोगों ने भंडारा करना शुरू किया, तो उसमें स्याही बरसेगी। रौनक़ तुम खींच चुके हो। जो लोग उनसे (नन्हे) वाबस्ता हैं वे एक भी तरक़्क़ी नहीं करेंगे। उनके ख़्याल की गरमी उन्हें जो चाहे यक़ीन दिला दे।

गिरधारी लाल का नशा हिरन हो चुका है। अब चूंकि उनका मतलब फ़ौत होता है लिहाज़ा उनसे (मदन मोहन लाल) से रुजूअ हुआ चाहते हैं। ऐसे लोगों की मिसाल Mr. Bat से दी जा सकती है और उनकी मिसाल इस मतलब से भी ठीक है कि वो सिर्फ़ लटकना जानते हैं। जब स्याही शुरू होती है तब उन्हें होश आता है।

बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि वो उनसे रुजूअ न हों। वह आदमी अच्छा नहीं है। उसे किसी पर अक़ीदा नहीं। वो चचा से भी मतलब से मिलता है। मगर उन्हें (नन्हे) कुछ तमीज़ नहीं होती। गौलबयाबानी बढ़ा रहे हैं। याद रखो ऐसे लोगों को अपने दायरे में जगह न देना। तावक़्ते कि वो तोबा न खींच लें। उनसे (नन्हे) अपना सिलसिलाए-दिली तोड़ दें। ऊपर से Connection किसी से क़ायम नहीं रहा।

"पीर ख़ुद दरमान्दा, शफ़ायत करा कुनद।"

(**अर्थात=** गुरु बेचारा स्वयं मुसीबत में है, गुनाहों की मुआफ़ी की सिफ़ारिश कैसे करे।) उन लोगों में तारीकी भरना शुरू हो गई हैं। बाबू मदन मोहन लाल अब वहां (ऐटा) जाने का इरादा फ़सख़ कर दें। बदायूं जाने में कोई हर्ज़ नहीं।

मैं अपने सब अलफ़ाज़ (मुताल्लिका चतुभुर्ज सहाय) वापस लेता हूं। उन को कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं। अब तुम्हें अपनी महफ़िल अलहदा ही बनाना पड़ेगी। मुझे फ़िक्रें बढ़ाने में सब लोग मददगार हो रहे हैं। यह किसी से नहीं होता कि मेरा बार उठायें। अगर उनकी (चतुभुर्ज सहाय की) यह हालत रही तो चतुभुर्ज सहाय को कुलियतन सलब करना होगा। सब चिड़ियाँ उड़ जायेंगी और उनकी ज़िंदगी के लाले पड़ जायेंगे। मेरा जो step होगा अब बहुत serious होगा। मामलात रोज़-ब-रोज़ तबदील हो रहे हैं। मुझे भी मुसीबत में डाल रखा है। मुझमें Irritation पैदा हो रहा है। अब मुझे कालरूप धारण करना पड़ेगा। Toleration की इन्तहा हो गई। अब मेरा दयाल रूप सिर्फ़ तुम्हारे लिये या जो तुम से वाबस्ता होंगे, उनके लिए रहेगा।

जाने चतुभुर्ज सहाय ने क्या समझ रखा है। अच्छा हुआ कि तुमने उनमें ताक़त नहीं भर दी जैसा कि तुम्हारा इरादा था। लफ़्ज़ परवाने ने मेरी तौहीन की। जो कुछ बाबू मदन मोहन लिख रहे थे वो मेरा ही हुक्म था। अगर वो (मदन मोहन) ग़ौर करें तो मालूम होगा कि मज़मून में ही डिक्टेट कर देता था। इस ख़त के जवाब देने की कुछ ज़रूरत नहीं। वो जो चाहें वह समझ लें। मुझ को बाबू मदन मोहन लाल ही एक ऐसे मिल रहे हैं। बाक़ी सब मादा नज़र आते हैं। मेरी सोसायटी का जितना बुरा हाला हुआ उतना कहीं का न हुआ होगा। दिल पकड़ कर रह जाता हूं। अगर यही हाल रहा तो आख़िर में मैं तुमको Total Destruction के लिए आर्डर दूंगा। मैंने मुरव्वत आज से छोड़ दी। क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) से रुजूअ हूंगा। अब वो जो हुकुम देंगे उसकी पाबन्दी होगी। तुम्हें ऐटा मैं ..... कहा गया। मुझे पहले अपना सज्जादा नशीन

बना लेना था। उसके बाद में इन लोगों को इजाज़त देना था। यह ग़लती मैंने अब महसूस की। मैं जुमला इजाज़तें ख़त्म करता हूं सिर्फ़ मदन मोहन लाल इससे मुस्तसना हैं। जब तक ये इजाज़तें तुम वापस न करोगे कोई शख़्स तालीम न कर सकेगा। अगर वो तालीम करेगा तो उसके यह मानी हैं कि वो दूसरों को धोखा दे रहा है। अगर यह करता ही रहेगा तो आख़िर में उसका नतीजा ख़राब होगा।

याद रखो ये मेरे सब इंतज़ामात तुम्हारे (R.C.) सबक सीखने के लिए हैं ताकि तुम न ऐसी ग़लती करो। पहले सज्जादा नशीन बना लेना, फिर लोगों को इजाज़त देना। इजाज़त कोई लाज़मी चीज़ नहीं है कि दी ही जावे। मुझे अपने गुरु के हुकुम की पाबंदी करना थी। इसलिए इस मद में जल्दी कर गया। तुमको मेरे हुक्म की पाबंदी फ़र्ज़ है। अब जिन-जिन लोगों को मैंने तुमसे इजाज़त देने को कहा है, मुझसे पूछ लेना तब इजाज़त देना। नालायक़ मुरीदों से न मुरीद करना ज़्यादा बेहतर है। मैं समझता हूं कि तुम्हारा ख़्याल बिल्कुल ठीक था कि दो चार शख़्सों से ज़्यादा बैअत न करी जावें। बल्कि इससे और कम हो जायें तो हर्ज नहीं। बाबू मदन मोहन लाल ने जो बैअत की हैं उसमें एक शख़्स खराब निकला। ज़्यादा तादाद बढ़ाने की ज़रूरत नहीं। अगर कोई वाक़ई अहल मिल जाये तो उससे इनकार की भी ज़रूरत नहीं। उसके लिए (रामदयाल) बस यही चारा है कि मदन मोहन लाल ख़ुदा से दुआ मांगें कि उनको राहे-रास्त पर ले आवे। वो खुद अब नहीं छोड़ सकते। इसलिये कि मेरे हाथ पर बैअत हुई। क्या मेरी रियाजत का यही नतीजा हुआ कि मुझको यह दिन देखना पड़ा। मैं तो अच्छा गया मगर तुमको मुसीबत में डाल दिया।

सवाल (R.C.)= हुज़ूर अपनी परेशानियां मुझको दे दीजिए, मैं भुगत लूंगा? जान भी जाये तो कुछ परवाह नहीं।

फ़रमाया= तुमने मेरी परेशानियां अपनी तरफ़ मुन्तक़िल कर लीं, लिहाज़ा अब तुम को मैंने यह इख़्तियार भी दे दिया कि तुम जो करोगे वही मुझको मंजूर होगा। अगर तुम किसी का तख़्ता ताराज कर दोगे तो मैं तमसे बाज़ पुर्स न हूंगा। मैंने अब कुल बातें तुम्हीं पर छोड़ दीं।

27.7.1944

अब जब तुम (उन लोगों को) इजाज़त दोगे तब काम चलेगा। मैं इजाज़त खत्म कर चुका। इन लोगों का Connection मत तोड़ना।

पंडित मान सिंह दुनियादार बन गये। इस तरफ़ मन नहीं रहा।

सेवती परशाद= आदमी बेहतर है मगर ठस है।

फतहलाल (नक़्शा सामने आ गया) हज़रत क़िब्ला की तरफ़ ख़्याल तो है मगर तबियत में गड़बड़ी है।

होती लाल ठस और नाकारा।

मेघसिंह= (नक़्शा सामने आ गया) तबियत में लट्ठपन। इससे ज़्यादा उन्हें छेड़ने की ज़रूरत नहीं। रूके हुए हैं, तरक़्क़ी नहीं करते।

श्यामलाल अपनी मुलाज़मत के नशे में चूर हैं। फ़र्ज़ अदायगी कर देते हैं। वाक़ई उन्हें मुझसे कोई लगाव नहीं है। (ये भी आला तालीम के हितकारी नहीं)।

मदन मोहन लाल (लखनऊ)= यह आदमी बेहतर है। तरक़्क़ी करने वाला हैं। इससे मुझे लगाव है, मगर चतुभुर्ज सहाय के चक्कर में पड़ गये हैं। वह वजह सिर्फ self respect है। सरदारी पंसद है। अगर ये तुम्हारे ऊपर ईमान लाये तो अच्छी तरक़्क़ी करने वालों में है। उन्होंने कुबरा के मैदान में क़दम रख दिया है। मगर Lead अच्छा नहीं मिल रहा है। सफ़ाई की ज़रूरत है (नक़्शा सामने आ गया) **सुखबाशी लाल=** ये आदमी अच्छा है। ग़रीब-उल-मिज़ाज है। गो थोड़ी सी ऐंठ मौजूद है; चचा का ग़ुलाम है। आला तरक़्क़ी करने वालों में यह भी नहीं है। **सूरज परशाद चीफ़ रीडर;** यह बेहतर है। तरक़्क़ी कर सकता है। अगर उनको यह यक़ीन हो जाए कि कोई हस्ती ऐसी पैदा हो गई है तो वो उस तरफ़ को खिंच जांएगे। मगर यह उम्मीद **सुखबाशी लाल** से नहीं है। **भवानी शंकर झांसी=** उन में खूबसूरती की बू मौजूद है। फ़रमाया= **मौलवी साहब क़िब्ला भी मुझे इसी तरह** Dictate **कराते थे मगर मैं कुछ लिखता था और कुछ भूल जाता था,** क्योंकि मेरे पास कोई लिखने वाला न था। तुमको मिल गया। उन्होंने ख़ास-ख़ास बातें तालीम के सिलसिले की नोट कराई थीं और वो सब बातें आपने **विसाल** के बाद की थीं। इसलिए उनका तजुर्बा भी तुम्हारे पास जा रहा है। **अब**

चूंकि तुम्हारे यहां गड़बड़ी पड़ी है, इसलिए तुम्हें सफ़े के सफ़े रंगना पड़े। अलावा इसके तुमने मुझे खेंच भी ज़्यादा लिया है। इस वजह से हर बात की फ़िक्र रखना पड़ती है। मैं समझता हूं कि तुम्हें जो दुनियावी नुक़सानात पड़े हैं वो मेरी ही वजह से पड़े हैं। तुम्हें मुझसे फ़ुरसत ही नहीं मिलती थी जो और काम करते। और अब भी तुम्हारा यही हाल है। अब में तुम्हारा इंतजाम करूं या तुम्हारे धरका करूं। **मोहब्बत में सब कुछ करना पड़ता है।** इस बारे में मुझे **क़िब्ला मौलाना साहब** ने भी कुछ कहा था। लिहाज़ा उनके हुक्म की पाबन्दी करना होगी। **तुम्हें दुनिया में तकलीफ़ कभी नहीं होगी। खुशहाली कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी। यह मेरी दुआ है।** मैं समझता था कि तुमने जो कुछ मेरे साथ किया है मैं उसका ऐवज़ न दे सका। इस एवज़ में अगर तुम मुझसे कुछ बात मांग लेते तो मैं उससे सुबकदोश हो जाता। सिर्फ़ रूहानी तालीम बाक़ी रहती। तुम अपनी तरह किसी को न बनाना जो उसकी ज़िंदगी भर अपने आप को ख़िलजान में रखो। तुमने मुझसे **मोहब्बत** भी नहीं मांगी, जिसके लोग मुतलाशी रहते हैं। यह तुम्हारी Life और Career में एक बात है जिसकी मिसाल कहीं नहीं मिलेगी। जो लोग मोहब्बत मांगते हैं उनका दर परदा ज़्यादातर यह मतलब होता है कि मैं उनसे मोहब्बत करूं। तुमने कभी इसकी आरज़ू भी नहीं की। **मैं समझता हूं कि गुरु से मोहब्बत मांगना सख़्त बेअदबी है।** इन सब बातों का नतीजा यह निकला कि मैं तुम में अपनी सारी ताक़त से फ़ना हो चुका था। सिर्फ एक **तरक्की** बाकी रखी थी जिसको अब खोल दिया। लोग जो समझें वो समझा करें। इस तहरीर की कद्र बाद को होगी।

नोटः मैंने (R.C.) "सबाल किया था कि लोग ये समझेंगे कि अपनी तारीफे (रामचन्द्र ने) ख़ूब लिखी हैं?"

अब भी तुम मुझे खींचते चले जा रहे हो। अगर मैं **आज़ाद** होता तो नहीं मालूम मुझे कितनी **इज़तराबी** रहती। इस **शग़ल** को मैं तुममें अलहदा भी करना नहीं चाहता। हटाने में तुम्हें Shock होगा। कभी-कभी बातों में ज़रूर तुम्हें भुला देता हूं। क्या ऐसी मिसाल आगे मिल सकेगी? मुझे उम्मीद नहीं। **मौलवी साहब क़िब्ला ने इस मद्दे बड़ी तारीफ़ की है कि तुमने खूब बनाया।**

अफ़सोस यह है कि इस हस्ती को देखने के लिए लोग तरसेंगे। तुम्हारी क़द्र उतनी नहीं हो सकेगी जो तुम्हारे शानो शायाँ है। तुम्हारी हालत सिर्फ़ मैं ही जानता हूं। और कभी-कभी इसका मैं तुमको इशारा भी दे देता हूं। अगर तुम अपनी हालत का अंदाज़ा

लगाना चाहो तो इस तरीक़े से हो सकता है कि बहुत ज़बरदस्त फ़ुक़रा और कामलीन जो अपने अनुभव से तुम्हारी हालत को बताएं, वों तुम्हारे सबसे नीचे दर्जे की तारीफ़ होगी। यही वजह है कि कुल दुनिया का **मालिके कुल** बना दिया। जो बातें सरज़द होंगी तुम्हारे ही ज़रिये से होगी और सबसे पहले रोशनी तुम्हीं पर पड़ेगी। **मगर यह आख़िर नहीं है।** तुम्हारी मोहब्बत के नतीजे का **आग़ाज़** समझता हूं। **अंजाम** अभी बहुत दूर है। तुम्हारी हुकूमत आगे के **लोकों** पर भी रहेगी। बस इतना इशारा देता हूं। दुनियादारी के काम जो तुम ठीक तौर पर नहीं कर सकते और लोगों की हर्फ़गीरी का मौक़ा मिलता है। उसकी वजह यह है कि तुमने वो **Tissues** dead कर दिये हैं, जिनसे दुनियादारी का काम चलता है। अगर मैं जल्दी न करता तो तुम उसकी हक़ीक़त भी खो बैठते। अब मैंने रोक दिया है। इससे ज़्यादा मैं नहीं चाहता। मैंने जो तुम्हारे कहने पर यह इजाज़त दी है कि अपने विसाल से एक साल पहले ये अमल कर लेना। यह तुम्हारा दिल भर दिया। बाक़ई इसकी ज़रूरत नहीं है। तुम मेरी ज़िंदगी ही में अपना काम बना चुके थे। **तुम्हारी वापसी नहीं होगी।** अब क्या लिखाऊँ। जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ़ में जो कुछ मुझे वाक़फ़ियत है सब उगल दूं। इस मज़मून को मैं तुमको फिर लिखाऊंगा। और यह उस वक़्त होगी कि जैसी तबियत है उस हालत को पैदा करा दूं। उसकी बुनियाद पड़ चुकी है। इसको चंद ही यौम गुज़रे हैं। वो जो तुम्हारी तबियत में ग्लान रहा है वो ख़ाली अज़ इल्लत न था। चचा **(नन्हे)** की कैफ़ियत अब सुकड़े हुए सांप की तरह है। वो अब तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते और न इससे पेश्तर कर सकते थे। लोगों को भी नुक़सान पहुंचाने की उनमें ताक़त नहीं रही। ये बाबू मदन मोहन लाल के ख़्यालात का जवाब है। उनको **(मदन मोहन लाल)** हिदायत मिल रही है मगर अभी तमीज़ नहीं होती। ख़्यालात की हालत जब साकित हो जायेगी, तब तमीज़ होने लगेगी। यह दवा (नुस्ख़ा बतलाया था) उनको (मदन मोहन) ज़रूर फ़ायदा करेगी। अगर मैं ख़ुद सबको बतलाता हूं तो तुम्हारी अज़मत और बुज़ुर्गी दूसरों पर कैसे Establish होगी। **पीर का औज़ार (Instrument) एक ही होता है।** तुम अपनी आदत यह डालो कि सबसे नीचे से नीचे दर्जे में उतर सको; वरना इस दर्जे का आदमी आमतौर पर तामील नहीं कर सकता। अभ्यास करने से यह बात हासिल होगी। बादरियाफ़्त फ़रमाया= मेरा मंशा नज़ूल का नहीं है। उरूज और नज़ूल काफ़ी हो चुका है बल्कि **ख़ुद अख़्तियार** होने का है जहां पर जैसी ज़रूरत हो वहीं पर अपने आप को Establish कर दो।

नोट= मदन मोहन लाल और मैं (R.C.) आपस में बातचीत कर रहे थे। वह यह थी कि हज़रत मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) में जलाल और जमाल दोनों बराबर थे।

फ़रमाया= यह मेरी मिसाल भी तुमको कहीं नहीं मिलेगी कि **दुश्मन को दोस्त समझा। यह नबुवत है।** कल तुम्हें तेज कर दिया था। उसकी ज़रूरत थी। **ज़ुल्म न करना।** राहे रास्त पर लाने के लिये सब करना पड़ता है। मां अपने बच्चे की ज़रूरत पर शिगाफ़ भी लगवाती है। तुम्हें इस सब की नक़ल करने की ज़रूरत नहीं। मैंने तुम्हारे झन्न को इसलिए और भी कम नहीं किया। इसको अगर क़तई हटा दिया जाए तो जिस्म छोड़ने का एहतमाल है। अगर जितनी है उससे कम किया जाये तो नाकारा हो जाओगे। मुझे तुमसे कुछ काम लेना है। जिसमें इस बात की ज़रूरत है। यह चीज़ बेकार नहीं है जो छोड़ दी गई है। मैंने तुमको **अजब तरीक़े** की तालीम दी है। तुममें **काल और दयाल** रूप दोनों मौजूद हैं। तेज़ी इन दोनों में से किसी में नहीं है। यह दोनों **ईशर** के रूप हैं। इसमें शैतान का दख़ल नहीं है। अब तारीफ़ बताता हूं।

दयाल शक्ति सरापा मोहब्बत है। काल शक्ति उसके ख़िलाफ़ है। कृष्ण जी में यह वस्फ़ था। यह तालीम तुम्हें कहीं नहीं मिलेगी, न इसके देने का किसी को तरीक़ा मालूम है। दोनों बातें side by side होना बहुत मुश्किल हैं। यह मेरे लिए हज़रत का **अतिया था। काल रूप** मेरा किसी ने नहीं देखा। मैंने इसमें जिला नहीं दी थी। एक ख़ज़ाना था जो मेरे पास पेशीदा पड़ा हुवा था। उसको तुममें मुन्तिक़ल कर दिया। और कोई इस क़ाबिल ही नहीं है जिसको यह तालीम दी जा सके। यह ख़ास तालीम है जो हर शख़्स को मयस्सर नहीं। इसका न कोई सिखाने वाला है और न कोई सीखने वाला है। दोनों ताक़तें मुतज़ाद हैं; इसलिए इसकी तालीम मुश्किल है। इसके देने का तरीक़ा अभी मैंने तुम्हें नहीं बतलाया; और बतलाने में फ़ायदा भी नहीं। इसलिए कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसी का कोई सीखने वाला नहीं। उसको कोई क्या सीखेगा। तुम्हें भी मुन्तक़िल करना होगी। इसकी तालीम के लिए यह वस्फ़ होना चाहिए कि जैसे मैं तुम्हारे हर रगोरेशे में भिदा हुआ था ऐसे ही तुम भी मेरे हर रगोरेशे में भिदे हुए थे। एक जान दो क़ालिब अगर कहा जाये तो ग़लत नहीं। यह बात कहीं नहीं मिलेगी। गुरु को किसी से मोहब्बत नहीं होती और द्वेष भी नहीं होता। यह चेले की क़ाबलियत है कि उसको अपना ले। और ख़ुदा की भी यही सिफ़्त है। उसकी बारिश हर जगह यकसाँ होती है।

सवाल मदन मोहन= सबको यह ख़्याल था कि लाला जी साहिब मुझको ही सबसे ज्यादा मोहब्बत करते हैं?

फ़रमाया= मैंने धोखा किसी को नहीं दिया बल्कि लोगों ने मुझ से धोखा खाया। अगर मेरी ज़ाहिरी हालत ऐसी न होती तो मुझे कोई Respect भी न करता। मेरी हालत भी तुम्हारी तरह थी। फ़र्क़ तर्जुबे का था। दूसरे सब का मुझसे बराहे रास्त ताल्लुक़ था। मैं फिर कहता हूं कि मुझसे किसी ने सीखा ही नहीं। अगर सिखाने की और ब्रह्मविद्या फैलाने की मेरी आरज़ू न होती तो मैं इस क़दर ग़ल्ताँ व पेचाँ न होता। क्योंकि मैं आज़ाद था। लोगों के नन्हे ख़ुदा हो रहे हैं। उन्होंने ज़िंदगी ही में शैतान रूप अख़्तियार कर लिया था। तुम यह बार-बार ख़्याल बांध रहे हो कि ऊपर लिखी हुई बात की तालीम कैसे दी जाती है। मुझे तुम से कुछ छुपाना नहीं है। मौक़ा आने दो ताकि ठीक तौर से समझ सको। मुन्तक़िल तुम अब भी कर सकते हो। अगर सोचो तो इस का अख़्तियार मिलेगा। करने की ज़रूरत नहीं। यह तालीम बहुत मुश्किल है। इस पर क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने एक मर्तबा रोशनी फैंकी थी। आप में दोनों क़ाबलियतें पूर्ण रूप में मौजूद थीं। मेरी मुरव्वत से तुम लोगों को वाक़ई नुक़सान पहुंचा।

मैंने-यह मजबूरियां सब हटाने की कोशिश की है। लोगों के लिये अब भी मौक़ा है। मैं कहीं गया नहीं हूं। तने-ख़ाकी ज़रूर छोड़ दिया है। अब अगर लोग सोचो तो इस की भी शिकायत नहीं कर सकते। काया पलट देने से कोई हर्ज नहीं होता। मैंने फ़क़त काया पलट दी है। बात वो ही अब भी है। फ़क़त लोगों के रूझान की ज़रूरत है। कोई तजुर्बा करके देख ले। फ़ैज़ में कोई कभी न मिलेगी। तुम्हारी ग़ौस की हालत शुरू हो गई। जो बात मैं कहता हूं बो नोट होना चाहिऐ।

28.7.1944

क़रीब पौन बजे दिन के = कुछ रामेशर प्रसाद और मुझसे गुफ़्तगू हुई। बो सब हाल बाबू मदन मोहन लाल को कह सुनाया। मैं डाक्टर साहब के यहां से होकर रामेशर प्रसाद के यहां गया था। डाक्टर साहब के यहां मैंने हज़रत से यह अर्ज़ किया कि जनाब भाई साहब बाबू मदन मोहन लाल को जैसी हजूर की मंशा है कुतुब जल्द

क्यों न बना दिया जाये। इरशाद हुआ= कि जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। यही गुफ़्तगू मैंने भाई साहब से अर्ज़ की। अस्नाये गुफ़्तगू में, मैंने कहा कि लाला जी साहब का मंशा कुतुब बनाने का है। मगर मेरा जल्दी करने से मतलब यह था कि हां हो गई का ख़्याल बाँधा जाये। चुनाँचे मैंने मंशा ज़ाहिर करते वक़्त बिला पूछे कह दिया कि 'हां हो गई'।

फ़रमाया= कि यह तुमने क्या कह दिया। वो अब वाक़ई कुतुब हो गये। और फिर हिदायत की कि आइंदा ऐहितयात रखने की ज़रूरत है। जनाब भाई साहब में फ़ौरन कैफ़ियत तारी हो गई। और अपने काम के दायरे का भी, जो लाइंतहा था उनको एहसास हो गया। काम की डयूटी भी क़िब्ला हज़रत ने लगा दी।

फ़रमाया= यह उनकी (मदन मोहन लाल) नेकनीयती का समरा हैं।

वक़्त एक बज कर पचास मिनट पर मैं खाना खाने के बाद लेटा था। इरशाद हुआ कि क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) तशरीफ़ ला रहे हैं। सम्भल कर और कुर्ता टोपी पहन कर बाक़ायदा बैठ जाओ। उसके बाद ही हज़रत तशरीफ़ लाए और कुतुब के दर्जे का confirmation कर दिया। मेरी तरफ़ मुख़ातिब हुए, तव्वजो दी। दुआ दे कर तशरीफ़ ले गऐ। मक़सद तरशीफ़ काम का मुआएना था।

इरशाद हुआ कि तुम्हारा दर्जा और भी बढ़ा दिया गया। और मेरी (मुराद हज़रत लाला जी साहब से) भी तारीफ़ की। यह रास्ता ग़ौस की हालत आने पर खुलता है। नक़्शा यह था कि एक कुर्रायज़ात जिसमें हज़रत क़िब्ला मौजूद हैं, दिखलाई दिया। और फ़रमाया कि इस वजह से दिखला दिया कि विसाल होने पर सीधे इस जगह पहुंच जाओ।

मौलवी साहब क़िब्ला (रहम०) तुम्हारी सिफ़ारिश ग़ौस-उल-आज़म के लिए कर गये हैं। मेरा इरादा इससे भी ऊंचा पहुंचाने का है। मुझे किसी वक़्त चैन नहीं है। हर वक़्त तबियत यह चाहती है कि तुमको कहां खींच कर रख दूं। शिजरे में जब तुम्हारा नाम होगा, ग़ौस-उल-आज़म की कैफ़ियत से मन्सूब किये जाओगे। इससे आगे कोई दर्जात नहीं हैं। यहां पर दर्जात का ख़ातमा है। हक़ीक़त बेनक़ाब हो चुकी है। शिजरे में ग़ौस उल-आज़म के नाम से यूँ मन्सूब कराना चाहता हूं कि उसके आगे जो कैफ़ियत बढ़ेगी, उसका कोई नाम नहीं है। इसकी मुझे भी ख़ुशी है कि इस बात का सेहरा मेरे

ही हाथ रहा। इस कैफ़ियत में अब बहुत देर नहीं है। मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) बुनियाद आज डाल गऐ हैं। एक बात और बताना रह गई। ग़ौस-उल-आज़म की कैफ़ियत से किसी को तवज्जो मत देना। जहां तक तुम्हारी हालत है वहां लोगों की समझ भी काम नहीं करेगी। इसका जानने वाला कोई पैदा ही नहीं हुआ। यह बात तुम्हारे एक हज़ार बरस बाद किसी को नसीब होगी। बहुत से बुज़ुर्ग जो इस हालत को पहुंचे हैं, इससे आगे नहीं बढ़े। सिर्फ़ हज़रत मुजद्दिद साहब (रहम०) की हस्ती को छोड़ कर। मेरे दिल से हर वक़्त तुम्हारे लिए तरक़्क़ी की दुआ ही निकलती है। कोई लम्हा ख़ाली नहीं जाता कि तुम्हारी याद से बेखबर हो जाऊँ। मगर अफ़सोस यह है, इतना सीखने वाला कोई तुम्हें नहीं मिलेगा। जितना मैंने तुम्हें बढ़ाया है। मिसरा=

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त,
गर न बख़शद ख़ुदाए बख़शन्दा।

(अर्थात= यह सौभाग्य बाहुबल से प्राप्त नहीं होता यदि बख़शनहार परमात्मा की कृपा न होती।)

ईगुण साधन ते नाहिं होई।
तुम्हारी कृपा पाव कोई-कोई।।

लोग और बड़े-बड़े फ़क़ीर जिनको तुम्हारी हालत की खबर होगी परवाना- वार तुम पर गिरेंगे। इससे मेरा उस हालत से मंशा नहीं है जो तुमको अता की गई है। इसका कोई समझने वाला ही नहीं है। क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) को तुम्हें देख कर जो खुशी हुई है उसको वो ही जानते हैं। और मुझे इसका नाज़ है। मैं तुम्हारे लिये लोगों के सामने बेरूख़ी से पेश आता था। इसकी वजह यह थी कि मैंने किसी को तुम्हें समझने ही न दिया। मुझे हर वक़्त खटका था कि ऐसा न हो कि यह लाल हाथ से निकल जाए। अगर लोगों को यह मालूम होता तो ज़हर खिलाने की कोशिश की जाती। फिर भी ख़्यालत इस क़िस्म के गूंजते रहे। गो वो कुछ कर न सके। मैंने किसी को तुम्हारे लिये शुबहा ही न होने दिया कि मैं तुमसे मोहब्बत करता हूं। इसका पता मेरे लड़के को भी नहीं है। क्या कोई इस अहल है। सज्जादा नशीनी की क़ाबलियत का लोग ख़्वाब देख रहे हैं। मेरा सज्जादा नशीन धुनिया जुलाहा नहीं हो सकता। वो इतना ही सोचें कि मेरे ख़्वास, मेरी कैफ़ियत मेरी मोहब्बत किसी में है। तभी उनको पता चल जायेगा। अगर कोई ग़ौर से देखे तो तुम्हारी हरकात व सकनात बिलकुल मुझसे

मिलेंगी। लोगों की निगाह इस क़दर वसीअ नहीं हुई हैं। उन्होंने (ब्रजमोहन) अपने आप को एक तंग दायरे में क़ैद कर रखा है। गो बाबू ब्रजमोहन लाल की हालत अच्छी है। अगर कुछ ख़राब हुई है तो यह उन्हीं का ज़ाती ख़ुद करदा असर है। मगर यह बात कहां। इसकी उनको हवा भी नहीं लगी है। तुम्हारी हालत जैसा कि मैं कह चुका हूं, लम्हा ब लम्हा बदल रही है। यह नबुवत है। इशारा मेरी तरफ़ था।

29.7.1944

तुमने क़ुद्स का मैदान छोड़ दिया। अब क़दम आगे है। मैं चाहता हूं कि इस वक़्त तुम्हारा Mind disturb न हो। और peaceful रहो। इसके बाद मैं तुमरी सेहत की तरफ़ राग़िब हूंगा। मैं बहुत जल्दी कर रहा हूं।

अर्ज़ किया= राज़ी हूं मैं उसीमें जिसमें तेरी रज़ा हो।

फ़रमाया= यह कहो; राजी हूं मैं उसी में जिसमें मेरी रज़ा हो। मैंने तुम्हें अपना मुक़ाम दिखला दिया। इसके बाद तुम्हें इसी हालत पर आना है। विसाल के बाद तुम्हें कोई कोशिश करना न होगी। फ़क़त energy खिंच जाएगी। तुम पहले ही से वहां मौजूद होगें, जहां तुम्हें जाना है। मौत तुम्हारी हो चुकी है; सिर्फ़ ज़ाहिरी शक्ल इस दुनिया में बाक़ी है। उम्मीद रखो यह कैफ़ियत ग़ौस-उल-आज़म की जल्द आने वाली है। यह दर्जा जो मैंने तुम्हें दिखलाया है उससे भी ऊंचा है। यहां पर सब दौड़ ख़त्म होती है। **सिर्फ़ ज़ात में फैलाब बाक़ी रह जाता है।** वहां की कैफ़ियत मैं फिर बताऊंगा। अभी मौजूदा काम को कर लेने दो। वो कैफ़ियत तुम्हारे ख़्याल में आने लगी है। रास्ता साफ़ हो चुका है अब अपने आप को **मुब्तदी मत कहना**।

सवाल मदन मोहन लाल= ग़ौस और ग़ौस-उल-आज़म, यह सब अख़्तियरात के दर्जात हैं? रूहानियत इसकी लाज़मी शर्त है?

फरमाया= नहीं! ये रूहानियत के दर्जात हैं। इनके साथ-साथ अख़्तियारात भी होते हैं।

बाबू मदन मोहन लाल को ख़ुशख़बरी दो कि वो **मक़बूल** हो गए। हालत और बढ़ेगी। नाउम्मीद न हों। क़ुतुब के बाद क़ुतुब-उल-अक़ताब का दर्जा आता है। इससे

ज्यादा उम्र नहीं। **डाक्टर श्री किशन लाल** को मैं बढ़ाना चाहता हूं मगर वो बढ़ते नहीं।

अर्ज़ किया कि आप मुझे जो हुक्म दें तामील की जाए। फ़रमाया= पहले वो अपनी ग़लती का पश्चाताप करें। तुम्हें उन लोगों **(श्री किशन लाल, चतुभुर्ज सहाय)** के लिए अपनी स्पेशल पॉवर लगाना पड़ेगी। ये लोग **बिगड़** चुके हैं। **अहमियत** का नशा ग़लिब है। **डाक्टर चतुभुर्ज सहाय** जानते हैं कि उनकी हालत ऊपर नहीं बढ़ रही है, फिर भी अहमियत नहीं छोड़ते। मेरी **इजाज़त** अब काम नहीं करेगी। जब तक तुम **इजाज़त** न दोगे। मैं इजाज़त खत्म कर चुका। **ये सब बातें उनके बताने के लिए हैं। श्याम बिहारी लाल** का ख़्याल छोड़ दो। लोगों को भंडारे के दिनों में और जगह किसी के पास बैठने न देना। अपनी ताक़त से उनको अपनी तरफ़ खींच लेना। जहां तक हो सके हर शख़्स को वक़्त तन्हा देना। बहुत **बिगड़ी** हुई हालत है। कुछ काम बाबू मदन मोहन लाल के सुपुर्द कर देना। मेरी **औलाद** में कोई निकलता हुआ मालूम ही नहीं होता। एक खेल समझ रखा है। serious रहना। **नन्हे** के मज़ाक़ ने लोगों की तबियतें और बिगाड़ दीं। हंसी-मज़ाक़ की इजाज़त न देना। जहां ऐसा मौक़ा हो खुद जा कर बैठ जाना।

31.7.1944

क्या तुम अपने आपको मामूली हस्ती का समझ रहे हो। ज़रा ख़्याल पैदा हो जाना ग़ज़ब है। ट्रेन का वाक़या लिखने के क़ाबिल है; ताकि तुम भी सबक़ सीखो और आइंदा जो लोग आऐं उनको भी सबक़ मिले कि ख़्याल में ऐसी ताक़त भर जाया करती है। वाक़या मैं लिखाता हूं। जब तुम टीन (Tin-shed) में लेटे हुए थे गाड़ी भक-भक करती हुई भागी जा रही थी। उसकी तेज़ी को देख कर तुम्हारी भी हिम्मत उबल पड़ी। और यह तुम्हारी आदत है। **इसको छोड़ो**। तुम्हारा ख़्याल एक या दो सैकेंड, उसको गिरा देने का हुआ था। उसके बाद फिर ऐसी तबियत नहीं चाही यानी ऐसा करने को तबियत नहीं चाही। इसका नतीजा यह हुआ कि ट्रेन Derail हो गई। अगर ज़रा हिम्मत से और ख़्याल बांधते तो गिर गई होती। यह आइंदा आने वालों के लिए एहतियात है।

अगर इंसानी जबल्लत की वजह से तबियत खराबी का तरफ़ अऊद कर आये तो फ़ौरन अच्छाई की तरफ़ ख़्याल बांध दो। ताकि औसत बराबर हो जाये। यह बाबू **मदन मोहन लाल** के लिए भी ऐहितियात है। तुम सब की ख़ैरियत के लिए, जो तुमसे

वाबस्ता हैं दुआ करते रहा करो। ताकि किसी वक़्त अगर कोई ख़्याल खराब उनकी निस्बत पैदा हो जाए तो पहला ख़्याल फ़ायक़ रहे। दुआ दिल से की जाऐ। उनका **(मदन मोहन लाल)** अहसास **खुल** चुका है। अब उसको जाने मत दें। **भंडारे** में अगर किसी बात के लिए कोई ख़्याल करना पड़े तो ज़ोर न देना वरना उनके **क़ल्ब** फट जाएंगें। तुम्हारा **ग़ौस** का दर्जा ख़त्म हो रहा है। **ग़ौस-उल-आज़म** की हालत पर क़दम रख दिया है। उसके आगे भी उम्मीद रखो। इस हालत को मैं बहुत दिनों नहीं रोकूंगा। और मेरा तुम्हारा साथ हो जाएगा। उस वक़्त यह तेज़ी खत्म हो ज़ाएगी। **भंडारे से क़ब्ल तुम मेरी ही हालत पर होगे। उसमें इससे भी ज़्यादा ज़ोर है।** मैंने एक दम से तुम्हारी सब हालतें उभार दीं। मैं क्या करूं मुझे चैन ही नहीं पड़ा, और चैन अब भी नहीं है। **तुम मेरे इश्क में मुब्तला और मैं तुम्हारे इश्क में। न तुमने मुझे छोड़ा और न मैं तुम्हें छोडूं। मगर अपनी हालत पर पहुंचा कर मैं अपना पीछा छुड़ा लूंगा, क्योंकि इसके आगे इश्क़ का ख़ात्मा है। पीछा छुड़ाने से मतलब यह है कि मैं अपना काम ख़त्म कर चुकूंगा। और साथ रहने का तो मैं जिंदगी भर के लिए वायदा कर चुका हूं। तुम बड़े ख़ुशकिस्मत हो। हज़रत मुजद्दिद साहब (रहम०) तुम्हें देखने के लिए तशरीफ़ लाये थे। मेरे काम का मुआएना किया, ख़ुश होकर चले गए। तुमको भी दुआ दे गए। तुम्हारी हालत बदल गई। उन्होंने भी तुम्हें नहीं छोड़ा कुछ देकर ही गए। यह निस्बत हज़रत मुजद्दिद साहब (रहम०) की थी जो तुममें सरायत हो गई। तुमने मुझे मुजद्दिद सानी कहा है, मैं तुम्हें कहता हूं।** मेरी तबियत चाहती है कि तुम मुझे कह कर पुकारते हो, मैं तुम्हें कह कर पुकारूं। अब आगे कुछ कहना नहीं है। अपनी कैफ़ियत देख लो। **कहना अदबन् जायज़ नहीं। हज़रत मुजद्दिद साहब (रहम०) तुममें फ़ना हो गए हैं। बस इतना कहना चाहता हूं कि उन्होंने इसके आगे तहरीक कर दी है। वो वक़्त भी जल्द आ रहा है। ये निस्बते मोहम्मदिया है।** अगर मैं आज़ाद न होता तो इस ख़ुशी में नाचने लगता। फ़क़ीर बहुत गुज़रे हैं। मगर यह बात किसी को मयस्सर नहीं हुई। **हज़रत ने मेरी पीठ पर हाथ फेरा और दुआ दी कि ख़ुश रहो। तुमने मेरा नाम ज़िंदा कर दिया।** ये सब तैयारियां आगे के मक़ाम पर ले जाने की हैं। परवाज़गी आसान हो गई। अब मैं अपने काम में लगता हूं। कुछ तोड़-फोड़ करना बाक़ी है। तुम **आज़ाद** रहो। मेरी तुमसे काम लेने की हिम्मत नहीं पड़ती। **चचा** ने (**मदन मोहन लाल** के) इस मक़ाम (**वो ताक़त जिसके मातहत दिमाग़ काम करता है**) को बंद कर रखा था। इससे आगे उनकी (**नन्हे**) पहुंच नहीं थी। **अब खुल गया।** और तुम्हारे मक़ाम की हज़रत (**नन्हे**) को

खबर ही न हुई कि खुला हुआ है। मैंने हल्का सा हिजाब क़ायम कर रखा था। इस वजह से उन्हें (नन्हे) तमीज़ नहीं हुई। इससे आगे उनका ख़्याल भी नहीं पहुंच सकता था।

कहो मैंने कैसी होशियारी की। नहीं तो वो **(नन्हे)** हाथ से बेहाथ हो जाते।

बदरियाफ़्त **मदन मोहन लाल** फ़रमाया= बुढ़ोते वक़्त तुम्हें ताक़त लेकर क्या करना है। मैंने यह काम अब बेहतर शख़्स के सुपुर्द कर रखा है जिसमें सर्दी और गर्मी नहीं है। किसी किसी वक़्त वेतुकापन आ जाता है, उसको मैं रोक देता हूं। यह तुम्हारा **(मदन मोहन लाल)** भी असर है। आइंदा से उनको किसी बात पर उभारना नहीं।

Destruction for M.M.= **यह बात ख़्याल रखने की ज़रूरत है। अगर यह वतीरा जारी रखोगे तो मैं अपनी हालत पर ले आऊंगा। तुम (मदन मोहन लाल) भी मेरे हाथ से बेहाथ हो चुके हो, इसलिए मैं रखता हूं। मगर मैं समझता हूं मेरी बात की वो वुक़अत करेंगे। मैंने कोई राज़ नहीं रखा, दिल खोल कर बता रहा हूं। अगर कोई बात बेहतर समझ में आ जाये तो खुद (मदन मोहन लाल) कर लें। उनसे (R. C.) कहने की ज़रूरत नहीं। ये आपका (मदन मोहन लाल) कहना न टालेंगे और इससे मेरा नुक़सान होगा। मैंने अपनी स्कीम (scheme) के मुताबिक़ उनको (R. C.) बनाया है। उसमें ख़लल पड़ेगा। इस बात का भंडारे में भी (मदन मोहन लाल) ख़्याल रखें। ज़ोर में न आ जावें। भंडारे में उन्हें (R. C.) कोई हिदायत करने की ज़रूरत नहीं। ये (R. C.) वो ही करेगें जो मेरी मंशा है। वो (मदन मोहन लाल) अपने चेले को अपनी तबियत के मुताबिक़ बना सकते हैं। मेरे चेलों को अपनी तबियत के मुताबिक़ बनाने का (तुमको) अख़्तियार नहीं है। उनके लिए जो मैं समझूंगा वह करूंगा। उनके (R. C.) ज़रिये से काम लूंगा। बाबू मदन मोहन लाल के चेलों में Fiery spirit न पैदा हो जाए इसका तुम (R. C.) ख़्याल रखना।**

मैं समझता हूं कि ठाकुर मुनेशर सिंह को इस भंडारे में शरीक करना बेहतर न होगा।

(नोटः- मदन मोहन= ठाकुर मुनेशर सिंह को इम्साल भंडारे में साथ ले जाने का मेरा इरादा था।) वो **(मदन मोहन) ख़ामोशी से सुनते रहें और ख़्याल को काम मे लाते रहें। लड़ने-भिड़ने की ज़रूरत नहीं है। उन पर अमल करना (मदन मोहन के लिए)**

लाज़्मी है वरना मेरी नाखुशी का बायस होगा। मैं समझता हूं कि अगर बाबू मदन मोहन लाल वहां यह कैफ़ियत पैदा करते रहें तो ज़्यादा मुनासिब होगा। (नक़्शा हज़रत क़िब्ला ने दिखला दिया जिससे शांति बरस रही थी) और लोगों के ख़्यालात भी सलब कर सकते हैं। खाने-पीने की (मदन मोहन) एहतियात रखें। भंडारे के दिनों में उनके (R. C.) दिमाग़ पर ज़ोर रहेगा। ये काम तुम उन्हीं के सुपुर्द कर देना। भंडारे में तुम **दिल** पर उतर आना, इससे तुम्हारे दिमाग़ पर ज़ोर नहीं पड़ेगा और काम होगा। जब ज़रूरत पड़े तो ऊपर जा सकते हो। सरवरी कैफ़ियत मत छोड़ना। **मैं अपनी पूरी ताक़त से वहां मौजूद रहूंगा। सिर्फ़ ख़्याल करने की देर होगी। ज़ात की कैफ़ियत बरसेगी।**

आदाबे जलसा की बाबत मदन मोहन ने दरियाफ़्त किया तो फ़रमाया= कि (1) हर शख़्स एक दूसरे की इज़्ज़त करे, (2) कमीबेशी का सवाल जलसे में पैदा न हो, (3) एक ही **बाप की औलाद** सब लोग समझें, (4) कोई ऐसी बात न हो जो एक दूसरे को नागवार हो (5) बेहूदगी से बचें, (6) तबियत को यक्सू रखें (7) बहस और मुबाहसे की तरफ़ रग़बत न करें। जो बातें ज़रूरी हों वो पूछें (8) **भंडारे का मतलब यह है कि जिसका उर्स हो रहा है उसकी याद को ताज़ा करें** (9) यह ख़्याल न होना चाहिए कि कौन किस का **पीर** है और कौन किस का **मुरीद** है। बारिश यक्साँ होना चाहिए।

बदरियाक्त मज़ीद फ़रमाया= बाबू ब्रजमोहन लाल कुछ ग़ैर नहीं हैं, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि लोग उनसे गरविदा हो रहे हैं और मेरी तरफ **रूझान** में कमी हो गई है। इसका **ठीक** करना तुम्हारा काम होगा। जब उनको यह मालूम हो जाएगा कि किसी दूसरे में उनसे ज़्यादा ताक़त है तो खुद-ब-खुद खिंच आयेंगे। बेलुत्फ़ी पैदा नहीं करना चाहिए। **मुंशी** अहमक़ है। उसकी तरफ़ कोई जायेगा भी नहीं। दो एक लोग जो उनसे डरते हैं वो शायद चले जांऐ। बहुत से लोग उनके पास खुद उनका मज़ाक़ उड़ाने के लिए भी बैठ जाते हैं। और बहुत से इस लिए बैठ जाते हैं कि **नन्हे** के बरखुरदार हैं। वो इस बात से खुश होंगे। उनसे फ़ैज़ लेने कोई नहीं जाता। इन बातों में बहुत कुछ तबादला हो चुकेगा। तुम्हें कुछ मुश्किल नहीं पड़ेगी।

1.8.1944

बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि तुम काफ़ी तैर चुके हो। मुक़ाम खुल चुका है। लताफ़त बढ़ रही है। अब **तवज्जो** की ज़रूरत नहीं मालूम होती। **काम सुपुर्द कर दिया करो**। उनके (मदन मोहन लाल) लिए अब यही पूजा है। बहुत कर चुके। **भाईयों के राहे रास्त पर लाने की भी कोशिश करें। ख़्याली धार चारों तरफ फैंकें। एक बात बाक़ी है उसे तुम (R. C.) खोलदेना (दिल खोल देना)** मेरा दौरा कभी-कभी उनके पास हो जाता है। मैं इस वक़्त भी उनके पास मौजूद हूं। मुझे यह काम तुम्हीं से कराना मंजूर था। (यानी मदन मोहन लाल में क़ुतुबियत की हालत)। मेरे हाथ पैर नहीं हैं। इस हालत को दूसरों में बहुत समझ-बूझ कर करना। तुममें जज़्बा बहुत है। जज़्बा मुझमें भी बहुत था, मगर मैं उसूल और क़ायदे की पाबंदी किया करता था। और तुम्हें मोहब्बत में पता नहीं लगता। तुम्हारे हर अंसर में मोहब्बत कूट-कूट कर भर गई है। जिसको मैं अभी Regulate नहीं कर सका। **क़ुतुब बनना मज़ाक़ नहीं है** और न ऐसी कोई तालीम देता है। और न हर शख़्स में इसकी क़ाबलियत होती है। जब तक Special powers न हों तब तक दिल का दिया जग नही सकता। इससे पेशतर तुमने (R. C.) भी कोशिश की थी लेकिन तुम उसको पूरा न कर सके।

हिन्दुस्तान का काम **मदन मोहन लाल के सुपुर्द** किया गया। जैसी **रोशनी** दी जाए वैसा ही काम करें। इनको **(मदन मोहन लाल)** काम का बड़ा चस्का था। मैं उनसे खूब काम लूंगा। तुम्हारी (R. C.) **ग़ौस-उल-आज़म** की कैफ़ियत शुरू हो गई। ग़ौस का दर्जा पार कर लिया। वो ग़ौस साहब जिनको मैंने तुम्हें दिखलाया था उनसे ताल्लुक़ पैदा कर लो ताकि बराहेरास्त आर्डर दे सको। तुम्हें आर्डर मैं दूंगा। आज मुझे कुछ खिला देना। इस कैफ़ियत को मैं कुछ दिनों क़ायम रखना चाहता हूं। ताकि तुम्हारी Supremacy फ़क़ीरों में establish हो जाए। मैं तुम्हें इससे आगे भी ले जाऊंगा। मगर इस हालते ग़ौस-उल-आज़म में वक़्तन फ़ौक़तन वापसी होती रहेगी और तुम्हारी खुद अख़्तियारी होगी। क्योंकि दुनिया के काम बग़ैर इस हालत के नहीं चल सकेंगे। यह मेरी मुहब्बत है कि मैं तुम्हें उस तरफ खींच रहा हूं, वरना यह दर्जा जिस्म छोड़ने के बाद मिलता है। मैं ज़िंदगी में तुमको सब कुछ करना चाहता हूं। यह हर बुज़ुर्ग नहीं कर सकता। **यह मेरी ख़ास तरमीम है।** इस हालत के आगे भी इंतहा नहीं है। मैं इस मुक़ाम में अपनी ज़िंदगी में खूब तैर चुक था। इस तरमीम की बुज़ुर्गों में मेरी **तारीफ़**

है। मेरी भी वापसी ग़ौस-उल-आज़म की हालत पर रहती थी। मेरा भी यह मक़ामे खुद अख़्तियारी था। कोई बुज़ुर्ग इस मुक़ाम से आगे नहीं बढ़ा। **हज़रत मुजद्दिद साहब (रहम0) को छोड़ता हूं।** अगर तुम्हारी ख़ाहिश है तो मैं मना नहीं करता। **ग़ौस-उल-आज़म शिजरे में मेरे नाम के साथ लिख सकते हो।** लोगों को ताज्जुब होगा कि एक साथ दो कैसे चले आ रहे हैं। **(यानी मैं और उसके बाद तुम)** मुलके ख़ुदा तंगनेस्त। पाये मरा लंगनेस्त" (अर्थात= परमात्मा का देश संकुचित नहीं है। और मेरा पांव भी लंगडा नहीं है।)

ख़्वाब में तालीमः- फ़रमाया= सूक्ष्म शरीर इस ख़्याल से भेजा जाता है कि उस शख़्स को ऐन वो ही ख़्याल हो जो तुम्हारा मंशा है। उसकी तरकीब यह है कि सूक्ष्म शरीर में वो अज्ज़ा शामिल करके उसको रवाना किया जाता है जो ख्वाब दिखलाता है। पसेपुश्त उसमें तवज्जो दी जाती है। वो ही तस्वीरें सिनेमा की तरह परदे पर उतर जाती हैं। मगर यह सब बातें हिम्मत और will पर हैं। हर शख़्स इसको नहीं कर सकता। जब तक will और हिम्मत न होगी यह तरकीबें काम नहीं देंगी। असल चीज़ें यही हैं। जब तक यह न हों, तरकीबें काम नहीं दे सकतीं। तरकीबें सिर्फ़ इस लिए हैं कि काम जल्दी बन जाता है और मक़सद में मद्दगार बन जाती हैं। **तरीक़ा तालीम।** तालीम जिस वक़्त शुरू की जाए, पहले दिल का मुक़ाम लिया जाता है। इसमें काफ़ी देर तक उसको रखा जाता है। चाहिऐ तो यह है कि पीर की मदद से जब तक उस मक़ाम को ख़ुद-ब-ख़ुद cross न कर जाये, आगे बढ़ाना नहीं चाहिये। ऐसा करने से उसकी जड़ मज़बूत हो जाती है, और गिरने का अंदेशा नहीं रहता। अन्वार और तजल्लियात का उसको बहुत कुछ इससे मज़ा मिलने लगता है। आगे चलने पर यह मद्धम पड़ते जाते हैं। यहां तक के सिर्फ़ अहसास ही अहसास बाक़ी रह जाता है। और आगे चल कर यह भी नहीं रहता। ऐसा करने से यानी दिल के मुक़ाम पर ज़्यादा रखने से उसको काफ़ी मज़ा आ चुकता है और उसके भागने की तबियत नहीं चाहती। ब-दरियाफ्त कि इसका पता कैसे चले? फ़रमाया= तालिब जब उससे सूक्ष्म गति में आने लगे तब यह समझना चाहिए कि दूसरे मक़ाम के खोलने की ज़रूरत है। यह (दिल) कोई मामूली मक़ाम नहीं है जैसा कि तुमने समझ रखा है। बड़े-बड़े औलिया इस मक़ाम को पार ही न कर सके, और इसकी मुकम्मिल सैर शाज़ोनादर नसीब होती है। हमारे यहां अक्सी तौर पर यह मुक़ामात खोल दिये गये; मगर सैर करने की किसी में क़ाबलियत नहीं पाई गई। जब तक सैर नहीं होती पूरा मलका हासिल नहीं होता।

सबसे ज़्यादा देर इसी में लगती है। कुतुब की हालत इसी के क़रीब है। अब अंदाज़ा लगाओ कि यह कितना बड़ा मुक़ाम है। जब मैं तुम्हें यह बातें बताता हूं तो तुमको मुस्तसना कर देता हूं। बाक़ी मुक़ामात जो आलमे सुग़रा में है इतने वसीह नहीं हैं। बाक़ी मुक़ामात में देर नहीं लगती। इन सब मुक़ामात का दिल से ताल्लुक़ है। कुल सीने को एक ही दिल समझो। इसी से सब क़वा नश्वरेनुमा पाते हैं। अगर यह अपना काम करना छोड़ दे तो एक लम्हे के अंदर हालत जाँकुनी की हो जाएगी। अगर ख़्याल किया जाये तो जुमला लतायफ की यह (लतीफ़ए क़ल्व) परसतिश-गाह मिलेगी। अगर इस (दिल) चीज़ को अलहदा कर लिया जाये या इस मुक़ाम को touch न किया जाए तो सब लतायफ़ की हालत कमज़ोर रहेगी। हमारे यहां इस लतीफ़े की बहुत कद्र की गई है। इसको मामूली मक़ाम न समझना चाहिये। यह तरीक़ा जो तुम्हें बज़रिया नक़्शा बतलाया गया, जल्दी का है। बेहतर तो यह है कि तालिब को मद्द दे कर ख़ुद उभरने का मौका दें। और मुक़ामात की बाबत मैं इतना ज़रूरी नहीं समझता। तुम्हारी (R. C.) कैफ़ियत जो इस वक़्त है यह **दिल की इंतहाई हालत** है। बक़िया लताईफ़ जो हैं वह अपनी कैफ़ियत अपने ही तक रखते हैं। सिर्फ़ यही एक चीज़ है जो हर लतीफ़े के साथ रहती है। जितना दिल आगे बढ़ता चला जाता है, मन को छोड़ता जाता है। यानी उसकी ताक़त कम होती जाती है और ख़ुद ख़ालिस हो जाता है। यहां तक कि यह भी **अव्यक्त गति** अख़्तियार कर लेता है और माया (Maya) रहित हो जाता है। **आलमेंकुद्स** में इसी का डंका बजता है। और इस के आगे भी यही एक चीज़ है जो ऊपर जाती है। बक़िया जुम्ला लतायफ़ धुर तक पहुंचने में मदद नहीं देते। तालिब जिस जगह पहुंचता है इसी के ज़रिए से पहुंचता है। यह उस वक़्त गुम हो जाता है जिस वक़्त ज़ात में पहुंचा देता है। दिल से मतलब मेरा मांस के लोथड़े से नहीं है। बल्कि यह वो चीज़ है जो एक **माजून मुरक्कब** की शक्ल में दिल में उतारी गई है। इसमें जुमला लतायफ के निचोड़ मौजूद हैं।

तुम जब किसी को सिखलाओ तो दिल ही पर ज़ोर देना। ज़ोर देने से मेरा मतलब यह नहीं है कि किसी का क़ल्ब फाड़ दो। ज़ात में पहुंच कर ये चीज़ गुम जो जाती हैं। मगर जब मेरी हालत में पहुंच जाओ तब उसकी गुमशुदगी समझना। वहां पर हर चीज़ लय हो जाती है। आगे जब पहुंचो तब सवाल कर लेना। वहां सवाल की गुंजाइश ही न रहेगी। यूँ समझ लो जैसे प्रेम असल चीज़ है और तरीक़े उसके जुदागाना हैं। तरीक़े प्रेम को फ़क़्त रेंगुलेट कर देते हैं और उसका फ़ार्म (form) तबदील कर देते

हैं।

मुतल्लिक़ा सैफ़हाय चिशतिया। इन सब का Defence यह है कि अपनी यह will बांध दे कि मुझमें गुरु की ताक़त सरायत कर चुकी है। और उसमें यह कोई ताक़त असर नहीं कर सकती है। अगर शुरू से यह ख़्याल कर ले यानी जिस रोज़ से कि पीर के पास पहुंचा है तो उसमें यह ताक़त पैदा हो जाऐगी कि यह हथियार असर न करेंगे। और फिर हरवक़्त उसके ख़्याल करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी। सिर्फ़ इस बात का यक़ीन कर लेना है और इसी की पुख़्तगी की ज़रूरत है यह बात तब ही मुमकिन है जब गुरु पर विश्वास हो।

बाबू मदन मोहन लाल ने यह सवाल किये हैं और Defence का उन्हें ख़ास ख़्याल रहा है। यह उनके ख़्यालात का जवाब है। अब वो यह भी सवाल करेंगे कि अक़ीदा पुख़्ता कैसे हो। इसका जवाब सिर्फ़ यही है कि तालिब का संस्कार और गुरु की मद्‌द। तालिब की अक़ीदत में उस वक़्त ही पुख़्तगी शुरू हो जाती है जब वो अपने गुरु की रहनी-सहनी नेक देखता है। सब शख़्स अगर इस बात की नक़ल करें तो कामयाब नहीं हो सकते। जिसका जैसा ख़्याल है वैसा ही उसके पास Defence रहेगा। यह सब अपनी हिम्मत पर है और मोहब्बत शर्त है। अपने यहां मोहब्बत पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है ताकि ख़ुद फ़रामोशी की हालत पैदा हो जाए। और उसके पसेपुश्त ताक़त उसमें दौड़ने लगे।

तास्सुब दिल की कमज़ोरी का नाम है। जिसमें यह बात मौजूद है, समझ लो उसने दिल का मुक़ाम छोड़ दिया है और उसकी तरक़्क़ी मफ़कूद हो गई है।

बातचीत में मौलवी अबदुल ग़नी खां साहब का ज़िक्र आ गया।

फ़रमाया= इस तहज़ीब का तुम (मदन मोहन लाल) भी ख़्याल रखना। **तुमको (R. C.) हवा के अन्सर पर काबू देता हूं।** इसके बाद मौज्ज़ों का नम्बर है। मैंने तुम्हारे लिए मौज्ज़ों का स्टाक रख छोड़ा है। ज़रा तंदरूस्ती ठीक कर लूं। एक दम से मुन्तक़िल कर दूंगा। आज ग़ौस की हालत तुम क़तई पार करके **ग़ौस-उल-आज़म** की हालत में आ गये। और आज तुमने उसका एक अच्छा हिस्सा पार कर लिया। कल तक उसको ख़त्म कर लोगे। परसों **ज़ात** से सम्बंध जोड़ दूंगा। बस फिर उसमें **शनावरी** करते रहेना। फिर क्या।

"खूब निपटेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो।" दुनिया में आज यह पहली मिसाल है।

सवाल मदन मोहन लाल हम लोग जो अपने आप को ज़ात में लय करते हैं तो क्या लय हो जाते हैं?

फ़रमाया= **ज़ात** की हालत तुम्हारी (मौजूदा) हालत से **बहुत ही पहले** शुरू हो जाती है। बहुत से बुज़ुर्ग तो कुतुब की हालत को नहीं पहुंचे मगर ज़ात से निस्बत हासिल हो गई। तुम्हारी (मदन मोहन) निस्बत **कुतुब** की हालत से पहले क़ायम हो चुकी है। बाबू मदन मोहन लाल में **ज़ात** की अच्छी कैफ़ियत है।

2.8.1944

अपने घर की परेशानियां मैं ही जानता हूं। इसका क्या झनकना है, इसको रियाज़त समझो। इन सब का इलाज बेहयाई है। इसको बहुत से लोग (फ़ुक़रा) चाहते हैं मगर नहीं होती। यह **ख़ुदाई नेमत** है। तुम्हारी बीबी की मिसाल सब बुज़ुर्गों की बीबिओं से बढ़ गई। मगर उसका अंजाम बख़ैर होगा **वो आज़ाद जाएगी**। रूहानियत से ख़ाली नहीं है।

सवाल मदन मोहन= घर में' मयके पड़ी है। चाहा था कि कुछ पूजा किया करे मगर नहीं की?

फ़रमाया= यह उसका एवज़ है कि तुमको यह हालत नसीब हुई है। अगर उसकी ग़ुस्सावर तबियत न होती और तकलीफ़ देने का माद्दा न होता तो तुम मेरी तरफ़ इस तरह से रुजूअ नहीं होते।"

आज **मदन मोहन लाल** का **दिल** खोल दो।

खोल दिया (मदन मोहन लाल पर हालत तारी हो गई) जगह मुस्तक़िल कर देना।

3.8.1944

तुम ग़ौस-उल-आज़म का दर्जा कल पार कर चुके थे। कल ही ज़ात से सम्बन्ध क़ायम कर दिया गया। और तुम्हारी Position establish कर दी गई। उसके क़रीब

मैं भी था। तुमको सीधे हाथ की तरफ़ जगह दी गई। तुमसे शनावरी के लिए कहा गया। मगर चूंकि तुमने सब मेरे ही ऊपर छोड़ दिया है लिहाज़ा मैंने तवज्जो देने का वायदा कर लिया है। तुमको उस मुक़ाम पर लय करके छोडूंगा। आज तुम्हारी क़िस्मत का कोई अंदाज़ा नहीं कर सकता। और तुम्हारी हालत के बारे में बस मैं यहीं कहता हूं।

"दिले मन दानद, मन दानम, दानद दिले मन" (अर्थात= मेरा दिल जानता है, मैं जानता हूं, और जानता है मेरा दिल।)

कल तुमने एक और सवाल किया था उसका जवाब यह है कि वहां बक़ा ही बक़ा है, दर्जात सब ख़त्म हैं।

बसावाल **मदन मोहन लाल=** बक़ा क्या है?

फ़रमाया= **बक़ा** एक हालत है जो क़ाबिले बयान नहीं। फ़क़त इतना समझ लेना चाहिए। नक़्शा सामने आ गया जैसे जिस्म और रूह। रूह लतीफ़ है और जिस्म ठोस। इसका मज़ा चखा जा सकता है बयान में नहीं आता। अगर यह देखना चाहें तो उनको (मदन मोहन लाल) Practically दिखा दो। हालत इनमें भी मौजूद है। इससे दिमाग़ ज़्यादा खुला हुआ मालूम होता है। जहां तक दर्जात हैं, **लय** और **बक़ा** चली जाती है। **फ़नाईयत (लय अवस्था)** गुमशुदगी को कहते हैं और यह भी हर मक़ाम पर होती है या यूँ समझ लेना चाहिये जैसे पानी और उसकी भाप। भाप को और लतीफ़ कर ले तो **बक़ा दर बक़ा** हो जाएगी। मदन मोहन लाल से पूछो अब समझ में आ गया। कैफ़ियत जो दिखलाई गई वो मदन मोहन लाल की समझ में आ गई होगी। उसको और गहरा कर दिया जाए तो यही अगले मक़ाम की फ़नाईयत हो जाएगी। और यही सिलसिला आगे चलता रहेगा।

फ़रमाया= और पूछना है?

मदन मोहन लाल ने यह सवाल खूब किया इसमें बहुत से लटके रहते हैं। मैं कोई तरक़्क़ी या राज़ अपने पास रखना नहीं चाहता। मैं अपनी ज़िंदगी में यह न कर सका। मैं चाहता हूं कि अब हो जाए।

सवाल (R. C.) = अब तड़प नहीं मालूम होती?

फ़रमाया= **वस्ल** में तड़प काहे की। ये तरमीम जो तुमने की है उसमें इतना इज़ाफ़ा

और कर लो कि जब दिल से शक्ल गायब हो जाने लगे तब यह ख़्याल बाँधा जाये। इससे पेशतर तालिब को अटपटाहट मालूम होगी। शुरू में अगर चाहो तो ख़्याल बाँधने का यह तरीक़ा बताया जा सकता है। मगर ऐसी हालत में उसका ताल्लुक़ बराहेरास्त रहेगा। मगर ऐसे तालिब कम मिलेंगे। इसलिए गुरु के आदर्श जमाने की ज़रूरत है। ताकि उसको मदद मिलती रहे।

सवाल (R. C.) **मरते वक़्त कैसे तवज्जो दी जाती है?**

फ़रमाया= यह ख़्याल बाँधे कि मैंने कुल हालत इसमें उतार दी है। कुल मुक़ामात खोल कर तवज्जो दे और आखिर में ख़्यालात की **झिल्ली** फाड़ दें। यह मुक़ाम (लतीफ़े कल्ब का दिमाग़ है) बता चुका हूं जिसमें ख़्यालत रहते हैं और दिल का मुकाम वही है। ख्वाह पहले दिल के ख़्यालात की झिल्ली फाड़ दे और फिर तवज्जो दे। जैसा मौक़ा हो। ख़्यालात की झिल्ली जब तक नहीं फाड़ेगा आज़ाद नहीं होगा। और यह हर शख़्स का काम भी नहीं है। सिर्फ़ तवज्जो देने से असर वह ज़रूर ले जाएगा। जो आंईदा जन्म में फलदायक होगा। अगर इस हालत में कुछ मक़ामात पार करा दिए हैं, जो हर शख़्स का काम नहीं है तो आंईदा ज़िंदगी में उसके आगे से बढ़ेगा। इस पर सिर्फ़ मामूली तवज्जो करना होगी। इस कुल काम में एक मिनट से ज़्यादा नहीं लगता। **हिम्मत** शर्त है। मरते वक़्त कोई ख़ास तवज्जो नहीं दी जाती है। तरीक़ा यही है; सिर्फ़ जल्दी और ज़ोर पैदा किया जाता है। **नन्हे** में दिल के फाड़ने की क़ाबलियत नहीं थी। वो सिर्फ़ तवज्जो ही दे सकते थे।

हज़रत के हुकुम देने पर मैं (मदन मोहन) बराहे-रास्त हज़रत क़िब्ला से रुजूअ हुआ और सवाल किया कि मैं आप की इमदाद से झिल्ली फाड़ सकता हूं?

फ़रमाया= हां। **हिम्मत** शर्त है; हिम्मत शर्त है। अलफ़ाज़ साफ़ समझ में नहीं आये थे जो बाद को बतलाये गये। यह क़ाबलियत उनमें **(नन्हे)** न थी। ये तुम्हारे (R. C.) लिये मैंने Reserve रखी थी। यह सब बातें तुम्हारी निस्बत मैंने यूँ लिखाई हैं कि आगे कोई समझे कि मैंने तुमको ऐसी तालीम दी है। यह तारीफ़ें नहीं हैं बल्कि वाक़यात हैं। मेरी **कुदरत** लोगों की समझ में अब आएगी। मुझे न किसी ने **पहचाना** और न **पहचानने** की कोशिश की।

सवाल किया **जीवन मोक्ष क्या है?**

फ़रमाया= तुम्हारी इससे पहले की हालत जीवन मोक्ष की थी। मैं ज़िंदगी ही में तुम्हारी यह हालत पैदा करा चुका हूं तुम मस्लूबुल-फ़ेल हो चुके थे। ये शग़ले राबता की बरकत है। मोक्ष के साथ में जो विदेह लगाया गया है वो सिर्फ़ तुलसी दास ही का काम था। इस हालत में यानी तुममें जो वस्ल की हालत पैदा की गई है उससे मैं तुमको नीचे उतारूंगा। नहीं तो तुम मेरा काम नहीं कर सकोगे। इसकी हवा लगती रहेगी। मुक़ाम मुस्तक़िल समझो। तुम **खुद-इख़्तयारी** जाओगे। **वस्ल हो चुका।**

सवाल= में जिस वक़्त बाबू मदन मोहन लाल के एहसास खोलने की कोशिश करता था तो एक मोटी सी नस दिमाग़ में मालूम होती थी।?

फ़रमाया हज़रत (नन्हे) का करिश्मा था। उसमें इतनी ठोकरें दी गईं कि मोटी पड़ गई। अब तुम उसको ठीक कर देना। उनकी ज़िंदगी भी नहीं रहेगी वरना मैं हुक़्म देता कि उनकी भी नस मोटी कर दो।

4.8.1944

तुमने जो तहरीक क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) से मेरे हुक्म के मुताबिक़ बराहे-रास्त की थी उस पर उन्होंने तुम्हारा इंतज़ाम कर दिया है। और मुझको क़तई तौर पर तुम्हारी सुपुर्दगी में दे दिया है। इसका मतलब यह है कि अब जो तुम कहोगे, वह मैं करूंगा।

Destruction के काम में, मैंने बराहे-रास्त हिस्सा ले लिया है।

नन्हे का हाल बेहाल है, मगर वो कुछ सुनते नहीं। मैंने इस वक़्त (11 बजे दोपहर) उनको बराहे रास्त warning दी, मगर वो अपने ज़ोम में बैठे हैं। सुनते नहीं। मैंने काम शुरू कर दिया।

इरशादात हज़रत मौलाना क़िब्ला साहब (रहम०) फ़रमाया= मेरी नस्ल को बाक़ई तौर पर नन्हे ने, जिसको मैं खिलोना समझता था बरबाद करने में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। मैं आज़ाद था। मैंने सब काम तुम्हारे गुरु महाराज पर छोड़ दिये थे। ये **मुजस्सिम रहम** बन गये हैं और **मोहब्बत** की मिसाल नहीं रखते। मेरी तबियत मुंगौडी खाने को चाहती है। दो चपाती और मुंगौडी किसी रोज़ खिला देना। **मुंशी पुत्तलाल** के

यहां की मुंगौडी मैंने बहुत खांई मगर अभी तुम्हारे यहां की नहीं खांई। **मेरी भी आमदोरफ्त रहा करेगी।** अब मैं जा रहा हूं। इत्मिनान रखो। अब तुम्हारे गुरु महाराज तुम्हारे पास आ रहे हैं। मेरी ड्यूटी अब ख़त्म हो गई।

इरशाद हज़रत पीर दस्त-गीर= मदन मोहन लाल अपनी हालत को मामूली न ख़्याल करें उनकी ज़ुबान में असर पैदा हो गया है। पंज लतायफ़ यानी नीचे के जुमला लतायफ़ और किसी क़दर सिर के मुक़ामात यक्साँ हालत में हो गये हैं। **दिल** खुल गया है। आज से भंडारे तक तुम्हारे बाल बच्चों वग़ैरह और घर की मुहाफ़ज़त (यानी defence) उन के सुपुर्द की गई। ये काम बराबर करते रहें। बार-बार कहने की ज़रूरत नहीं। तुमने बाबू मदन मोहन लाल को अल्मे रूया में कुतुब-उल-अक़्ताब की हालत से तवज्जो दी थी। मैंने तुमको वहीं पर रोक दिया था। असरात पड़ चुके हैं। तुम्हारी तवज्जो क़भी ख़ाली नहीं जाएगी। एहतियात रखो। लिहाज़ा मेरी भी मर्ज़ी है कि इस मुक़ाम को खोल दूं और इसका मैंने वायदा भी किया है। पिछली तहरीर मुलाहज़ा हो।

(मदन मोहन लाल पर कैफ़ियत तारी हुई)।

अगर दीगर ख़ुल्फ़ा तुम्हारी पैरवी करते तो क्या अजब है कि कभी न कभी इस हालत को पहुंच जाते।

बाबू मदन मोहन लाल की सिकन्द्राबाद या ऐटा या किसी और भंडारे में सिवाए फ़तेहगढ़, ता= सदूरे हुक्म सानी, जाने की ज़रूरत नहीं है।

मैं दुआ देता हूं कि वो (बाबू मदन मोहन लाल) खुश रहें। उनकी मुश्किलें आसान हों, और सितारे की तरह चमकें। डाक्टर श्री किशन लाल शुतरे बेमुहार हो रहे हैं।

डाक्टर चतुभुर्ज सहाय को मैंने कस दिया है। ये उनकी बदतमीज़ी की सज़ा है। मेरी **औलाद** में ऐसे लोग भर गए हैं जिनमें से चंद को गन्दे अंडों की मिसाल दी जा सकती है। जिसे मैंने **बड़ाई** दी है, वो **बड़ा** है। और वो उन्हीं का भाई है। **नन्हे** के लिए लोगों का कभी ऐसा ख़्याल पैदा नहीं हुआ। किसी ने उनको मजबूरन छोडा। कोई घुड़कियाँ खा कर बैठे। **रूहानियत** में उम्र का तक़ाज़ा नहीं होता। सबसे **छोटा** भी सबसे **बड़ा हो सकता** है। मगर मैं कहूं तो किस से कहूं। सब अपना-अपना **नफ़्स** लिये बैठे हैं कोई **क़ाबलियत** में चोर है, कोई अपनी तादाद देख कर खुश हो रहा है। **असलियत** से सब बेबहरा हैं। तुम्हारा ठीक ख़्याल है कि इसका मज़ा अभी तक किसी ने चखा

ही नही। मैं अपने **ख़लीफ़ों** की मिसाल बिस्तस्ना **बाबू मदन मोहन लाल** यूं देता हूं कि जैसे बच्चे खिलोनों से खेलते हैं, और उसे देख कर ख़ुश होते हैं। अपने आप को **वैरागी** और **त्यागी** सब समझते हैं, मगर उन में से वाक़ई तौर पर कोई नहीं है। इसके **इक़्तसाबात** उनको वक़्तन फ़ौक़तन जारी करना पड़ेंगे। मेरी आरज़ू थी कि मेरे ख़लीफ़ा पहले दुरूस्त हो जाते और तुम्हारे काम में मदद्गार बनते। नतीजा बरअक्स हो रहा है। अगर मैं अपनी ज़िंदगी में तुम को खोल देता और सज्जादा नशीनी का ऐलान कर देता तो भी यह लोग यानी ख़लीफ़ा अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलहदा ही बनाते। उन्होंने यह नहीं समझा कि मैंने उन लोगों को ज़रूरतन ऐसा किया था। मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) की हिदायात का मुझ पर बड़ा असर था। और मैं इस जल्दी में वो मुक़ामात जो एक ख़लीफ़ा के लिए ज़रूरी हैं; तय न करा सका। नतीजा सामने है। और जो मुक़ामात मैंने तय कराये थे उसमें **नन्हे** ने कमी ही की। कोई इज़ाफ़ा नहीं किया।

नन्हे की सौ पुश्त तक कोई सज्जादानशीन नहीं होगा। जूतियां चटख़ाने वाले ही ज़्यादा होंगे। एक को ज़रूर मैंने अपनाया था वो भी जहां के तहां रहेंगे। मुराद बाबू ब्रजमोहन लाल। **डाक्टर श्री किशन लाल** और **चतुभुर्ज सहाय** को अपनी तवज्जो में ले लो। सज़ा काफ़ी हो चुकी।

5.8.1944

भोलानाथ को तालीम देना शुरू कर दो। फिर भी तुम्हारा मुलाज़िम है। डाक्टर सहाब जयपुर की बेहतर हालत है। उनको ज़रा आगे को बढ़ा दो। तुमसे यह शख़्स (भोलानाथ) उन्सियत भी रखता है इसलिए मेरा यह ख़्याल पैदा हुआ। मगर है पूरा लठ्ठ और देहाती। रामेशर को मैंने अभी अपना मान लिया था। रूहानियत उनमें क़तई नहीं रही। अगर वो तवज्जो किसी को दें तो असर खराब पड़ेगा। उन लोगों (कानपुर वालों) का Impression काम करता है। यह Mystery है। इसको बताना नहीं चाहता।

इरशाद जनाब मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) (अलफ़ाज़ याद नहीं रहे)। मैंने उनको (नन्हे) खिलोना बना कर रखा। उन्होंने ख़ूब खेल खिलाऐ। तुम जिसको बनाओ, अच्छे लफ़्ज़ों से याद करना।

इरशादात हज़रत क़िब्ला= मैं तुमको अपना दोस्त समझता हूं तुम भी मुझे अपना

दोस्त समझो। दोनों का बराबर का दर्जा है। इसका मतलब यह है कि दोनों में इश्क़ बराबर हो गया। जितना तुम मुझे चाहते हो उससे ज़्यादा मैं तुम्हें चाहता हूं।

मिसरा= "खूब निपटेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो"। तुम्हारी वुक़अत मेरे दिल से कोई पूछे। हमारे हज़रत क़िब्ला (रहम0) भी तुम्हारे पास आने लगे हैं। अब तहारत और भी लाज़मी हो गई। मैं तो अपनी ग़रीबी का मज़ा चखे हुए था, और हज़रत ने एक रईस तबियत पाई है। तुम्हारे ठाठ रईसाना चाहता हूं। इसलिए चांदी के बर्तनों के लिए कहा था। मैंने तुम्हें दोनों दौलत दी हैं। मैंने तुम्हारे लिए चांदी के बर्तनों के Set के Set तैयार करके रखे हैं; ज़रूरत पर तुमको मिलेंगे।

फ़रमाया=

वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां,
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है।

इससे पहले फ़रमाया था कि तुम चांदी के बर्तनों में खाना, और उनकी हिफ़ाज़त और झाड़पूँछ तुम्हारी बीबी के ज़िम्मे रहेगी।

मैंने अर्ज़ किया कि मैंने चांदी के बर्तनों में खा लिया, और आने वालों के लिए यह बर्तन कैसे हो सकेंगे?

इस पर मज़कूराबाला इरशाद हुआ।

मैंने तुमको बैअत करने की इजाज़त उस मुक़ाम से दी जो किसी को नसीब नहीं। तुममें यह ताक़त है कि तुम एक सैकेंड में उस मुक़ाम पर पहुंचा सकते हो जो तुम्हारी हालत ही है। एक सैकेंड में वस्ल करा सकते हो। मगर ऐसा करने की मुमानियत है। तुममें सब शक्तियां मौजूद हैं। मतलब उन शक्तियों से था जिनसे मौजज़े सरज़द होते हैं। मगर अभी खोली नहीं है। वक़्त अनक़रीब है। बहुत जल्द खोली जावेंगी। यह उस सवाल का जवाब था कि मैंने अर्ज़ किया था कि ग़ौसा-उल-आज़म के दर्जे पर बहुत शक्तियां मौजूद होती हैं।

यह शब्द दो-तीन जगह प्रयोग में आया है। यह नहीं मालूम कि लाला जी साहब ने "मुतनब्बी" (Warning Administrator) या "मुतबन्नी" (Adopted son), कौन सा शब्द प्रयोग किया था।

जो तुमसे मोहब्बत रखेगा उस को मैं मालामाल कर दूंगा। तुमसे सब पाबन्दियां छुड़ा चुका हूं।

6.8.1944

भंडारे में इस तरह से ऐलान होगा कि **"लाला जी ने बाबू रामचन्द्र शाहजहांपुरी को अपना सज्जादा नशीन और जानशीन मुक़र्रर किया है और फ़रमाया है कि जो लोग मुझसे मोहब्बत रखते हैं वो उनसे मोहब्बत करें। अब उन लोगों का इसी में भला है। जो उनसे मोहब्बत करेगा मैं उसको मालामाल और भरपूर कर दूंगा। और इसके ख़िलाफ़ जो होगा वो मुझसे फ़ायदा नहीं उठा सकता।"**

हिदायत

यह तहरीर करके *मुतनब्बी (डाक्टर कृष्ण स्वरूप सहाब जयपुर) को दे दिया जावे कि वो लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सुना देवें। वो **जग्गू** से कह देवें कि इसमें तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतरी है। और अपने पुराने तर्जुबे से ख़ुद भी अन्दाज़ा लगा लेवें। **रामचन्द्र** उनका साथ नहीं छोड़ सकते और न उनका उनसे बढ़ कर कोई दोस्त हो सकता है। जग्गू की **मां (जनाबा बड़ी बुआ साहिबा)** से सिर्फ़ इत्तला की ज़रूरत है। ऐलान मुतनब्बी (डाक्टर साहब) करेंगे। अगर वो (जग्गू की मां) अपनी तरफ़ से कुछ इज़ाफ़ा करना चाहें तो कर सकती हैं मगर शर्त यह है कि उन अलफ़ाज़ से तुम्हारी (R.C.) बेहतरी हो। ये ख़बर आम लोगों को एक दम से दी जावेगी। इससे पेश्तर इस क़िस्म का कोई जो ज़िक्र अज़कार नहीं होगा; न ऐसे अलफ़ाज़ कहे जाऐंगे जिससे उनको किसी क़िस्म का शुबाह मालूम हो और वो अपने नफ़्स को काम में लावें। इन अलफ़ाज़ में जादू का असर होगा। और यह मैं यक़ीन दिलाता हूं। ऐलान के वक़्त तुम इन अलफ़ाज़ों को लोगों के दिलों में घुसेड़ देना। मुझे अभी तक फ़ुरसत ही नहीं मिल रही है कि जो इस काम के लिए मुख़तिब हूं। जितनी फ़ुरसत करता हूं उतना ही काम आ जाता है।

मृगछाला पर बैठने की मैंने तुम्हें इजाज़त दे दी है। जहां बैठो, डाल लिया करो। हो सके तो बाबू मदन मोहन लाल के लिए एक मृगछाला का इंतज़ाम कर देना। वो

भी कुतुब हैं। **शेर** की खाल पर बैठना सिर्फ़ जलाली फ़क़ीरों के लिए है। **वजह=** जिस वक़्त कि वृत्तियाँ अंदरमुखी हो जाऐं, यानी जो बाहर देखता है अंदर देखने लगे, तब बैठना चाहिए। इससे पेश्तर बैठना सब ढ़ोंग है।

7.8.44

यह तरीक़ा अच्छा है। बाबू **मदन मोहन लाल** को बात दो और इसको रायज कर दो। **तरीक़ा=** तवज्जो किसी लतीफ़े पर ख़्वाह कहीं से दो, लेकिन **Suggestion** अपने दिमाग़ से करते और हालत देखते रहो।

आपस में बातचीत हो रही थी और ज़िक्र यह था कि बुज़ुर्ग लोग देवता होकर वापस आऐंगे। फ़रमाया= बुज़ुर्गों की वापसी नहीं होती। उनके **(नन्हे)** के गुनाह कभी माफ़ नहीं होगें।

8.8.44

तुम्हारी माद्दी अक़्ल नहीं है। तुम अकसर माद्दी-माद्दी कहा करते हो। जब तक माद्दा ख़त्म नहीं हो जाता तब तक रूहानियत में आदमी भरपूर नहीं होता। सबसे पहले इसी को ख़त्म किया गया। **अवतारों** का **कारण** भी मिट जाता है। वो बराहे-रास्त आते हैं और चले जाते हैं। लोग जब उनका आकार बांध कर सामने लाते हैं तो उनका अक़ीदा जब बहुत ज़बरदस्त हो जाता है, तब अपने क़ायम किए हुऐ आकार में एक तरह की ज़िंदगी महसूस करता है और उसकी प्रतिष्ठा क़ायम रखने के लिए ज़ात से एक लहर उस आकार में समा जाती है। यह उन्हीं के ख़्याल का असर है कि अवतार चलते-फिरते नज़र आते हैं। मेरे अवतार जहां-जहां भी हुए हैं सबके कारण मौजूद हैं। मगर उनकी शक्लें तबदील हो गई हैं। तुम जब मेरा ख़्याल किया करो तो आकार न बांधा करो। **जब तुमको कोई काम करना हुआ करे तब वह बात तुम कारण में पेबस्त कर दिया करो। और रूह को Suggestion दे दिया कि ऐसा ही होगा।** पर उसमें तेज़ी बढ़ जाएगी। बाबू **मदन मोहन लाल** अब अच्छी हालत में हैं। उन की कमज़ोरियां दूर हो गईं। **लताफ़त में पैरते जाएं, और फ़ायदा पहुंचाए जाएं। उनकी ख़िदमात का सिला अब मिला।** मतलब यह कि लताफ़त का ख़्याल रखें और तबियत में कसाफ़त

न आने दें। ये चीज़ इस क़दर बढ़ जाती है कि तमाम में फैल जाती है। देखो मैं तुम्हें एक बात बताऊं।

"मैंने अर्ज़ किया कि फरमाइऐ?"

फ़रमाया= कि अपनी तरफ देखो। **असल ज़ात** तुम्हारे चारों तरफ घेरा किये हुए है।

"मैंने अर्ज़ किया कि बेशक है।"

फ़रमाया= कि बात समझ में आ गई।

"अर्ज़ किया कि नहीं।"

फ़रमाया= कि तुम्हारी **असल ज़ात** में जिसमें वस्ल हो चुका है लय अवस्था शुरू हो गई। यह मुक़ाम ऐसा है कि किसी की समझ में नहीं आ सकता और कोई यक़ीन भी नहीं करेगा। **इसलिए कि यह मेरी ही ईजाद है।**

नोट= मैं और बाबू रामचन्द्र साहब बातचीत कर रहे थे। मैंने कहा कि यह मेरी ईजाद है कि हज़रत क़िब्ला इस तरह से बाद विसाल तालीम फ़रमा रहे हैं।

फ़रमाया= यह बात जो बाबू मदन मोहन लाल ने फ़रमाई, वाक़ई स्पेशल बात है। मेरे बुज़ुर्ग बताने को हर वक़्त तैयार रहे। मैंने इस मामले में उनसे **आगे** क़दम रखा। और यह ऐसा काम किया है कि लोगों के दिमाग़ में नहीं आएगा। अगर जिस्म होता तो अज़ खुद लिख देता। फिर फ़रमाया= उनकी **(मदन मोहन लाल)** हालत अच्छी है, **खुशख़बरी दे दो। अब पिछली आदत छोड़ दे। पिछली आदत से मेरी मुराद यह है, कम हिम्मती, ख़ासतौर व ग़ुस्सा। दूसरों के दिल लुभाने की आदत डालें। ज़ब्त से काम लें। लद्दपन जाता रहा है। अगर मेरा कहना मानेंगे तो और तरक़्क़ी होगी। वैसे तो मैं उनका बाप हूं, मुझे सब कुछ बरदाश्त करना पड़ेगा। मगर अफ़सोस ज़रूर होगा। बाबू रामचन्द्र को तुम अपना समझो। मैं तो समझ ही चुका हूं।**

मदन मोहन लाल से ख़िताब फरमाया= **इनका (R.C.) डंका बजेगा। मैं अभी कुछ इज़हार करना नहीं चाहता। अभी मेरे दिल में है। वक़्त पर सब रोशन हो जाएगा। मैं यक़ीन दिलाता हूं कि इसकी तरक़्क़ी का कुछ ठिकाना नहीं। अभी इसकी उम्र बहुत बाक़ी है। मैंने इसको तीस साल की उम्र पर मुकम्मिल कर दिया था। वो लोग मुबारक़**

हैं जो इनसे फ़ायदा उठा लें, वरना इनके लिए भी लोग रोयेंगे जैसे कि मेरे लिये लोग रोते हैं। इनका अंदाज़ मैंने क़ायम रखा है। इससे मुमकिन है कि लोग धोखा खा जायें और मेरी हालत को न समझ सकें। मैंने इनमें सिरमू कमी नहीं छोड़ी है। अगर इस बात पर यक़ीन न हो तो लोग आगे चल कर देख लें। (नोटः- यह मज़मून भंडारे में पढ़ा जायेगा)।

यह बाज़ओक़ात मुझ से भी ज़िद कर बैठते हैं। मैं इसको अंदाज़े माशूक़ाना समझता हूं और यह बात मैं उनसे अलहदा भी करना नहीं चाहता। इनकी नेचर इस क़दर पेचीदा थी कि मुझको बहुत दिनों बाद पता लगा कि यह शख़्स मेरी **सज्जादा नशीनी के** क़ाबिल है। मैंने अपने कश्फ़ को **क़िब्ला मौलाना साहब (रहम0)** से Tally किया। जब सही उतर गया तब तवज्जो की। मैं इनकी सादालोही से ख़ुश था और उसके बाद और बहुत से मौक़े ख़ुश होने के लिए मिले। तुमको (मदन) एक बात सुन कर और भी ताज्जुब होगा कि **इनको सब बुज़ुर्ग अपना ही समझ रहे हैं।**

मुताल्लिक़ा **मदन मोहन लाल=** मदन मोहन लाल सज्जादानशीनी के लायक़ नहीं थे। जिस बात के लायक़ थे वो बात पैदा हो गई। उनका दिमाग़ बहुत कमज़ोर था। वो एक वक़्त में कई काम नहीं कर सकते थे और न सब तरफ़ नज़र रख सकते थे। अगर उनको Destruction का हुक्म दिया जाता तो वो उसी पेचोताब में रहते और अपनी तबाअ आज़मायी भी करते। और अगर रहम का हुक्म होता तो उसी में लग जाते। गर्ज़े कि जो बात उनके सुपुर्द करी जाती, उसका **mania** हो जाता है। लठबाज़ों की सोहबत रही थी।

रामचन्द्र ने हमेशा दिमाग़ **develop** करने की कोशिश की, उसी से उनको शौक़ रहा। बीमारी के असरात ने उनके दिमाग़ को ठेस ज़रूर पहुंचाई। यह संस्कार थे, इसलिए मजबूरी थी। दिमाग़ कमज़ोर ज़रूर है मगर **ख़ूब-रसा** है। जो बारीक बात यह सोच सकता है, कोई नहीं सोच सकता। और मुझको भी उनसे मदद मिलती है। **पासे-अदब** से मुझे किसी बात का Suggestion नहीं करता। मगर मैं समझ कर वहीं काम करना शुरू कर देता हूं। मैं समझता हूं कि जिस दिमाग़ और पाए का आदमी मुझे मिला है दूसरे को मिलना दुश्वार है। उनके किसी ऐब को देखो, उसमें हुनर छुपा हुआ पाओगे। यह बात **कमयाब** है। जितना मैंने उसको ताड़ा है और कोई नहीं ताड़ सका। उनकी किसी ने क़द्र ही नहीं की। ज़्यादातर लोगों ने उनको काम-धेन (काम धेनु)

गऊ समझ लिया था। इसलिए ज़ाहिरा मोहब्बत थी। **जग्गू** भी उनसे दिली मोहब्बत नहीं रखते। **डाक्टर श्री किशन लाल** उनको अपनी Subordination में रखना चाहते थे। वो इस वजह से कि इनको भाडे का टट्टू बनाऊँगा। हालत इनसे दरियाफ़्त की और सिक्का अपना जमाया। अगर मदद की भी ज़रूरत हुई तो ख़ामोशी से कोठरी में बैठकर। मगर मैं इस बात से इंतहाई ख़ुश हुआ और ख़ूब पसंद आया कि तुमने इन बातों का ख़्याल भी नहीं किया। तुम्हारी हालत ऐसी थी जैसी किताबों में शेर के बच्चे का हाल पढ़ा होगा कि जब तक उसे यह ख़्याल न दिलाया गया, वो अपनी असलियत से बहरावर नहीं हुआ। तुम्हारा और कहीं जाने का इत्तफ़ाक़ ही नहीं पड़ा। तुम जहां जाते वो तुमको अपना औज़ार बनाता। अगर सच पूछो तो तुम्हें बेवकूफ़ समझ रखा था। **डाक्टर श्री किशन लाल** को यह बात मालूम थी कि **रामचन्द्र हां** के साथ में असर पैदा कर सकता है। और जो कैफ़ियत चाहे फ़ौरन पैदा हो सकती है। मैं यह बातें देख कर हंसता था और तुम्हारी बेवकूफ़ी पर रहम आता था। और ख़ुश भी होता था। यह एक क़िस्म की **sacrifice** थी जो तुमने की। इसकी कोई मिसाल नहीं मिलेगी। **दूसरी** बात यह है कि तुमने अपने आप से सबको बड़ा समझा। किसी-किसी वक़्त जब मोहब्बत में ग़र्क़ हो जाते थे तो ताव ज़रूर आ जाता था। मगर फिर भी इतना लिहाज़ रहता था कि अपने से बड़ों को अपनी क़ाबलियत नहीं दिखलाना चाहिए। और तुम यह सोच कर दब जाते थे। तुमने **डाक्टर श्री किशन लाल** की हालत से धोखा ज़रूर खाया और वहां पर तुम्हारा कश्फ़ ग़लत हो गया। उसकी वजह यह थी कि तुमने उनको मेरा **मुराद** समझा था और यह यक़ीन था कि उनसे ज़्यादा मुझ से कोई मोहब्बत नहीं कर सकता। बाक़ी कश्फ़ तुम्हें सब सही हुए।

मदन मोहन लाल अपने लिए ख़राब लफ़्ज़ न इस्तेमाल करें। ऐसी बात के इज़्हार के लिए ज़ैद, उम्र, बकर, बहुत से नाम हो सकते हैं।

बाबू ब्रजमोहन लाल ने अपने आप को मेरा सज्जादानशीन समझा और अब भी उनका यही ख़्याल है। तुम्हारे फूफा (मुंशी रघुवर दयाल) ने उसके इस ख़्याल को तक़वीयत दी। और उन्हें भी गुमराह कर दिया। उनको मेरी सज्जादानशीनी का कोई हक़ न था और मलऊन बातस्वीर (नन्हे) के लिए मैं क्या कहुं। मलून बातस्वीर से मेरा मतलब मलऊन Personified से है।

और मुंशी को तो मैं ऐसा समझता हूं कि जैसे कि बच्चे की पैदाईश के वक़्त

नाच कूद के लिये लोग आतें हैं और चंद टके लेकर रूख़सत होते हैं। उन पर अपने बाप का पूरा-पूरा असर है।

ज्योति को मैं चोर और उठाईगीरे के नाम से मनसूब करता हूं।

तुम जहां गये सब ने अपना उल्लू ही सीधा करना चाहा। बाक़ई तुमसे कोई मोहब्बत नहीं करता था। और अगर कोई कैफ़ियत भी पैदा करता था तो उसमें उसके फ़ायदे का राज़ छुपा रहता था। कहीं पर तुमसे ऐसी ख़िदमत ली गई; मसलन बर्तनों का माँजना, चारपाईयों का बिछाना; हुक्का चिल्म भरवाना। इन सब का मतलब यह था कि लोग देखें कि ऐसे मालदार लोग हमारे यहां चिलमें भरते हैं। और यह देख कर ऐसा काम लेने वाले की अज़मत और बुर्ज़ुगी लोगों के दिलों में और भी मुनअक्कस हो जाए। तुमको मेरी ज़िंदगी के बाद किसी ने तुमको कुछ नहीं दिया बल्कि ख़राब करना चाहा। जिस **तवज्जो** की पसेपुश्त **फ़ायदे** का राज़ छुपा हुआ हो, वो तवज्जो क्या असर कर सकती है।

बाबू **ब्रजमोहन लाल** से तुमको मोहब्बत थी मगर उन्होंने भी यह हक़ अदा नहीं किया। और तुम यही कहते रहे कि मेरे लिए ख़ूब कर रहे हैं। वजह ऊपर तहरीर हो चुकी है। मैं सिर्फ़ बाबू **मदन मोहन लाल** की ज़ात को छोड़ता हूं। उन का ख़्याल हमेशा तुम्हारी तरक़्की का रहा। ये बर्तन का मंजबाना और ग़ुलामों के तरीक़े से तुमसे ख़िदमत लेना मुझको नागवार होती थी। और मैं उस वक़्त भी तुम्हारे साथ हर वक़्त रहता था। किसी वक़्त तुमको पता चल जाता था और बसा-औक़ात नहीं। मगर **अन्धों** को इस बात की तमीज़ भी नहीं हुई। और उन्होंने सब धान बाईस पसेरी के समझ लिए।

तुम्हें भी तालीम का काम करना है। ऐसी बातों का रवा न रखना। अगर तुम सच पूछो तो हमारे बिरादरे अज़ीज़ **(नन्हे)** तुम्हारे नमक ख़्वार थे मगर वो तुम्हारी ख़िदमात का भी सिला न दे सके। बाबू **ब्रजमोहन लाल** ने जो कुछ भी तुमसे उन्सियत बढ़ाई, वो मतलब से थी। वो यह चाहते थे कि उनके ख़्याल के मुताबिक़ अगर रामचन्द्र किसी लायक़ हो जाए, तो उसकी कैफ़ियत मुझी से मन्सूब की जाऐं।

मज़मून बग़रज़ भंडारा आईंदा

इस दुनिया में बेग़रज़ दोस्त कमियाब है। अगर कोई मुझसे पूछे तो गुरु से बढ़

कर कोई दोस्त शिष्य के लिए नहीं हो सकता। और जिस गुरु में यह बात नहीं है, वह गुरु कहलाने के लायक़ नहीं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जो मोहब्बत मुझसे हमारे क़िब्ला हज़रत ने की, उसकी मिसाल नहीं। और मैं अपने बारे में क्या कहुं। लोगों का तजुर्बा बता देगा। मेरी मोहब्बत की हालत ख़ुदा ही जानता था। मगर अफ़सोस किसी ने उसका बदल नहीं दिया। किसी शख़्स ने मुझसे खुली तबियत से मोहब्बत नहीं की। मैं समझता हूं कि यह मेरा ही क़सूर था। अब भी अगर लोग रुख़ करें तो भी यह बात नसीब हो सकती है। सुबह का भूला शाम को आ आये तो भूला नहीं कहलाता। वक़्त ज़रूर रायगाँ गया है। मगर जितना वक़्त रायगाँ गया है उतना ही इश्क़ और प्रेम पैदा कर लें तो **Make up** हो सकता है। लोगों ने कम हिम्मती का दामन इतना सख़्त पकड़ा है कि छोड़ने को जी नहीं चाहता। वजह यह है कि उनको मुआफ़िक़ आबोहवा नहीं मिली। ज़्यादातर जेबकतरों से साबक़ा रहा। ये किसी ने न चाहा कि मरी औलाद तरक़्क़ी करती और मेरा नाम, जैसा जो कुछ भी था, ज़िन्दा होता। मैं उन लोगों की क्या शिकायत करूं जिनसे इनको नुक़सान पहुंचा। मैं समझता हूं यह सब मेरी तक़दीर का करिश्मा था। मैं फिर कहता हूं कि सिवाय गुरु के कोई सच्चा दोस्त नहीं मिलेगा। उनको याद रखना चाहिए कि यह धोखा था जिसको कि असल समझ रखा था। अगर निगाहे ग़ौर से देखें तो उनको मालूम हो जाएगा कि टट्टी की आड़ में शिकार खेली गई और उनको गुमराह करने में और मुझसे अलहदा करने में, कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। जहां इस बात की मिसाल नहीं मिलेगी कि ख़राबियां हमारी सोसाइटी में कैसे दाखिल की गईं, वहां यह भी मिसाल नहीं मिलेगी कि मैंने इन खराबियों को दूर करने के लिए अपनी ज़िंदगी के बाद भी क्या-क्या कोशिशें कीं। मैंने सब ज़िम्मेवारियां अपने ऊपर लें लीं थीं। और उसी के निभाने की कोशिश की और उसी के वास्ते इंतज़ाम किया। हालाँकि इसमें ऐसे मादूदे चंद ऐसे थे जिनका मुझे जिम्मेवार होना चाहिए था, मगर ज़माने की नैरंगी और मेरी मोहब्बत और मुरव्वत ने मेरी अक़्ल पर परदे डाल दिये। उसको भुगत रहा हूं। मुझे इतनों में दो एक को छोड़ कर कोई मद्दगार मालूम नहीं होता। क्या तुम लोगों की यही ड्यूटी थी कि मुझ को फ़रामोश करके ग़ैर की वादी में क़दम रख देते। उन्होंने ऐसी वादी में क़दम रखा जहां सिवाय ख़सोख़ाशाक के कुछ नसीब न हुआ। बहुत से लोग ऐसी पुरखतर वादी में गये जहां की रेगिस्तानी हवा ने उनको अपने घर की याद भुला दी और अक्सर गुमराह हो गये। जिस जगह को उन्होंने सरसब्ज और शादाब समझा,

सिवाए कीचड़ और दलदल के कुछ न था। उन्होंने अभी वादिऐ ऐमन की सैर ही नहीं की; न उसके खुशगवार रास्ते देखे। न हवा की तरोताज़गी उनके अहसास में अभी तक आई; न खुशगवार चश्मों का पानी पिया। मैं यह समझता हूं कि उनको धोखा दिया गया। मगर जरा गौर तो करें, क्या यह बात वहदत के ख़िलाफ़ नहीं थी। क्या मुझको फ़रामोश कर देना दूसरों को दिल देना उनका फ़र्ज़ था। अब वक़्त आया है। मौक़े को हाथ से जाने न दें। मैं समझता हूं यह कुल बातें मैंने उनके गोशगुज़ार कर दी हैं। यह सब बातें उन्हीं के फ़ायदे के लिए हैं। अब भी वक़्त है। सिर्फ़ दिल के लगाव और रूख़ फेरने की ज़रूरत है। मैंने कोई दक़ीक़ा उनकी नई ज़िंदगी पैदा करने में उठा नहीं रखा। मैं समझता हूं कि रामचन्द्र का कहना फ़िलतबाअ (इधर-उधर की बातों में) में डाल दिया जायेगा और ऐसा करने के लिए सिर्फ़ चंद ही आदमी होंगे। मगर वो यह भी याद रखें कि जहां मैंने उसको (R.C.) दया और रहम की ताक़त अता की है, वहां उसको (R.C.) सख़्ती की भी इजाज़त दे दी है। वो जो कुछ करेगा मुझको मंजूर होगा। मैंने मज़मून को तूल इसलिए दिया है कि कोई बात रह न जावे, और हर बात अपने-अपने तरीक़े पर बार-बार आ जावे। और किसी की शकोशुबह बाक़ी न रहे। वरना आख़री इलाज मैंने जो सोचा है वो भी करूंगा।

मुमकिन है कि चंद लोगों के दिलों में यह ख़्याल पैदा हो कि यह प्रोपैगेन्डा है। ऐसा ख़्याल करने से बाज़ रहें। रामचन्द्र उनका ग़ुलाम नहीं है, न उसे रुपये-पैसे की तमन्ना है। दुनियावी इज़्ज़त व आबरू ख़ुदा ने उसको काफ़ी दी हैं। मैं समझता हूं कि इस जमायत में से बहुत से लोग उसको इस मज़मून में Compete न कर सकेंगे। अभी तक वो किसी का दस्ते-नगर नहीं रहा है। और न आगे होगा। इन मिसालों से जितने सवालात लोगों के दिलों में उठें, तोल लें, और सही रास्ते पर आ जावें। इससे ज़्यादा मैं कुछ कहना नहीं चाहता। सिर्फ़ यह मिसरा कहना चाहता हूं

"खारे सेहरा जब बढ़ा बालीदे नश्तर हो गया"। (अर्थात= मरू भूमि का कांटा जब बड़ा हो गया तो वह ज़र्राह (surgeon) का चाकू बन गया।) मुझको इस उसूल पर न आना पड़े। मैंने मज़मून को मुकम्मिल कर दिया।

लोगों यह भी ताज्जुब होगा कि मैं जिस्म छोड़ने के बाद ऐसा मज़मून कैसे लिखा रहा हूं। इसकी शहादत में, मैं रामचन्द्र को पेश करता हूं। तर्जुबा कर लें। मैं यह भी गोश-गुज़ार करना चाहता हूं कि मैं अज़ीज़ रामचन्द्र को अपनी ज़िंदगी में बना चुका

था। बवजूहात चंद दर चंद मुझको छुपाना पड़ा। लोगों के पास जितनी जांचें कि हो सकती हैं उनसे जांच लें और जिस तररके से चाहें अपना इत्मिनान कर लें। या अगर किसी बात का किसी शख़्स को ज़ोम हो तो उसको (R.C.) चैलेंज (challenge) करके देख सकते हैं। फ़क़त।

इस तहरीर का उन्वान यह होगा।

मज़मून मुताल्लिक़ा भंडारा जो हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब ने ख़ुद तहरीर कराया और पढ़ने के लिए ताकीद फ़रमाई।

जग्गू समझता है कि **ब्रजमोहन लाल** उनसे मोहब्बत करते हैं। मगर अब उन्हें सिवाय बीवी और बच्चों के किसी की मोहब्बत नहीं है। और उनका मक़सद अगर कुछ है तो उनसे पूरा भी नहीं हो सकता। अभी उनके पीर बाहयात हैं। जो चाहें वो ले लें। जिस वक़्त वो आलमे बक़ा की तरफ़ राही हो गए, उस वक़्त **ब्रजमोहन लाल** में यह ताक़त नहीं है कि उनको धुर तक पहुंचा सकें। मैंने उस वक़्त तुमको (R.C.) खोलना नहीं चाहा था। इसलिए उनकी रग़बत **बाबू ब्रजमोहन लाल** की तरफ़ कर दी थी। क्योंकि **नन्हें** से मैं पहले ही नाउम्मीद हो चुका था लिहाज़ा उनके बाद सिर्फ़ वो ही रह जाते थे। जिनके मैं बहेसियत बड़े भाई होने के सुपुर्द करता। **जग्गू** अगर वाक़ई अब तालीम हासिल करना चाहते हैं तो तुम से बेहतर उनको नहीं मिल सकता। **जग्गू** में मरदुम-शनासी नहीं है। उन्होंने तुम्हें समझने में ग़लती की।

9.8.1944

दरियाफ़्त किया= कि अगर कोई ऐसे शैदाई आप के मिल जायें जो आप ही से बैअत होना चाहें तो क्या मुमकिन है?

फ़रमाया= कि हां! मगर एक आध।

इजाज़त में हालत मुस्तहकम कर दी जाती है। बाबू मदन मोहन लाल में अब कोई **कमी** तो मालूम नहीं होती फ़क़त **आदत** का छोड़ना रहा। हालाँकि **दरिया** जिसमें शनावरी करना है बे-पायाँ है। अगर व्यवहार की जान (Attachment) खींच ली जाये तो दोनों की कैफ़ियत एक सी हो जाएगी।

मदन मोहन लाल के वालिद अच्छे हैं और दुआ दे रहे हैं।

फ़रमाया कि मौलाना साहब क़िब्ला (रहम0) के कपड़े जो रखे हुये हैं वो तुम ले लो; और मेरे कपड़े जो रखे हों, ले लो। कमअज़कम टोपी ज़रूर ले लेना। अगर उन लोगों को देने में कुछ ऐतराज़ हो तो मैं उसका बदल करूंगा।

तुमसे कोई मोहब्बत ही नहीं करता। **जग्गू** को तुमसे उन्सियत नहीं है। और यह माद्दा भी उन में कम है। बाक़ी सब (कानपुर वाले) मतलब के यार हैं। लोगों में **तमाअ** इस हद तक बढ़ी हुई है कि अगर अपनी तुम कुल दुनियावी दौलत दे दो तब भी **"हिलमन मज़ीद"** अर्थात= और लाओ (Bring more and more) का नारा लगाऐंगे। **दोज़ख़** तुम्हारे फूफा **(नन्हे)** को बुला रही है। **गढ़ा** तैयार हो चुका है। **दोज़ख़ एक ऐसा मुक़ाम है जहां अंधेरा ही अंधेरा है। हाथ को हाथ नहीं सूझता। उसमें रूहें जब डाली जाती हैं तो वह अपने ख़्यालात का ताँता लगा देती हैं। और उस जाल में फंस जाती हैं। वहां एक ऐसा माद्दा मौजूद है कि हर ख़्याल develop हो जाता है। एक ताक़त वहां भंवर की शक्ल में चक्कर देती रहती है। रूहें उसके दरमियान त्वाफ़ करती रहती हैं जिससे दिमाग़ी गरदिश शुरू हो जाती है और उस तकलीफ़ का अहसास वही कर सकता है। ख़ुदा बचाऐ।** इसका मैं तुम्हें नक़्शा भी दिखलाना नहीं चाहता। **मैं यह ताक़त तुम्हें अता करता हूं।**

मैंने ज़िंदगी में किसी पर यह ताक़त इस्तेमाल नहीं की, और न तुम करना। हालाँकि लोगों ने मुझको बहुत-बहुत दुख दिये। मैं अपनी ज़िंदगी में जुमला ताक़तों से भरपुर था।

डाक्टर चतुभुर्ज सहाय अपनी पुरानी रफ़्तार पर आ गए। उन्हें तादाद बढ़ाने से मतलब है। बला से रूहानियत हो या न हो। बस रूहानियत का देवता बन गए हैं। लोग पूजे जायें। और इस दौरान में उनका बहुत नुक़सान हुआ। ज़रा सी तुम्हारी निगाह पलट जाने पर उनकी वो कैफ़ियत हो गई जो सब (कानपुर वाले) मिलकर नहीं कर सके। और कैफ़ियत ज़्यादा कहने में नहीं आती। **फ़ैज़** का रास्ता बंद हो गया। मैं भी खामोश हूं। तुम्हारी General तवज्जो अब कुछ असर नहीं कर रही है। वजह यह है कि जो तुमने उनके साथ किया है अगर उसे हटाओ तो असर करे। इसकी मैं इजाज़त नहीं देता। **मदन मोहन लाल** की भी तवज्जो कुछ असर न करेगी। **डाक्टर श्री किशन लाल** अपने पुराने रवईये पर हैं। वो एक इंच नहीं हटे हैं। हालांकि लोगों का रुझान कम है और वो खुशामद से फाँसना चाहते हैं। नाम मेरा करते हैं और **गुराई**

अपनी क़ायम रखना चाहते हैं उनका मतलब चेला बनाने और तादाद बढ़ाने से है। गो वो मेहनत ज़रूर करते हैं और इस मेहनत से कुछ-न-कुछ फ़ायदा ज़रूर पहुंच जाता है। **अहमियत** अब तक नहीं छोड़ी। **इजाज़त इन दोनों की मुन्तक़ताअ है।** अब जब तुम इजाज़त दो तो उस ढ़ंग का बना लेना तब देना। अगर उनसे मना किया जाता है वो उनकी गुराई को ठेस लगती है। और वो मानने ही क्यों लगे। **कुल मादे का माद्दा बिगड़ गया। किस के लिए रोया जाए।**

सवाल मदन मोहन लाल बाबत ज़िक्र कारण शरीर मौरख़ा 8 अगस्त सन् 44ई० जब बार-बार जन्म होने पर हर एक का कारण अलहदा-अलहदा मौजूद रहता है तो क्या आत्मा भी हर कारण में जुदा-जुदा रहती है?

जवाब में दृश्य दिखा दिया गया। फ़रमाया बहुत से राज़े क़ुदरत जिस्म छोड़ने पर मालूम होते हैं, और ऐसे भी राज़ हैं जिनका अनुभव कराना भी मुश्किल है।

तुम्हारे फूफा **(नन्हे)** तुम्हें नीचे उतारने की कोशिश करते थे। यह उनके बूते का रोग नहीं था। तुम यह समझते थे कि सतसंग कराया जा रहा है। तुम्हारी तारीफ कभी किसी के सामने नहीं की गई। मुमकिन है कि बाबू **मदन मोहन लाल** के ख़ुश करने को कभी कुछ कह दिया गया हो। बाबू मदन मोहन लाल से मैंने एक मरतबा कहा था कि ये (R.C.) **चिराग़े ख़ानदान होगा** उन्होंने अपनी नेक नियती से इन हज़रत **(नन्हे)** से भी कह मारा। ये बात तुम्हारे लिए और भी मुज़िर हुई मगर चूंकि यह **ख़ुदाई अलफ़ाज़** थे इसलिए ऐसा ही होकर रहा। जितनी अज़ियतें तुम्हारे लिए उनके इमकान में थीं, कोई नहीं छोड़ी। तुम्हारे लिए जो बुलाने का पैग़ाम आता था तो उसमें तुम्हारी हालत देखने का राज़ मख़्फ़ी होता था। वाक़ई तुम्हारी जो कैफ़ियत थी वो उनके शानों-गुमान में भी नहीं आ सकती थी। इसलिए कि उनकी **(नन्हे बग़ैरह)** पहुंच इस हद तक न थी। तुम्हारी तारीफ़ करने को जी चाहता है। जो तुम्हारी तारीफ़ का, जो मैंने की है , अगर मुज़हका उडाऐंगे तो मैं यक़ीन दिलाता हूं कि वो असलियत खो बैठेंगे। **बाबू मदन मोहन लाल** से कह दो कि वो इतमिनान रखें। और अगर कहीं तुम्हारी निगाह पलट गई तो मुझे भी अपनी निगाह फेरना पड़ेगी। नतीजा ख़ुद-ब-ख़ुद रोशन हो जाएगा। अस्लियत छुपी नहीं रहती।

हंस कर फ़रमाया= कहो तुम्हें कैसा कोरा साफ़ बचा कर लाया हूं। एक तुम्हारी भी ग़लती थी कि जब तुम मुझे सब कुछ समझते थे तो दूसरे से रुजूअ क्यों हुए। ये

ग़लती तुम्हारी माफ़ कर दी गई। इस बात की तुम्हारी सादालोही ज़िम्मेदार थी। अलावा इसके तुम किसी में बुराई नहीं देखते थे। दोस्त दुश्मन की तमीज़ तम्हें न थी और यह तुम्हारी Nature है। **इत्तहाद** के माने मेल के हैं। अपनी रूह का दूसरे से सम्बंध क़ायम करके तब्बजो देने को **इत्तहादी तवज्जो** कहते हैं। इससे अपनी ताक़त **इल्क़ा** कर दी जाती है इस तवज्जो के देने की **मुमानियत** है। बसवाल इसके कि कहीं पर दी जाती है?

इसका जवाब यह है कि जब तबियत ख़ुद कह दे तब **इत्तहादी तवज्जो** की ज़रूरत है। कुछ लोग क़ाबलियत में ऐसे चूर हो रहे हैं कि लफ़्ज़ों के नए मानी पहनाने में फ़ख़ समझते हैं। इसलिए कि वह समझते हैं कि सुनने वालों की इतनी क़ाबलियत नहीं है। चूँकि सामईन का अक़ीदा उनके (बिरज़ू) बड़प्पन पर बंधा हुआ है इसलिए की उनके कहने को आयत व हदीस समझते हैं। क्योंकि बज़ाते खुद उन बेचारों को समझने की क़ाबलियत नहीं होती। मैंने यह दृश्य तुमको दिखला दिया।

तुम्हारा आकार वहां पर क़ायम है। अगर उसको हटा दिया जाए तो ज़िंदगी से अभी हाथ धो बैठोगे। अपनी लय अवस्था जो मैंने तुमको दिखलाई थी, तुम को अहसास होता था कि तुम भी मेरे साथ लय हो चुके हो। ये दिखलाने का मेरा एक खास मतलब था। तुम्हारी लय अवस्था के साथ फैलाव शुरू हो गया है। इस कैफ़ियत को देख कर, गो कैफ़ियत लफ़्ज़ ग़लत है, हर शख़्स का जी निकलने को चाहता है। जिसको खुदा यह हालत नसीब करे। अगर मुझे ऐसा तुम्हारा रहनुमा या रहबर न होता तो इस वक़्त तुम **कफ़से-अंसरी से परवाज़ कर गये होते। मुझ पर भी यह हालत गुज़र चुकी है।**

नोटः- कुछ देर के बाद वो हालत दब गई। जिस्म छोड़ने का ख़्याल हज़रत क़िब्ला ने हटा दिया। सिर्फ़ मज़े का अहसास रह गया।

10.8.1944

हमारे क़िब्ला हज़रत ने फ़रमाया कि तुम्हें जो कुछ मांगना हो मुझसे मांग लो।

अर्ज़ किया कि "अपने पीर, अपने ख़ुदा से मांगने में कोई हर्ज नहीं। मगर हज़ूरे अक़्दस ने सब कुछ दे दिया, और खुद भी मेरे अंदर समा गए। अब कौन सी बात

रह गई जो मांगू?"

इरशाद हुआ= कि **खुदा मुबारक करे**, मैंने तुम्हें क्या पाया सब कुछ पाया। तुम मेरी याद को ताज़ा करोगे। इस वक़्त मेरी मोहब्बत जोश पर थी। इसके ज़ेरे असर मैंने तुमसे यह कहा था। **मैंने तुम्हें सब कुछ दिया। तुम भी मुझे सब कुछ दे बैठे।** तुमने जो कुछ दिया वो मेरे पास है, और मैंने जो कुछ दिया वो तुम्हारे पास है। यह एक फ़िलासफ़ी है कि जब इंसान सब कुछ दे बैठता है तो जिसे सब कुछ देता है, उसका सब कुछ उसमें समा जाता है। जितनी कमी तालिब के देने में होती है, उतनी ही मालिक की तरफ़ से। दुनिया बदले का घर है। इस हाथ दे उस हाथ ले। मुझे जिस शख़्स ने जितना दिया मैंने उसका एवज़ दे दिया। उनका उधार नहीं रखा। मगर देने वाले तुम्हारी जमायत में बहुत कम हुए और लेने वालों की तादाद कसीर है। **मैंने सब को अपना समझा, मगर मुझे किसी ने अपना न समझा।** इसमें मुस्तस्नियात भी हैं। उनको छोड़ता हूं। मुझको चरस और गांजे के यार बहुत मिले। **असल का मुतलाशी शाज़ोनादर।** जब कहीं उनको मुआफ़िक़ हवा, उनके ख़्याल के मुआफ़िक मिल गई, बस फिर क्या था उधर को खिसक गये। उन्हें महज़ नशे से सरोकार था। इससे ज़्यादा उनकी ख़्वाहिश नहीं।

ये हालाते सोसाइटी हैं जिनको तुम्हें भुगतना है। इस वक़्त उसकी हालत बहुत बिगड़ी हुई है। रुपये से ब्रहविद्या अकसर लोग ख़रीदना चाहते हैं। और उनको सिखलाया भी ऐसा ही गया है। ख़ास-उल-ख़ास को छोड़ता हूं।

लोगों में पीर बनने की ख़्वाहिश पैदा हो गई है, गो सही मायनों में अभी मुरीद भी नहीं बने। इस ख़्वाहिश की इब्तदा **कानपुर** से हुई है।

इजाज़त ईसाईयों के सर्टिफ़िकेट की तरह से ख़रीदी जाने लगी। रिश्वतें चलने लगीं। कारे-खैर के लिए ऐजेंट भी मुक़र्रर हो गये। दुआ की क़ीमत अदा होने लगी। इसकी ज़िम्मेवारी किसी हद तक **मौलाना अबदुल ग़नी ख़ां साहब** पर भी है। मुझे आख़िर उनके लिए साफ़ कहना ही पड़ा। ज़रूरत सिवाए **खुदा** के कोई पूरी नहीं करता। इसका लिहाज़ नहीं रखा गया। हलवा पूरी की ख़्वाहिश रही। माँड पीने को कोई आमादा न हुआ। क्या यह असलियत थी जो हमारी सोसाईटी में फैलाई गई। इसमें ख़तावार उन शख़्सों को ठहराता हूं जिन्होंने बुनियाद डाली। गरज़मंद बावला होता है। इस लालच में सब कुछ कर जाता है। तुलबान क़ाबिले माफ़ी हैं। मगर वो

शख़्स क़ाबिले माफ़ी नहीं, जो रूहानियत के अधिष्ठाता बने हुए थे। ये एक नई बात थी जो मैंने तुमको लिखा दी। आगे जो होगी मैं बतलाता रहूंगा। यह एक ऐसी लहर थी जो सब के दिलों में समा गई।

तुम्हारे Suggestion पर मरहबा। ऐसी ही करो कामयाबी होगी।

Suggestion यह था कि इस लहर को नूर से भर दिया जावे ताकि रंगत बदल जाए।

वक़्त 9 (नौ) बजे रात के, मैं (मदन मोहन) भाई रामचन्द्र के पास मराक़बे में बैठा। हज़रत क़िब्ला मौजूद थे। मराक़बे में एक अजीब हालत तारी हुई।

बाद मराक़बा हज़रत क़िब्ला ने फ़रमाया= इनकी (मदन मोहन) इस वक़्त एक चीज़ खुल गई। पहले उनसे हालत पूछो; बाद को मैं बताऊंगा।

मदन मोहन ने अपनी हालत अर्ज़ की।

फ़रमाया= भंडार में जहां से कुल ताक़तें मिलती हैं, ये (मदन मोहन) दाख़िल हो गए। मैं मुबारक बाद देता हूं। लोगों ने इस बेहतरीन मौक़े को खो दिया, वरना जाने क्या से क्या हो जाते। इस वक़्त तुम्हें (R.C.) जुमला ताक़तों का उभार है। तुम्हारी भी ऐसी हालत नहीं रहेगी। उनकी (मदन मोहन लाल) माबूदियत में लय-अवस्था शुरू हो गई।

बाबू ब्रजमोहन लाल की हालत उलिया से गिर कर अब कुबरा की रह गई। उनके कर्मों से उनकी हालत गिर गई। ज़िंदगी में ही मेरा हर अन्सर ज़ात में लय हो चुका है।

11.8.1944

मदन मोहन लाल उस मुक़ाम पर लय-अवस्था प्राप्त करके ऊपर को जा रहे हैं। इस दर्जे पर अब तक कोई (मुरीदैन में से) नहीं पहुंचा।

नोट= जब ऐसे ज़िक्रात हुआ करें तो (R.C.) अपने आप को मुस्तस्ना समझा करो। तुम्हारा (R.C.) कोई दर्जा बाक़ी नहीं है।

शुबह की आदत छोड़ो; ये मुज़िर है। वो हालत जल्द आने वाली है कि तुम्हारी

शिकायत रफ़ा हो जाएगी। तुम ज़ात में लय हो रहे हो। और तुम्हारी वह कैफ़ियत पैदा हो रही है कि जैसी मैंने रात अपनी बतलाई थी। यानी हर ज़र्रा पूरे तौर से ज़ात में लय था। तुममें जो तेज़ी पैदा हो जाती है यह उसके इत्तसाल का नतीजा है।

इस हालत को मैंने रोकना चाहा मगर यह मेरे बूते का रोग नहीं मालूम देता। मजबूरी हायल है। बूते से मेरा मतलब यह है कि मैं बेक़ाबू हो रहा हूं। तुम्हारी याद मुझे बैचेन रखती है, गो इससे मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होती। मैं इस बात से तुम्हें मना नहीं करता। इससे तुम्हारे दिल को ठेस लगेगी। यह तुम्हारी (R.C.) तमाम उम्र का अभ्यास है और इससे तुम हट भी नहीं सकते। और इसी से तुम्हारा काम बना है। मुझमें और क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं। मेरी याद उन्हीं की याद है। वो न होते तो तुम्हारा भी वजूद न होता। एक नई बात जो तुमने की थी आज मैं तुम्हें बताता हूं।

जब तुम्हारा सुलतान-उल-अज़कार शुरू हुआ था तो तुमने उसका रूख मेरी तरफ फेर दिया था। मतलब इसका यह है कि हर ज़र्रा तुमने मेरी याद में महव कर दिया था। तुमने शब्द वग़ैरह सुनने की कभी कोशिश न की। रिवाजन् चाहे सो कर लिया हो। तुमने अपनी ज़िंदगी का आधार मुझी को बना लिया था। और यही सब कुछ है। बाक़ी हमा काह। और एक बात बताता हूं। तुम जिस मुक़ाम पर गये तुमने मेरा ही जलवा देखने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि तुमने उस मुक़ाम का पूरा असर ले लिया। तुमने जिस मुक़ाम की सैर की, इसी बायस से मुकम्मिल सैर हुई। और यह क़ाबलियत मैंने किसी में नहीं पाई। और अब भी तुम मेरे हर रगोरेशे मे घुसने की कोशिश कर रहे हो और काफ़ी घुस चुके हो। मेरे सिवा किसी का ख़्याल भी नहीं। और मेरी भी यही कैफ़ियत है कि तुम्हारे सिवा किसी का ख़्याल नहीं। तुम्हारे ख़्याल की झंकोर हर वक़्त मेरे दिल में होती रहती है। और मैं तुम्हारी याद करता हूं। ये बातें किसी की समझ में न आएंगी। ये कोई करके देखे तो पता चलेगा। मेरा मक़सद इन सब बातों से यह है कि लोग इसकी पैरवी करें। और तुम्हारी तरह बनने की सई बलीग फरमावें। यह मुझे पर एहसान होगा। तुम्हारी हालत सब खुली हुई है। हर ज़र्रा मुहं खोले हुये बैठा हुआ है जहां से चाहे फ़ैज़ घसीट लें। उनमें (R.C.में) जो ख़ामी थी कि यह हर हालत को ऐसा पी गये थे कि पता तक नहीं चलता था। ये इनका (R.C.) ज़र्फ़ था मगर मैंने इसको ख़ामी यूँ समझा ये बात दूसरों के लिए मुफ़ीद न थी। इस

ख़ामी को दूर कर दिया। अब जहां बैठेंगे फ़ैज़ जारी होगा। और मेरी सोहबत लोगों को याद आयेगी। मगर अफ़सोस! सोसाइटी की हालत ऐसी खराब हो गई कि इस बात का कोई समझने वाला ही न रहा। ख़लूस जाता रहा, माद्दियत आ गई। और इन बेचारों की भी ख़ता नहीं है, जैसा उनको दिया गया, वैसे ही मज़े की आदत उनमें पड़ गई। जहां ख़लूस था वहां पर लोगों की तवज्जो ही नहीं गई। इशारा बजानिब मदन मोहन लाल था। अगर सच पूछो तो सबने अपने-अपने (कानपुर वालों) उल्लू सीधे किए और मेरा काम बजाए बनाने के, बिगाड़ा। इसका हश्र में वो जवाबदेह होंगे। अगर मैं ज़िंदा यानी देहधारी होता तो यह कैफ़ियत देखकर मेरे भी आंसू निक़ल पड़ते। मेरी करी कराई मेहनत ऐश पसन्दों ने सब ग़ारत कर दीं।

ये मज़मून जो आज मैंने लिखाया है, मुतनब्बी (डाक्टर कृष्ण स्वरूप सहाय) को दिखाना, तब उनके कान खड़े होंगे। मुझे उम्मीद है, वो मुझे बुढ़ापे में धोखा नहीं देंगे। तुम रन्जीदा न हो। तुम्हारा डंका बजेगा, वरना यह तख़्ता ही उलट दूंगां। अगर तबियत में ज़्यादा रंज हो तो अपने इस काम को शुरू कर दूं। तुम्हारे आंसू मैं देख नहीं सकता। अपनी तबियत से इस रंज को हटा दो। वरना क़ुदरते कामिला अभी मौजज़न होना शुरू हो जाएगी। तुम्हें अपनी हालत का अभी पता नहीं है। तुम्हारे हर ज़र्रे में, याद रखो, मैं पूर्ण रूप से मौजूद हूं। इसका तुम्हें इन्कशाफ़ हो चुका है। जिस्म छोड़ने के बाद सबसे पहले इसी बात का इन्कशाफ़ कराया था। तुम्हें इस बात का अंदाज़ा नहीं कि मुझे तुमसे किस क़दर मोहब्बत है। इस मोहब्बत को मैंने हमेशा पोशीदा रखा। अब तो मैंने **बाबू मदन मोहन लाल** को बनाना शुरू कर दिया है। और मैं ख़ुश भी हूं कि उन्होंने मेरा कहना माना। ईशर इस्तक़ामत दे। बाक़ी सब तरफ़ से मैंने तवज्जो फ़िलहाल हटा ली है। बुज़ुर्गों के क़िस्से लिखने में लोगों ने अपनी तबाअ आज़माईयाँ भी कीं हैं। वाक़यात की तबदीली में हमेशा देर लगती है। जब ख़ुदा को भी कोई काम करना होता है तो वैसे सामान मोहईया होने लगते हैं। उसके बाद वो बात अमल में आती है। अगर किसी बुज़ुर्ग ने अपनी दुआ या बद्दुआ से फ़ौरन नतीजा मुतलूब पैदा कर दिया तो इसके मानी यह हैं कि यह सामान पहले से ही मौहइया हो चुका था।

मैंने असल धार अपने में पैवस्त होने की कोशिश की, तो आवाज़ आई कि ऐसा मत करो। मैंने (R. C.) मराक़बा छोड़ दिया।

हज़रत क़िब्ला से दरियाफ़्त किया तो फ़रमाया= कि यह मैंने ही कहा था। इसकी

वजह यह है कि मैं तुममें पूरे तौर से फ़ना हूं। इस लिए तुम्हें यह काम करने की ज़रूरत नहीं। अगर सच पूछो तो तुम्हें किसी शग़ल और अमल की ज़रूरत नहीं और इससे तुम्हें पहले ही से नफ़रत थी। और मैंने कभी इस बात पर ज़ोर भी नहीं दिया। तुम्हारी फ़नाईयत भी अजब ढंग की हुई। इससे लोगों को ताज्जुब होगा। जब मुझे यह यक़ीन हो गया कि मुझे तुम्हें अपना **सज्जादा नशीन** बनाना है तो मैं रफ़्ता-रफ़्ता तुम मैं ख़ुद फ़ना होने की कोशिश करता था। तुम यह न समझना कि मैंने तुम्हारे लिए कोशिश नहीं की। मैंने भी अपना हक़ (फ़र्ज़) तुम्हारे अमल के मुताबिक़ निभा दिया। असल पूछों तो यह ग़रज़ मेरी ही थी। ईशर का फ़जलव करम होता है तब ऐसा **सज्जादा नशीन** मिलता है। वरना असलियत ग़ायब हो जाती, माद्दीयत रह जाती।

हमारे सिलसिले में यह ईशर की ख़ास इनायत रही हैं। आमीन। और कोई न कोई अच्छा पैदा ही होता रहा। तुम भी इससे ख़ाली न रहोगे। यह मेरी **दुआ** है।

इस क़िस्म की तालीम अवाम को नहीं दी जाती और न हर शख़्स इसको हासिल कर सकता है। काम तो बन सकता है और बन जाता है मगर यह बात हर शख़्स में पैदा नहीं होती।

इस वक़्त **क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०)** भी आए थे। वो तुम को दुआ देकर चले गये और एक बात और कह गये। उसका इन्कशाफ़ थोड़े दिनों बाद होगा। मुझको मुतबन्नी (डाक्टर कृष्ण स्वरूप साहब) को भी कुछ रोशनी देना पड़ेगी। लोग उनके भी पीछे पड़ जायेंगे। दर परदा उनसे भी ख़िलाफ़त मानने लगेंगे। इसलिए मैंने तुमसे कहा था कि उन्हें आगे बढ़ा दो। आज ज़रूर ऐसा करना। बातों में अपना वक़्त ख़राब न करना। इसमें देर लगेगी। इसलिए कि एक दम से करने की मैंने तुमको मुमानियत कर दी है। **मैदान तुम्हारे हाथ रहेगा।** लोगों के चेहरे उतर जायेंगे। मैं अपनी पूरी ताक़त से वहां (भंडारे में) मौजूद रहूंगा। सिर्फ़ ख़्याल की देर होगी। लोगों की ख़िलाफ़त की परवाह मत करना। तुम्हें किसी की धौंस में आने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारे पसेपुश्त वो ताक़त होगी जिसकी मिसाल नहीं। बाबू मदन मोहन लाल का यह ख़्याल ठीक है कि यह Miracle होगा। मैं वक़्तन फ़ौक़्तन जो समझ में आयेगा, बताता रहूंगा।

तुम्हारा कोई ताक़त मुक़ाबिला नहीं कर सकती। यह लफ़्ज़ मैंने बार-बार कहे हैं इसलिए कि हिम्मत पकड़ो। तुम्हारी हिम्मत का ज़िम्मा **क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०)** ने लिया है। तुममें इस बात की कमी थी और मैंने यह बात उनसे अर्ज़ भी की थी।

मेरी वहां (भंडारे) हाज़री इस कद्र ज़बरदस्त रहेगी कि हर मिनट पर जवाब मिलता रहेगा। मैं उस वक़्त कुल काम छोड़ दूंगा। यही मेरा उद्देश्य होगा यानी जो काम सामने होगा। अगर **बाबू ब्रजमोहन लाल** ज़्यादा चकर-मकर करें तो उन्हें मसमसा कर बैठ जाना। नक़्शा सामने आ गया। तुम्हारे वहीं पर लोग मद्दगार बन जाएंगे।

12.8.1944

किसी की रियायत की ज़रूरत नहीं। Tit for tat। तुम्हारे दिल के लिए मुझे एक दवा बताना होगी। Tit for Tat की सिर्फ़ मैं तुम्हीं को इजाज़त देता हूं। वो इस वजह से कि मुमकिन है कि भंडारे में कुछ लोग तबाअ आज़माई करें। तुमको मिनट-मिनट की ख़बर रहेगी।

यह भी एक तरीक़ा तालीम है कि अगर दिमाग़ पर Pressure (दबाव) पड़े या दिमाग़ उसके असर से मुअत्तल हो जाये तो कोई हंसी की बात कह देना चाहिये। मगर ऐसी बेहूदा नहीं जैसी कि नन्हे कहा करते थे। इसमें अपना वक़ार जाता है।

रात मुतनब्बी (डाक्टर श्री कृष्ण सरूप साहब) पर तुमने अच्छा काम किया। जिस मुक़ाम पर कि तुम खींच कर लाये हो उसी पर तवज्जो देने की ज़रूरत है। इससे आगे अभी बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है वो कमज़ोर हैं और उनका बुढ़ापा है।

बाबू ब्रजमोहन लाल का बिगड़ना शुरू हो गया है। उनमें नाश (dead body, carcass) की बू आने लगी है। तुमने भी उनको तवज्जो देना बंद कर दी। उनका जो क़दम है वह नीचे ही को आता है। तुम किए जाओ, असर से तुम्हें कुछ मतलब नहीं।

मौलवी अबदुल ग़नी ख़ां साहब के लिए **हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०)** ने फ़रमाया= "उनको सम्भालो। मैं तुमको (बाबू रामचन्द्र) हुक्म देता हूं। इसकी ज़िम्मेवारी तुम्हारे (R. C.) ही ऊपर रहेगी। मैं उनका इन्चार्ज था अब मैं तुमको इन्चार्ज बनाता हूं।

बुजुगी ब अक़ल अस्त न बसाल (अर्थात= बड़प्पन (सम्मान) अक़्ल (समझदारी) से होता है, उम्र से नहीं।) उनकी (मौलवी साहब) हालत बहुत गिर गई है। बिरजू में उन्हीं का असर आया है। यही वजह है कि तुम्हारी तवज्जो बिरजू के लिए काम नहीं करती। **जड़ को सम्भालो,** पालू ख़ुद-ब-ख़ुद सरसब्ज़ और शादाब हो जायेंगे। उनके

(मौलवी साहब) साथ सख़्ती करने की ज़रूरत है। जहां ज़रूरत हो कर सकते हो। तुम्हारे **पीर** ने कोई बात नहीं छोड़ी जो तुमको दे दी न हो और मैं भी कुछ नहीं छोडूंगा। तुमसे (R. C.) एक जहान रोशन होगा। बहुत से लोग और बहुत से फ़ुक़रा तुम्हारे मुक़ाबले में सुबह के टिमटिमाते हुये चिराग़ की तरह नज़र आवेंगे। जैसा कि तुम्हारे **पीर** ने फ़रमाया है, मैं भी कहता हूं कि **तुम्हारी तरक़्क़ी का कहीं ठिकाना नहीं।** हिम्मत बांधो और इसका ज़िम्मा भी मैंने ले लिया है। **कारबंद हो**।" हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब रहम0 तशरीफ़ ले गए।

हज़रत क़िब्ला ने फरमाया= ये काम जो हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने तुम्हारे सुपुर्द किया है, जी तोड़ कर करो। तुम्हारा इसमें भी भला होगा। ज़िंदगी में मेरी यह तमन्ना थी कि मुझे कोई ऐसा शख़्स मिल जाता जो मेरे नाम के ज़िंदा करता। **आरज़ू बर आई और खुदा ने वो दिन दिखा दिया।** क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) तुमको तवज्जो भी दे गये।

आपस में बातचीत होने पर मैंने भाई रामचन्द्र से अर्ज़ किया "कि सबको हज़रत क़िब्ला (रहम०) के दर्शन होते हैं, मुझको क्यों नहीं होते? मुझमें क्या नुक्स है? मालूम हो तो दूर करने की कोशिश करूं; या हज़रत क़िब्ला (रहम०) खुद ही दूर कर दें।" कह ही रहा था कि फ़ौरन हज़रत क़िब्ला (रहम०) रौनक़ अफ़रोज़ हो गये **और** फ़रमाया= "आज जन्मअष्टमी का दिन है उनको (मदन मोहन लाल) मुबारकबाद दो। वो अपनी हालत देखें। जो शिकायत की थी वो रफ़ा हो गई। अपनी (मदन मोहन ने) हालत देखी तो अपने कुल जिस्म में वो ही वो थे यानी हज़रत क़िब्ला। **मौलवी अबदुल ग़नी ख़ां साहब** के लिए जो बात तुमने सोची है वो मुनासिब है। इतने बड़े बुज़ुर्ग अगर अपना ईमान सलामत न ले गए तो क़ाबिले अफ़सोस है। हमारे हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने यह ज़िम्मेवारी तुम्हीं पर रखी है। अगर यह काम न कर सके तो (R. C.) हश्र में जवाब देह होंगे। **फ़क़ीर** की ज़ाहिरा पहचान यह है कि जिसके पास बैठने से दिमाग़ मुअत्तल हो जावे मगर कोई तकलीफ़ न हो।

(R. C. को एक दृश्य दिखाया गया यानी हालत का इन्कशाफ़ उनको हुआ) इस तरह पर कि सुलतान-उल-अज़कार उनका तेज़ किया गया और जो बात मैंने (हज़रत क़िब्ला) कल कही थी उसका अनुभव करा दिया। उसका असर यह है कि जिस्म का हर ज़र्रा ज़ात की ताक़त महसूस कर रहा है और उस तरफ़ रजूअ है। दर हक़ीक़त

सुलतान-उल-अज़कार का यही मक़सद है। अगर महज राम-राम करने का मक़सद होता तो तोता भी फ़ायदा उठा जाता। उन्हें (मदन मोहन) भी मुअलम्मी करना है। इस बात का ख़्याल रखें। इस हालत के पैदा करने का तरीक़ा वह भी है जो रामचन्द्र ने किया था। अगर सच पूछो तो उनको (R. C.) कुदरत उस तरफ मायल कर रही थी। मेरा फ़क़त बहाना था। और क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की दुआ का असर था।

13.8.1944

रात के वाक़यात क़ाबिले तहसीन हैं। मैंने तुम्हारे कहने से तुमको नीचे उतार दिया। जब तुम कहोगे फिर ऊपर कर दूंगा। तुम्हारी हमातन मसरूफ़ियत मुझको भी खल रही थी। मोहब्बत की वजह से कुछ नहीं कहता था। तुम्हारे दर्जे में अब भी कोई कमी नहीं है। सिर्फ़ रूझान कम कर दिया गया है। अगर थोड़े दिनों तुम्हारी यह हालत और क़ायम रहती तो बड़े से बड़ा फ़क़ीर यानी निहायत ही ऊंचे दर्जे का शख़्स तवज्जो बरदाश्त नहीं कर सकता था। तुम इस क़ाबिल भी न रहते कि एक मिनट भी किसी को तवज्जो दे सकते। तुम उस हालत पर जा रहे थे जो जिस्म छोड़ने के बाद होती है। तुम्हारे अंदाज़ का ख़ातमा हो जाता और वही कैफ़ियत हो जाती जो विसाल के बाद होती है। मेरे काम के न रहते। जिस्म भी तुम्हारा ज़्यादा दिनों तक काम नहीं करता। और ज़रा सी अगर एड़ लगा दी जाती तो क़फ्से अनसरी से परवाज़ कर जाते। मैं समझता हूं कि इस तरक़्क़ी की कोई मिसाल नहीं। और इस बात से बुज़ुर्गों को भी नाज़ है। मगर तुम्हारी तरक़्क़ी मेरे पास जमा रहेगी। यह अमानत है जो मैंने अपने पास रख ली है। आख़िर में मेरी भी यही कैफ़ियत हो गई थी। मगर तुमने शुरू ही में ली। मैं समझ चुका था कि मेरा विसाल क़रीब है तब उस हालत में एकदम से घुस गया था। तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। जो बात मैंने किसी मसलहत से तुम में छोड़ी है, वो मुझमें नहीं थी; यानी ज़िद् वग़ैरह। और इसका रहना जिस्म रखने के लिए लाज़मी है। तुम अपनी तबियत में इसका ग्लान न आने देना। मैं हर बात का ज़िम्मेवार हूं। ज़रूरत पर सब कुछ हो जाया करेगा। चीज़ तुमसे नहीं ली गई बल्कि बढ़ रही है। अलबत्ता शक्ल तबदील कर दी गई है। यानी उसका रूख नीचे की तरफ़ ही रखा गया है। यह तुम्हारी तमाम उम्र का अभ्यास था जो खोलने पर एक दम से उभार कर गया। और तुम्हारी भी इसमें ख़ता नहीं है। मैंने तो सब कुछ दे ही दिया, और बुज़ुर्गों ने भी

कोई कसर नहीं छोड़ी। अब सिर्फ़ इस हद तक तुमको लाया गया है कि हर बात तुम्हारे क़ाबू में रहे। अगर थोड़ा देना चाहो तो थोड़ा भी दे सको और बहुत देना चाहो तो यह भी हो सके। पहले यह बात तुम्हारे इख़्तियार से बाहर थी। जिसको देते एकदम से भर जाता। और इससे आगे उसका दिमाग़ फट जाने का अंदेशा था।

इस कैफ़ियत से **बाबू मदन मोहन लाल** ख़ूब फ़ायदा उठा गये। हालांकि लिहाज़ भी रखा गया। दूसरे को बरदाश्त करना मुश्किल था। और इससे आगे यह भी फ़ायदा नहीं उठा सकते थे। इसलिए तुम्हारी, इसके कम करने की प्रार्थना करना, बहुत मुनासिब थी। पर मैं ही ने बाबू मदन मोहन लाल के दिल में यह ख़्याल डाला था। अगर तुम उसको कम करने की मुझसे आरज़ू न करते तो मेरा चाहे कुछ भी बिगड़ जाता, मैं नीचे नहीं उतारता, इससे तुम्हारा नुक़सान कुछ नहीं हुआ। मेरा फ़ायदा हो गया। इस हालत पर और इतने ही रूझान के साथ जिस वक़्त तुम जाना चाहोगे, पहुंचा दूंगा; और जिस वक़्त कहोगे मैं फिर वापस ले आऊंगा। और जब तक तुम चाहोगे क़याम रखूंगा। अगर भंडारे में ज़रूरत पड़ गई तो मैं अज़ ख़ुद उस मुक़ाम पर ला कर खड़ा कर दूंगा। और अगर ज़रूरत पड़ जायेगी तो तुम भी उस मुक़ाम पर अज़ ख़ुद खड़े हो जाओगे। मगर क़याम नहीं रहेगा। काम करने के बाद फिर वापसी हो जाएंगी। मेरा भी ज़िंदगी में यही वतीरा था। मगर मेरे अख़्तियार में था और तुम बेक़ाबू हो। तुम्हारा रूख़ जिस तरफ़ हो जाता है हटाए नहीं हटता। ये तुम्हारी नेचर है। यह ही तरक़्क़ी का बायस हुई। ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़ल किया कि तुम्हारा रूख़ परमार्थ की तरफ़ रहा। अगर किसी और तरफ़ हो जाता तो उतनी ही तेज़ी उस में हो जाती। तुम्हारी सादगी ने तुम्हारी मालदारी किसी पर साबित नहीं की। और यह एक हिफ़ाज़त थी जो कुदरत की तरफ़ से मेरा मक़सद पूरा करने के लिए अता हुई थी। मेरे पास मालदार आदमी बहुत से आये मगर किसी ने, सिवाये तुम्हारे तरक़्क़ी नहीं की। यह एक तर्जुबे की बात तुम्हें बताता हूं। इन लोगों से उम्मीद कम रखना चाहिये।

जब एक दौलत मिल जाती है तो दूसरी की तरफ़ रूख नहीं जाता। यही वजह है कि तालिबाने खुदा हैरान और परेशान रहते हैं और रोटियों का गुज़ारा मुश्किल से होता है। यह अक्सर देखा गया है। तुम्हारा Case फ़क़्त Exceptional है और मुझ को इसकी खुशी भी है कि एक रईस को मैं ही ने सम्भाला। तुम्हारे सिलसिले में यह मिसाल नहीं मिलेगी। यह मेरी Sacrifice का नतीजा है।

मेरी मोहब्बत इस वक़्त जोश पर है। और जब तुमने इतनी Sacrifice की है तो यह हालत मेरी तरह खुद इख़्तयारी रहेगी। ऐसा ही होगा और हो गया। मगर इसमें तुम्हारी ज़िम्मेवारी बढ़ेगी, इसको ख़्याल में रखना। और यही हुक्म अभी मुझे मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) ने दिया था और उनकी तामील हुक्म मैं अपना फ़र्ज़े अवल्ला समझता हूं। उनके हुक्म से मजबूर हूं। ख़्याल मैं भी रखूंगा ताकि तुम अपनी ज़िम्मेवारी में पूरा-पूरा उतर जाओ। क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की तबियत तुम्हारे लिए जोश में रहती है। उनको भी तुमसे, मुझसे कम मोहब्बत नहीं है बल्कि ज़्यादा। हज़रत मौलाना साहब क़िब्ला (रहम०) ने सिर्फ़ हिम्मत के लिए तलक़ीन की थी। और भर भी गये और यह फ़रमा गए कि कोई कसर बाक़ी मत छोड़ो। मेरा मंशा था कि ख़त्तो किताबत के ज़रिये से अगर (खुलफ़ा लोग) ठीक हो जाते तो तुम्हारे पास एक ख़लीफ़ा को बारी-बारी से, बल्कि हर उनकों भंडारे तक तैयार कर दिया जाता। इससे तुमको भी मदद मिलती। अब खुदा को अपना मद्दगार समझो। मैं बाबू मदन मोहन लाल को भंडारे तक इससे ज़्यादा तैयार कर दूंगा। और काम भी लूंगा। तुम्हें वक़्त पर इन सबने धोखा दिया। क्या मैंने उनको इसलिए पाला था? रामेशर भी मारे आस्तीन बन गये। उनसे यही उम्मीद थी? ऐसे अहमक़ों से ख़ुदा बचाए। मैं तुम्हारा साथ नहीं छोडूंगा, चाहे कोई साथ दे या न दे। अब मेरी समझ में नहीं आता कि क्या तरकीब करना चाहिये। (उन लोगों की कैफ़ियत का नक़्शा सामने आ गया।) तुम्हीं सोचो और Suggest करो। यह लोग डेढ़ ईंट की मस्जिद अलहदा बनाए बैठे हैं। किसी से कुछ सरोकार ही नहीं। गुराई में मस्त हैं। अगर सच पूछो तो यह मेरा काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि नफ़्स की पैरवी में लगे हुए हैं और उसकी आनन्दी कैफ़ियत महसूस कर रहे हैं। और इसी को सब कुछ समझते हैं। उनको रूहानियत की हवा भी नहीं लगी है। यह बात बहुत आगे चल कर मिलती है। और सिलसिले के लोग इससे क़ब्ल ही की कैफ़ियत को रूहानी समझ लेते हैं। इन लोगों (खुल्फ़ा) के बारे में, मैं अकसर कहता चला आया हूं। इस वक़्त सिर्फ़ उनका हाल बताना मक़सूद था। मेरा मंशा फ़ौत हो गया। मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहब की रात हालत अच्छी रही।

14-8-44

श्री कृष्ण लाल को चर्तुभुज सहाय की गुलामी इसलिए मंजूर है कि उनकी भी

जमायत बढ़ जाये। असलियत का कोई मुतलाशी नहीं। श्री किशन लाल अपने को पहुंचा हुआ समझ रहे हैं। एक राज़ है जब कोई बेग़रजाना तौर पर तालीम करता है तब असर होता है। इसी को **ख़लूस** कहते हैं। मेरे जिस्म छोड़ते ही तुमको हैज़ा हुआ था। आसार इससे पेश्तर नुमायाँ हो चुके थे। यानी दस्त आने लगे थे। वजय यह थी कि मैंने ताक़त एक दम से भर दी थी। संस्कारों की ग़िलज़त साफ होना शुरू हो गई। यह सब बातें इसलिए की गई कि उस ताक़त को क़याम की जगह मिले। यह बात ठीक है कि मैं बीमारी में तुम्हारे साथ रहा। इतनी बड़ी बीमारी तुम्हारी झिलवा दी। और तकलीफ़ होने न दी। उस वक़्त तुमको मारफ़िया न इन्जेक्शन देना न था। यह माद्दी नशा था जिसने उस पर.असर डाला। इसी वजह से तुमको समभलने में और देर लग गई। अगर ऐसा न होता तो ताक़त जल्द जज़्ब हो जाती। तुमने यह हालत कि लामहदूद ताक़त (मुझमें) मेरे पीर के विसाल के बाद महसूस होती है, डायरी में तहरीर की थी। यह डायरी लोगों की निगाह से गुज़री और **नन्हे** को खटक पैदा हुई। और कोई शख़्स इस बात को समझ न सका। उनमें सोहबत शनासी मौजूद थी। चक्कर में रह गये। आइन्दा से मैं हिदायत करता हूं कि इस क़िस्म की डायरी सिवाए अपने पीर के किसी के पास भेजी न जाए, न उसका ज़िक्र किया जाये। मदन मोहन लाल बदायूनी को ख़ास तौर पर लिख दिया जावे कि अपने हालात सिवाए अपने पीर के किसी पर ज़ाहिर न करें। औरों के लिए भी मैं यही हिदायत करता हूं।

मेरा दिल तर्जुबों से पक गया है। तुम्हारे संस्कार मैंने ख्वाब में भी भुगवाए हैं। बनना उनका बहुत पहले से ही बंद हो चुका था। अकसर मैंने तुम्हारे साथ यह भी किया है कि दोनों (मैं और तुम) ने मिल कर भोगे हैं। बराएनाम ज़िंदगी क़ायम रखने के लिए छोड़ दिए गये हैं। और कुछ बंदिशें ऐसी लगा दी गई हैं ताकि तुम जिस्म न छोड़ दो। उस हालत पर जिस पर तुम्हारा क़याम है, बिला साफ़ हुए आदमी नहीं पहुंचता। **यह मेरी ईजाद है,** कि संस्कारों में बंदिश लगा कर किस तरह आदमी उस मुक़ाम पर पहुंचता है, जिस में तुम्हारा क़याम है। यह बात लोगों की समझ में न आएगी। यह बिल्कुल नई बात है। नक़्शा सामने आ गया। यानी संस्कार अपनी हद में बादलों के टुकड़ों की तरह से तैरते मालूम होते थे और गोया एक हद के अंदर महदूद थे। यह तुम्हारा नक़्शा है जो तुम्हारे सामने किया गया। अगर वो हद तोड़ दी जाये तो फ़ौरन परवाज़गी हो जाये। यह बहुत गूढ़ मज़मून है, इसके समझने की लोग क़ाबलियत भी नहीं रखते। अब तुमने मालूम कर लिया कि तुम्हारे कितने थोड़े संस्कार

बाक़ी हैं जो भोगने पर भी पूरे नहीं होते, बल्कि ताक़त दी जाती है। नक़्शा सामने आ गया। नक़्शे से यह बात मालूम हुई कि संस्कारों में बिजली कैसी Current (लहर) पैवस्त हो रही है ताकि वो क़ायम रहें। जिस वक़्त यह ताक़त जो संस्कारों में आ रही है, खत्म हो जायेगी उसी वक़्त उनका भोग पूरा हो जायेगा। और तुम आलमे बाला की तरफ़ राही हो जाओगे।

ख़्याल हुआ कि इस तरकीब से संस्कारों में ताक़त पहुंचना बंद हो सकता है।

माअन् फ़रमाया= ऐसा हरगिज़ न करना कि उसमें ताक़त जाना बंद कर दो। नक़्शा इसलिए नहीं दिखाया गया। कोई बात तो मेरे हाथ मे भी रखो। मुझे तुमसे काम लेना है। नक़्शा दिखाते ही तुम्हारे अमल समझ में आ गया, यह तुम्हारे दिमाग़ की ख़ूबी है। हालाँकि मेरा यह मंशा नहीं था।

सवाल मदन मोहन= एक पेच उस्तादी का छुपा रखना चाहिये? फ़रमाया= मैंने इनसे कोई पेच नहीं छुपागा अगर इनकी तबियत ऐसी है कि यह ऐसा नहीं करेंगें। यह मुहब्बत में गरवीदा हो सकते हैं। बाक़ी तबियत सख़्त है। मैं किसी से अपना पेंच नहीं छुपाता। अगर कोई ऐसा मिल जाता। मेरा दिल **ख़ुदाई** बरकतों से भर गया था। वह ही ख़्वास आने लगें थे। मैं ने एक रोज़ तुम पर एक कैफ़ियत तारी की थी जिस का ज़िक्र पीछे हो चुका है। जिस का मंशा यह था, कि यह आख़री बन्द भी बाक़ी न रह जाये। इशारतन् फ़रमाया= वह यह है कि तुम्हारा मरने को जी चाहा था। और असल में मुकम्मिल विसाल की आरज़ू थी। अब कोई बन्द बाक़ी नहीं रहा है। सीना साफ़ है, जिस का जी चाहे देख ले। उसमें नूरे हक़ीक़त झलक रहा है।

जब तक कुतुब का दरजा न आ जाये, तब तक वाक़ई गुराई के क़ाबिल नहीं। काम बना सकता है। दरजात तय कराने का अख़्तियार नहीं। नायब कुतुब का यह मतलब नहीं है जो मदन मोहल लाल ने कहा कि नायब कुतुब से मुराद ख़लीफाए कुतुब है। बल्कि न्याबत के यह मानी हैं कि दोनों की कैफ़ियत एक ही सी हो जाये। (यानी गुरु और शिष्य की कैफ़ियत)

आज मैं कानपुर गया था। वहां की हालत यह है।

“न ग़ज़नवी में मज़ाक है,
न वह ख़म है ज़ुल्फ़े यार में।”

नन्हे अपने कर्मों को रो रहे हैं। कुछ ताक़त काम नहीं देती। तबाही शुरू हो गई।

नुस्ख़ा= जाड़ों में हरे कमल गट्टे की सफ़ेद मींगी मदन मोहन लाल इस्तेमाल करें, फ़ायदा होगा।

15-8-1944

मैं तुमको तालीम के ऐसे-ऐसे राज़ बता रहा हूं जो किसी के शानो गुमान में भी न होंगे, न और जगह मिलेंगे। अपनी ज़िंदगी का एक गिराँमाया वक़्त इसी के दरियाफ़्त करने में लगा दिया ताकि मख़लूक़ ख़ुदा को फ़ायदा पहुंचे। मेरा दिल उनकी मोहब्बत से लबरेज़ था। एक तालीम का तरीक़ा मैं तुम्हें बतलाता हूं। वो यह है कि **मामूल में अपना सूक्ष्म शरीर डाल दे, और उसको हुकुम दे दे कि इसकी तकमील करने के बाद वापस हो। और उसको यह भी हिदायत कर दी जाय कि उसको उसके अमल के मुताबिक़ तरक़्क़ी दें, ताकि ऐसा न हो कि उसकी तबियत एक दम से उबाल दे। मैंने यही तरीक़ा रक्खा था। इस लिये उनको मिनट-मिनट पर रोशनी मिलती थी।**

जिस वक़्त कि पीर जिस्म छोड़ता है उसका जिस्मे लतीफ़ ही उसके साथ जाता है। उसकी जगह पर जो सज्जादा नशीन होता है उसका यही अमल शुरू हो जाता है। तुमको ठीक एहसास हुआ था कि तुम्हारे जिस्मे लतीफ़ हर जिस्म में काम कर रहे हैं। **यह तरीक़ा मदन मोहन लाल भी कर सकते हैं। कुतुब बनने** से पहले अगर कोई यह तरीक़ा करे तो बेकार होगा। **यह मेरी ईजाद है।** चूंकि मैं तुम्हारे अन्दर समाया हुआ हूं।

लिहाज़ा Automatically तुमसे यह हुआ। मैं अपनी क़िस्मत को सहारता हूं कि तुमको इसका अज़ख़ुद इंकशाफ़ हो गया और बग़ैर मेरे बतलाये हुये तुम इससे वाक़िफ़ हो गये और सीख गये।

एक तरीक़ा यह है मगर वो आम लोगों पर नहीं किया जा सकता। और न इस वक़्त तक कोई इसके अहल है। वो यह है **कि ज़ात की ताक़त अपनी कुव्वते इरादी से उस तरफ़ रूजूअअ कर दे।** नक़्शा सामने आ गया। **अगर किसी बड़े फ़क़ीर से साबक़ा पड़ जाये और अपनी उस्तादी दिखलाना हो तो तरीक़ा उसके साथ में किया जा सकता है मगर उसके साथ यह धार बराबर क़ायम नहीं रखी जाती। मगर इस काम के करने के लिये मामूली हिम्मत का काम नहीं है और न मामूली आदमी कर सकता**

है। यह तरीक़ा सिर्फ़ तुम्हारी ही ज़ात के लिये महदूद करता हूं। मुझे इस तरीक़े के करने का कहीं इत्तफ़ाक़ नहीं पड़ा। यह तरीक़ा जो बाबू मदन मोहन लाल ने बयान किया, सिर्फ़ अपने ही लिये किया जा सकता है। और इसी से उस शख़्स को फ़ायदा पहुंचेगा जिसका ज़ात से सम्बंध हो चुका है। ऊपर के कहे हुये तरीक़े, तालीम के राज़ हैं। **ये हर शख़्स को बताने के लिये नहीं हैं।** न इससे फ़ायदा हो सकता है, न इनकी कोई क़द्र करेगा। **ये सीना ब सीना एक ही के पास रहना चाहिये। नन्हे** को इन बातों की हवा भी नहीं लगी। **ब्रजमोहन लाल** तुमसे मोहब्बत रखते हैं। और तुम्हारी तरफ़ कभी-कभी रूजूअअ भी हो जाते हैं।

मदन मोहन ने अर्ज़ किया कि मालदार हैं। इस वजह से किसी ग़रीब से भी मोहब्बत करी?

फ़रमाया **कहता बहुत करी है। मगर इस आदत से उनका (मदन मोहन) नुक़सान हुआ है। यह आदत छोड़ें। उनको दिलफरेब बातें करना चाहिये, मगर हों सच्ची। मिसाल मेरी क़ायम कर लें। पता लग जायेगा।**

रात जो तरीक़ा तुमने मौलाना अब्दुल ग़नी ख़ां सहाब के साथ किया था, नया था, और क़ाबले तहसीन था। हमारे मौलाना सहाब क़िब्ला (रहम०) इसको देख कर बहुत खुश हुये। मैं समझता हूं और मुझे यक़ीन है कि तुमसे अच्छी तालीम कोई नहीं कर सकता। **यह ख़ुदा-दाद नेमत है।** इस का कहां तक शुक्रिया अदा किया जाय।

मिसरा= "सआदत बज़ौर बाज़ू नेस्त।" (अर्थात- यह सौभाग्य बाहुबल से प्राप्त नहीं होता।)

इसका तरीक़ा इस तरह पर है कि **जो बात या कैफ़ियत दाखिल करना हो उसके ज़र्रात बाहर बना ले, और फिर उसके दिल में जिसको तव्वजो देना है, दाख़िल कर दें और फिर उनके असर को जो बीज रूप में था उसके अन्दर फैला दें। ये तरीक़ा किसी को बतलाया ना जाय। लोग इससे मुज़रत रसाँ काम लेने लगेंगे। इसमें असर फ़ौरन होता है। ये तरीक़ा तव्वजो देने वालों को भी न बतलाया जाय। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूं कि तुममें वो कुव्वत मौजूद है कि तुम एक मिनट में कुल तालीम पूरी कर सकते हो। नक़्शा सामने आ गया। मैंने तुम्हारी तालीम शुरू से ही ऐसी रक्खी थी। और अब भी वही बात है। इसका अहल कोई और न मिला।**

तुम्हारी तन्दरूस्ती ख़राब होने की एक वजह यह भी है कि तुम्हारी साम्य अवस्था का असर जिस्म के कुल Organs पर पड़ गया है। उसके ज़ेरे असर वो काम भी मद्धम करते हैं। मसलन्-तुम को भूख की ख़्वाहिश न होने की वजह यह है कि इस्तग़ना इस हद तक रहती है कि उस तरफ़ ख़्याल नहीं पहुंचता। यही वजह जुमला अज़ाये रईसा में हायल है।

ख़त जो हज़रत क़िब्ला ने बजबाब ख़त बाबू मदन मोहन लाल बदायूनी, मोरख़ा 14 अगस्त सन 44, तहरीर कराया।

786

16-8-44

अज़ शाहजहाँपुर

अज़ीज़े मन सलामत, दुआ।

आपके ख़त की इबारत हज़रत क़िब्ला जनाब लाला जी सहाब को सुना दी गयी और यह उन्हीं का जवाब है। इर्शाद हुआः-

जिस वक़्त आदमी में दौरे फ़नाईयत शुरू हो जाता है, गुरु की निस्बत का आग़ाज़ शुरू हो जाता है। बढ़ते-बढ़ते यहां तक हो जाती है कि गुरु और चेले का एक भाव दिखलाई देता है। उससे आगे चलकर शिष्य गुरु बनने के लायक़ होता है। अगर निगाहे ग़ोर से देखो तो मुझमें और बाबू मदन मोहन लाल में एक तरह की ऐसी निस्बत नज़र पड़ेगी जो उनके ध्यान को काफ़ी होगी। मिसल मशहूर है कि "यक गीर व महकम गीर" (अर्थात= एक को पकड़ो और मज़बूती से पकड़ो)। जब तक ख़्यालात तितर-बितर रहते हैं, कुछ हासिल नहीं होता। मक़सद तालीम का यह है कि सब तरफ़ से ख़्याल हटा कर एक तरफ ऐसा लगा दे कि जिस तरफ़ लगाया है उसकी ताक़त उसमें सरायात करने लगे। दरजात का लिहाज़ फ़क़ीरों में है। चेले के लिये गुरु का दरजा सबसे अफ़ज़ल है। उसको ऊंच-नीच से मतलब नहीं। उसके कुल ख़्यालात उसी पर Locate होना चाहिये। तुम्हारे दिल में ये तसलीस कैसी। अपने मक़सद पर निगाह रखो। मोहब्बत सिर्फ़ एक ही से हो सकती है। क़िस्से में पढ़ा होगा क मजनूं के दिल

में सिवाय लैला के कोई ख़्याल ही न था। क्या लैला से ज़्यादा हसीन औरतें उस ज़माने में नहीं थीं। मगर उसको जो कुछ भी फ़ायदा हुआ, वह उस काली-कूँची औरत ही से हुआ। एक के अलावा दूसरे को दिल देना आशिक़ी के ख़िलाफ़ है।

आशिक़ी चीस्त बग़ो बन्दए जानाँ बूदन।

दिल ब दस्त दीगरे दादन व हैराँ बूदन।

(अर्थात= आशिक़ी क्या है, क्या कहें बस अपने महबूब का हो जाना है। और दिल दूसरे के हाथ में देना और हैराँ होना कि यह क्या हो गया।)

क्या तुम समझ रहे हो कि तुम्हारे पीर बाबू मदन मोहन लाल मुकम्मिल नहीं हैं और तुम्हारे सब मक़ामात और मरहले क्या तै नहीं करा सकते हैं। अगर ऐसा न होता तो मैं तुमको कभी बाबू मदन मोहन लाल के सुर्पुद न करता। ये मेरी ही तहरीक थी जो किसी ज़रिये से उन तक पहुंची। तुम्हारे लिये सिवाय बाबू मदन मोहन लाल के ख़्याल के दूसरा ख़्याल बेजा है। तुम जो कुछ उम्मीद रखो उन्हीं से रखो और जो भी देगा उन्हीं के ज़रिये से देगा। मैं भी ऐसा ही करूंगा शिष्य के लिये सिवाय पीर के कोई दोस्त नहीं होता, ये मेरा तजुर्बा है। दिल लुभाने वाले बहुत मिलते हैं मगर मतलब बरारी सिर्फ़ पीर से हो सकती है। बस तुम इस उसूल पर कारबन्द हो। इसी में तुम्हारी बेहत्तरी है। मेरे ख़्याल करने का मक़सद यही था कि मैंने तुमको एक बेहतर आदमी के सुर्पुद किया। उन्हीं को सब कुछ समझो। बस इतना कहूंगा। आईन्दा इस क़िस्म की शिकायत फिर न पैदा हो ताकीद जानो। मुझे तुमसे उम्मीद ज़रूर है। मेरी ख़ुशी इसी में है कि तुम अपने पीर से मोहब्बत रखो। और इसी में तुमको सब कुछ मिलेगा उनके हुक्म की पाबन्दी ख़्वाह कैसे ही हो तुम्हारा फ़र्ज़ है।

"बमय सज्जादा रंगीन कुन" (**अर्थात=** अपना नमाज़ पढ़ने का कपड़ा (पूजा का आसन) शराब में रंग दो।) का मज़मून याद रखो इस क़िस्म की शिकायत जैसी कि तुमने ख़त में तहरीर की है आपके लिये नाज़ेबा है। मैं तुमको बेहतर बनाना चाहता हूं इसीलिये बेहतर आदमी के सुर्पुद किया। तुम उनकी हालत नहीं जानते। सिर्फ़ मैं बख़ूबी जानता हूं। याद रखो मैं उनको अपना समझता हूं। तुम्हारे लिये जैसा कि मुरीद का फ़र्ज़ है। मुझमें उनमें भेद पैदा करना शराफ़ते इन्सानी के ख़िलाफ़ है तुमको नहीं मालूम तुम्हारे पीर सहाब तुम्हारी तरक़्क़ी के लिये क्या-क्या तदबीरें सोचा करते हैं। ये उनकी मोहब्बत है।

उन्हीं में अपने आपको फ़ना करने की कोशिश करो इसी में सब कुछ हो रहेगा। उनमें चकड़-भड़क नहीं है। इससे धोखा मत खाओ। तुम्हारी जो भी मुश्किलात हैं सिर्फ़ अपने पीर को लिखा करो बाक़ी से तुमको कुछ वास्ता नहीं। शायरी एक अच्छी चीज़ है मगर उसका Mania बुरा। इस ख़त को बार-बार पढ़िये और ग़ौर कीजिये। ये कोई मामूली मज़मून नहीं है बल्कि निचोड़ है।

16-8-1944

इस्तग़ना- उस हालत को कहते हैं जहां तक जुमला जज़बात ख़ामोश हो गये हों। और कुल इन्द्रियां अपने मकाम पर सुस्त पड़ गयी हों और नाकारा नज़र आने लगें। अगर यह हालत सुस्ती की वजह से होगी तो इन्द्रियां नाकारा नज़र नहीं आयेंगी।

हदीसे नफ़्सः- उसको कहते हैं कि इन्सान मकड़ी के जाले की तरह से अपने आप को फांस लेवे। और वो तार जब तक झटका न दिया जावे न टूटे। इससे बचने की तरकीब यह है कि ये कैफ़ियत पैदा होते ही ख़्याल में ग़र्क़ हो जाये। ख़्याल से मेरा मतलब यह है कि वो ख़्याल जो ज़िन्दगी में सब पर हावी बनाया हो। इसके साफ़ करने की तरकीब यह है कि तव्वजो से उसके तारों को तोड़ दे। ये इन्सान ख़ुद भी कर सकता है। बड़े-बड़े लोग इसके शिकार हो जाते हैं। एक तरकीब इससे बचने की और भी है कि **इन तारों को अपने पीर में लय कर दें।** ये ज़बरदस्त नुस्ख़ा है। जो किसी वक़्त मैंने किया था। मुझे ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक मर्तबा यह शिकायत पैदा हुई थी। तारों को लय करने की तरकीब यह है कि ये समझ ले कि उनका Connection हमारे पीर से है। यह वह नुस्ख़ा है जो किसी को मालूम न होगा। मेरी ख़ुद ईजाद है। एक बातराहशै को पेश आती है। वह है कि उसको अपनी हालतगिरी हुई सी मालूम होती है। अक्सर लोग इस हालत पर अमल और शग़ल को खैरबाद कह देते हैं। इसके लिये शग़ले **राब्ता** बड़ा मुर्जरिब नुस्ख़ा है। हमारे यहां के लोग अक्सर यह कैफ़ियत आते ही छोड़ बैठते हैं। जब दिल की हालत बढ़ने लगती है और असलियत के असरात उसमें आने लगते हैं, लताफ़त बढ़ने लगती हैं। नशा उतरने लगता है। तब ये कैफ़ियत पैदा हो जाया करती है। जब ये हालत पैदा हो जाये तो उसमें आनन्द का जज़्बा बढ़ा देना चाहिये। ताकि वो उस कमज़ोरी को जो वाक़ई कमज़ोरी नहीं है महसूस न करे। मगर अक्सर ऐसा भी हुआ है कि हालत पैदा होते ही लोगों ने मेरी सूरत

देखना बन्द कर दी। मैं दुआ देता हूं कि जो शख़्स तुम्हारे पास बैठेंगें, और तुम से फैज़ हासिल करेंगे उनकी ये हालत तो होगी मगर शिकायत के दर्जे तक न पहुंचेगी। और न तुम्हारी सूरत से बेजार होंगे। तुममें ये कैफ़ियत मौजूद है नक़्शा सामने आ गया। और तुम्हें कभी ये शिकायत भी पैदा नहीं हुई। असल में ये शिकायत उन लोगों को पैदा होती है जिनका संस्कार ज़्यादा तीव्र (तेज) नहीं है सिर्फ़ लग-लिपट कर चल रहे हैं। संस्कारी की यह हालत होती है कि जितनी बारीक हालत होती जाती है उसी हद तक उसकी तबियत भी बारीक पसन्द बन जाती है। और उसको इससे पेश्तर की हालत कई गुना भारी मालूम होती है। तुम्हारा हर स्टेज पर यही हाल हुआ। और आख़िर में यह हाल हो गया कि किसी की तव्वजो पसन्द नहीं आती थी।

मुरव्वतन सतसंग करते थे। और अक्सर टाल जाते थे तरक़्क़ी याफ़्ता नफ़्स में ये बात पैदा हो जाती हैं। बदरियाफ़्त फ़रमाया डाक्टर श्री किशन इस योग्य कब थे। मैंने जबरदस्ती उसमें डाला था। वह मोहब्बत का जज़्बा जो अपने साथ लाये थे उसका रूख फेर दिया था। **क़िबला मौलाना सहाब को मैं ही मिला और मुझको भी तुम ही मिले।** मैं तुम्हारे लिये फील्ड तैयार कर गया। अब उसमें जो मतलब के हों निकाल लो। अगर इन लोगों को आबोहवा नामुआफ़िक़ न मिलती ते इनमें से बाज़-बाज़ बल्कि ज़्यादा तादाद एक अच्छी हालत में होती। मैंने इन लोगों में वो बात भरी थी कि अगर ये लोग तनहाही अपने अलम और शग़ल में लगे रहते तो बहुत कुछ हो जाते। ये तुम्हारा ख़्याल ठीक हैं कि जिनको मैंने दिया है उसमें से बहुत से लोग अब तक हज़म न कर सके। एक मर्तबा की बात है कि तुम फतेहगढ़ उस वक़्त पहुंचे थे जिस रोज़ कि मेरे वालिद माजिद का श्राद्ध का दिन था। मैं कमरे में पानी का लोटा रखे हुये अपने पितरों और वालिद को तृप्त करने के लिये अमल कर रहा था, तुम उसको उसी वक़्त समझ गये। अब एक बात जो उसमें रह गयी थी वह बताता हूं। जिस वक़्त, ख़ुदा न करे अगर किसी तालिब को तव्वजो देते वक़्त दिमाग पर गर्मी चढ़ जाय तो ये अमल जो मैंने तुमको अभी Practically बताया है मुफ़ीद होगा। वह यह है कि गिलास या लोटे में पानी अपने पास रख ले। गिलास या लोटा अगर फूल का हो तो और भी अच्छा है। और उस पानी की ताज़गी एक निहायत हल्की शक्ल में क़ायम करके दो, तीन मर्तवा उसके दिमाग की तरफ़ रूजूअ कर दें, ठीक हो जावेगा। पागल का भी यही इलाज़ है। मगर इसके करने की मुमानियत है। पितरों को ख़ारज़ी तौर पर फ़ायदा पहुंचाने के लिये यह अच्छा तरीक़ा है। मगर इसको सब नहीं कर सकते। बदरियाफ़्त

फ़रमाया कि **नन्हे** को इस तरीक़े से वाक़फ़ियत न थी। तुम्हरे इंकशाफ़ पर हाथ मारा था। और अपनी उस्तादी दिखलाई थी। अपना Presting क़ायम रखने के लिये एक बात गढ़ दी थी। यह सबसे पहले तुम्हीं को इकशाफ़ हुआ था। मदन मोहन लाल को या किसी और को बैअत की इजाज़त देने को मैंने **नन्हे** से कुछ नहीं कहा था। यह सब उसकी गढ़न्त थी। मैंने जो फ़ील्ड तैयार किया था वो **कानपुर वालों** ने ख़राब कर दिया। अगर उसी वक़्त से उनको (मुरीदों को) आबो हवा मुआफ़िक़ मिलती जाती तो उनमें ताज़गी बढ़ जाती। अब उनको पिछली हालत से जो उनकी रगे जाँ में सरायत कर गयी है साफ़ भी करना है और तरक़्क़ी भी देना है। उनका साफ़ करना कोई मामूली हस्ती का काम नहीं है। मुझे तुमसे उम्मीद है कि तु इस काम को बख़ूबी कर सकते हो। मगर कोई रूजूअ भी तो हो, अगर तुम जबरन यानी बगैर उनके रूजूअ हुये इस काम को शुरू कर देते हो तो उनका नर्वस सिस्टम पाश-पाश हो जायेगा और वो मेरे काम के न रहेंगे। माद्दीयत इस हद तक पैवस्त हो गयी है कि रूहानियत से कुछ सरोकार नहीं रहा। उसकी गर्मी को सब कुछ समझ बैठे। अफ़सोस। एक मिसरा याद आया- "न हरके सर बतुराशुद क़लन्द्री दानद।" (अर्थात= सर मुडाने से हर शख़्स क़लन्दर (दीन व दुनिया से आज़ाद आदमी) नहीं हो जाता।)

सही मायनों में रूहानियत का लुत्फ़ किसी को नहीं आया। अगर ख़राब न किये जाते तो अब तक बहुतों को आचुका होता। बाबू मदन मोहन लाल से कह दो ये काम अपने ही सुर्पुद समझें। वो ये कि इसमें से Quotations जो मजलिस के लिये मुफ़ीद हों निकाल लें। उनको पढ़ कर सुनायें, सही बात में डरने की ज़रूरत नहीं, हमारे यहां एक फ़र्ज़ अदायगी सी रह गयी है। ऊँघे और चले गये। यह ख़ता तालीम देने वालों की है, और फिर उनकी भी नहीं क्योंकि उनके पास इस हालत से ज़्यादा था भी नहीं जो देते।

अब मैदान में आयें। दिल खोल कर ज़रा तुम्हारे सामने हो लें तब कैफ़ियत मालूम होगी कि वाक़ई धोखे में थे। मैंने एक बात ख़ास जो बड़े-बड़े बुर्ज़ुगों में पायी नहीं जाती अज़ीज़ रामचन्द्र को यह बख़्शी है कि उनके पास बैठने से इस क़िस्म के फ़ैज़ की निस्बत होगी कि लोग न उकतावेंगे और न भागने को जो चाहेगा। ये और बात है कि ब्रह्म विद्या किसी की क़िस्मत में न हो और वह जबरन् क़हरन ठहर गया हो, भागने का इरादा कर ले। एक बात जो इनमें मौजूद है वह बताता हूं। इनसे जो फ़ैज़ जारी होता

है वह इस तरह से होता है जैसे एक सोता हुआ आदमी जिसकी तमाम इन्द्रियों ने ख़ाबीदा सूरत इख़्तियार कर ली हो और वो इतिफ़ाक़ से कहीं ख़्वाब में रूजूअ हो जाये। ये बात मुझमें मौजूद थी। इस क़िस्म के फ़ैज़ हर जगह नहीं मिलते। बाबरकत वो लोग हैं जिनको ऐसों की सोहबत नसीब हो। ज़्यादा मैं क्या कहूं तर्जुबा कर लें। नक़्शा सामने आ गया।

ये ज़िन्दगी में मौत की हालत है जो हर शख़्स को नसीब नहीं होती। बड़े-बड़े औलिया इस बात के लिये तरसते चले गये हैं।

17-8-44

मुझसे फ़ैज़ लेने का तरीक़ा यह है कि मुझको तव्वजो देना शुरू करे। मगर यह तरीक़ा Confidential रहेगा। इसमें एक बात और है जो शख़्स बराहे रास्त मुझसे ताल्लुक़ रखते हैं और मुझसे वाबस्ता हैं, वही फ़ैज़ ले सकेंगे। हमा-तमा इससे फ़ायदा उठा नहीं सकते। यह तरीक़ा मुझको क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने बतलाया था। इसमें एक और बात है। जो साहब इस तरीक़े को नहीं जानते हैं और मेरी तरफ़ ख़्याल दौड़ाते हैं (मोहब्बत शर्त है) फ़ायदा उठा लेते हैं।

मदन मोहन लाल ने मुझसे कहा कि अब के लाला जी साहब को ख़ूब लूटूंगा।

फ़रमाया= उनको (R.C. को) लूटने की ज़रूरत नहीं। उनकी तरफ़ खुली हुई धार आती है। क्योंकि तुम आज Irritative इसलिये मैं भी Irritative हो गया। वरना इन छोटी-छोटी बातों का मैं कभी ख़्याल नहीं करता। अपनी आदत छोड़ो। मैं इस हद तक irritation नहीं चाहता। आज तुम्हारा irritation बहुत देर तक रहा। इतना नहीं रहता था। यह इस वक़्त मैंने तुम्हारी आदत बरती कि जब तुम ख़फ़ा हो जाते हो, तो खाना नहीं खाते। अगर तुम नहीं दूर कर सकते तो इस irritation को मुझे सौंप दो। जब तुम्हारे यह इख़्तियार में है कि तुम Cool भी रह सकते हो तो ग़ुस्से के वक़्त उसका ख़्याल रखा करो। ग़ुस्सा कोई बुरी चीज़ नहीं है, उसका इस्तेमाल जायज़ होना चाहिये। इन्सान को ज़िन्दगी के उसूल ऐसे खुशगवार बनाना चाहिये कि हर तरफ़ से ख़ुशइख़लाक़ी की झलक नज़र पड़े। ऐतदाल पसन्दी ज़्यादा मुफ़ीद रहेगी। इससे मेरी मुराद यह है कि जमीअ हवासे ख़म्सा ऐतदाल पर क़ायम रखते हुये irritation

क़ायम रखा गया है। वजह मैं बतला चुका हूं। ये तक़ाज़ा इन्सानियत है कि बाज़औक़ात उसमें ज़रा ज़ोर पैदा हो जाता है। वजह यह है कि बीज नाश नहीं किया गया।

पहला उसूल:- बच्चों की परवरिश और में परदाख़्त मसरूफ़ रहे इस तरीक़े से कि दिल में दाग़ न आने पावे। उनकी मोहब्बत इस तरह पर असर न करे कि तकलीफ़देह हो।

दूसरा उसूल:- औरत को अपना मद्दगार बना ले। और यह समझ ले कि गृहस्थी का एक पहिया हम हैं और एक वो है।

तीसरा उसूल:- अपने मौहल्ले वालों से रब्त-व-जब्त इस तरीक़े पर क़ायम रखे कि वो अपने ही नज़र पड़ें। और वो भी उसको अपना समझें। यही उसूल दोस्तों के साथ बरतना चाहिये।

चौथा उसूल:- रिश्तेदारों से ताल्लुक़ात इस तरह से क़ायम रखे कि उसकी रस्सी (Rope) कटी हुई मालूम हो। हर हाल में उनके दर्द में शरीक रहे। और यह बात सबके साथ होना चाहिये। रुपये पैसे के लेन-देन से परहेज़ करे। अगर उनको ज़रूरत पड़ जाये तो उनको इतने रुपये से मदद कर दे कि वापसी न होने पर अफ़सोस न मालूम हो और ताल्लुक़ात में कमी न पड़े।

पांचवां उसूल:- अपने हाकिम से ऐसा बर्तावा रखे कि उसको यह मालूम न हो कि मातहती के उसूल से यह शख़्स गिरा हुआ है और उसके ऐवज़ में जो कुछ मुआवज़ा मिल जाये, ख़ुदा की तरफ़ से समझे।

छठा उसूल:- अपनी राय ऐसी जगह न दे जहां ये समझ में आये कि लोग उसकी वुक़अत नहीं करेंगे। मरीज़ को दवा बताना, ऐसी हालत में जबकि उसका Case serious हो। उस वक़्त तक न दे जब तक यह यक़ीन न हो जाये कि वो हाथ से जा रहा है। शाहजहाँपुर में यह आदत बहुत है।

अपनी ख़िदमत उस हद तक ले कि उसका ऐवज़ भी दे सके। मजबूरी दूसरा सवाल है। किसी शख़्स को अपने राज़ से वाक़िफ़ न करे और न उसको ये यक़ीन होने दे कि यह राज़ हमसे छुपाया जा रहा है। सादा ज़िन्दगी, बेलौसी के साथ व्यतीत करे। जहां तक हो सके **फ़िक्र** को पास न आने दे, और अगर आ ही जाये तो उसको **ख़ुदा** की तरफ़ से समझे और उसका शुक्राना अदा करें। खाने पीने के मामले में एक-रस

बन जाये, और अकिल हलाल का ख़्याल रखे।

मुताल्लिक़ा गुरुः- अपने गुरु को सब कुछ दे बैठे। इससे मेरी मुराद रुपये पैसे से नहीं है। और उसका अपना समझ ले। गुरु माता का अदब क़ायम रखे और उनको बड़ा समझे। बल्कि सबसे अच्छा तो यह है कि इन सबको घर का मैम्बर समझ ले। और फिर जो उसूल इजाज़त दें, पैरवी करे। इसमें गुरु का लड़का भी शामिल है।

बिरादराने सतसंगः- बिरादराने सतसंग के साथ ऐसा बर्तावा होना चाहिये जो ख़ुश-गवार हो और उनको तरक़्क़ी दे। Direct opposition बड़ी ख़राब चीज़ है। अगर कोई शख़्स इन उसूलों की पाबन्दी कर ले तो उसकी ज़िन्दगी शानदार नज़र आयेगी। और दुनिया किसी हालत में उसे तीरा-व-तार नज़र न पडेंगी! मैं बड़े तजुर्बे के बाद इन उसूलों पर आया हूं और ये उसूल मेरे ख़ुद साख़्ता हैं और इनको वक़्तन फोक़्तन कहता भी रहा हूं।

मगर इनकी पाबन्दी कोई न कर सका। **नफ़्स** के साथ हट करना जायज़ है। औरतों की तालीम के वास्ते तुम वही तरीक़ा रखना जो मैंने रखा। इससे मैं हमेशा डरता रहा।

मदन मोहन लाल ने कहा कि "मेरे दिल में ग़ौस साहब की यह बात, कि क्या हिन्दू बुर्ज़ुग भी ग़ौस-उल-आज़म हो सकता है; सुनकर ये ख़्यालात मोजज़न हो रहे थे कि क्या प्राचीन हिन्दू बुर्ज़ुग इन्तिहाई तरक़्क़ी न कर सके और ना- मुकम्मिल ही रहे। गोया हिन्दू धर्म नामुकम्मिल और कम दर्जे का है?

फ़रमाया= ग़ौस-उल-आज़म सिर्फ़ एक ही हुवा करता है। यह दर्जा हर एक को नसीब नहीं होता। बल्कि ग़ौस भी कमियाब हैं। इससे कुछ ज़्यादा तादाद में कुतबुलअक़ताब हुआ करते हैं। कुतुब अलबत्ता ज़्यादा हैं। वह भी उंगलियों पर गिनने लायक़। कुदरत का निज़ाम सब इन्हीं लोगों के ज़रिये से होता है। प्राचीन ज़माने में जबकि हिन्दुओं का वक़्त था उस वक़्त भी इन्तज़ाम ऐसा ही हुआ करता था। मगर तरीक़ा जुदागाना था। वो लोग जब ज़रूरत पड़ती थीं ज़ात की तरफ़ रूजूअ होकर उसकी कैफ़ियत को हरकत में ले आते थे। उन्हें ये अन्दाज़ा था कि उस वक़्त क्या बात होना लाज़मी है। उसी के मुताबिक़ वह कुदरत से मदद तलब करते थे। और बराहे रास्त वह शक्ति काम करती थी। ज़माना गिरता गया और वो ताक़तें ज़ायल होती गयीं। यहां तक कि वो सिलसिला भी जाता रहा। इसके बाद कुदरत दूसरे तरीक़े में मौजज़न हुई। और तरीक़ा सूफ़िज़म लोगों के ख़्याल में आने लगा। उसकी बुनियाद पड़ गयी, उस तरक़्क़ी

को जिला देने के लिये वक़्तन-फौक़्तन बुर्जुग आते रहे। यह बात जरूर है कि जो प्राचीन हिन्दू बुर्ज़ुगों ने तरक्कियां हासिल कर ली अब अमर मुहाल है उनकी पहुंच बराहे-रास्त ज़ात तक थीं, और अक्सर यह भी हुआ है कि अपने जिस्म के ज़र्रात अलहदा करके खुद परवाज़गी ज़ात तक की है, और उससे काम लिया है। सूफीज़्म उसके मुकाबले में द्वयम दरज़े का है। खाली से बेगार का मज़मून है। अब कुदरत ने इस तरफ पल्टा खाया लिहाज़ा अब उसको मूफतनत समझना चाहिये। अगर हकीकत पूछते हो तो मैं आज ज़िक्र करता हूं, जो हिन्दुओं ने तरक़्क़ी की है उसकी मिसाल नहीं बाबू मदन मोहन लाल ने उस वक्त यह कहा था कि मैं किसी जगह पर यह कह चुका हूं कि खुदा कुछ नहीं करता। इसकी कैफ़ियत अज़ीज़ राम चन्द्र को दिखला दी गयी। और उसको मलका दे दिया गया। और यह भी हिदायत की गयी कि इस क़िस्म के नक़्शे को हकस और नाकस के दिल में न उतारें जिसमें यह बात मौजूद हो उसको अलबत्ता यह दिखलाया जा सकता है। इसमें (R.C.) यह बात पेश्तर ही से मौजूद थी। इस लिये उसको (R.C.) समझा दिया गया। और यह राज़ भी है और दहरियों के असूल से मिलता जुलता है। इस मादे को हरकत देने के लिए जो कुदरत में वायवरेशन की शकल में मौजूद है इसमें वही अच्छा काम कर सकता है। जिसके पास खुद हरकत मौजूद हो। बहुत से राज़ कुदरत जिनसे मैं ज़िन्दगी में नावाकिफ़ था अब खुले हैं, तुमसे मैंने वो भी ज़ाहिर कर दिये। औसुलाज़्म मुद्दत दराज़ में कहीं इत्तिफ़ाक से हो जाया करता था। मैंने अपनी ज़िन्दगी में दुआ की थी "कि खुदाया तेरी कुदरत में कामला" जो एक मुद्दत मदीद मैं मैज़जन होती है। क्या जल्द-जल्द नहीं हों सकती बड़े गौर और खोज के बाद मुझकों रौशनी मिली थी कि उन बन्दों के हाथ में अब भी हो सकता है जो अपनी आप को कुर्बान कर चुके हैं। उस वक्त मेरा यह दर्ज़ा शुरू हो चुका था, और मेरा दिल मख़लूक़े खुदा की मुहब्बत से लबरेज़ हो चुका था। तरकीबें सोचने लगा। इसमें हमारे हज़रत क़िब्ला ने मद्द की और खुदा ने वो दिन दिखा दिया। इस रूतबे की हक़ीकत मैं ही जानता हू। या वो जो मुझ पर निसार हो चुके हैं। मुझे इस हालत पर भी चैन नहीं पड़ा, कदमें हिम्मत हर वक्त आगे ही बढ़ता रहा। नैबत यहां तक पहुंची कि इससे भी बेहतर सूरत इख़्तिहार में आ गयी, और मेरा दिल चाहता था कि सब इस हालत को पहुंचे मगर मिसरा- होता है वही खुदा जो चाहे।

अज़ीज़ राम चन्द्र भी अभी उनकी हकीकत पूरे तौर से न समझ सका वजह यह

है कि उस बेचारे को इतनी फुरसत ही नहीं मिलती कि उसमें घुस कर मोती निकाले और आप लोगों के सामने पेश करे। उसको उसकी मसरूफियत का जो दसरों के लिए है। पता ही नहीं चलता। वरना लोगों को यह ख़्याल पैदा हो सकता है कि मुद्दीयान के गुलत्कारियों को दूर करने के लिए उसके दिमाग पर किस क़दर ज़ोर रहता है। मुझे अक्सर उसके (R.C.) दिमाग की थकान दूर करनी पड़ती है। यह वह काम कर रहा है जो माद्दी ताक़त नहीं कर सकती। मगर मैं समझता हूं कि ये इसी काम के लिये पैदा किया गया है कि अपना दिलो दिमाग उन्हीं की बहबूदी में सर्पकर दें। इसका ईनाम उसको सिवाय मेरे कोई नहीं दे सकता। यह गुरु बनने की मुसीबतें हैं। यह पदवी कोई आसान नहीं। जिसके लिये लोग रोया करते हैं। कानपुर में इज़ाजत दो सौ रुपये में मिलती है। अगर कोई ये काम जो ऊपर लिखा है करके दिखला दे तो मैं कई सौ रुपये देने को तैयार हूं। जो कुदरती अच्छी बातें किसी में मौजूद होती है, मैं उनको डवलप करते हुये चलता था। नन्हे ने उसकी गर्दन मरोड़ कर चलते थे। तुम मेरा ही तरीक़ा रखना।

18.8.44

तक़ाज़ाये बश्रियत है कि अपने आप को बन्दा और उस को माबूद समझे। लोग इस हक़ीक़त को छोड़ कर ईशर (ईश्वर) को काम निकालने का आला समझ लेते हैं। और यह ही मिसाल देवता और गुरु के साथ आयद हो सकती है। मैं इस के बारे में लिखा चुका हूं। मिसाल= फ़ोटो मेरे खैंचे, लोगों ने उस पर फूल और हार चढ़ाना शुरू कर दिये। तुम्हारा कारिन्दा गुरु के खड़ाऊं पूजने लगा। यह पशुओं की मिसाल में आते हैं।

असल में जिस चीज़ का परतौ है, उस में लगाव नहीं रहता। असलियत की ख़बर नहीं रहती। ज़माना गुज़रने पर इन्हीं ठोस चीज़ों की पूजा शुरू हो जाती है। विवेक शक्ति उस को कहते हैं कि मालिक और बन्दे में जो धार आ रही है, उस को समझने की कोशिश करे। और यह ही असल बात है। यह उम्दा क़िस्म के विवेक की तारीफ़ में आती है। इसके सब मातहत हैं।

19.8.44

मेरी आरज़ू है कि तुम बाबू मदन मोहन लाल जैसा एक आदमी और बना लो।

मैंने डॉक्टर कृष्ण स्वरूप साहब जयपुर को suggest किया।

फ़रमाया= वह इस योग्य नहीं। मगर उन की कुछ ऐसी Broody नेचर है कि वह कुछ काम करना ही नहीं चाहते, इस लिये बेकार साबित होंगे। अगर वह active बनने का वायदा करें और काम को अपने सिर पर रख लें तो हर्ज़ नहीं है। मैंने जो भी Works लिखी हैं उनमें उन बातों को expand कर दिया है जो अवाम की समझ के बाहर हैं। जिस वक़्त इस का छपाने का इरादा किया जायेगा, मैं एक-एक करके सब बता दूंगा। कि इसमें मेरी originality है और इसमें points को expand किया है। बहरहाल दोनों बातें मुफ़ीद होंगी, अगर कोई उन पर अमल करे। मैंने उन के छपाने का इरादा किया था, मगर थोड़ी पूंजी होने की वजह से इस काम को न कर सका। Publication जो मेरे बाद हुईं हैं, वह मेरी तबियत के ख़िलाफ़ हैं। उनके छपवाने का मन्शा कुछ और ही था। और यह लोगों के फांसने के लिये जाल था जिस में अपनी अहमियत और क़ाबलियत भी शामिल थी। इख़्तियार छपवाने का और जुम्ला इन्तज़ामात का सिर्फ़ तुम ही को है। मैंने ऐसे-ऐसे क़ीमती नोट तैयार किये हैं जो सब जग्गू के पास मौजूद हैं। कि लोग जब उनको देखेंगे तो अश-अश करेंगें। इस मायनों में मेरा अनुभव इस क़दर तेज़ था कि ऐसा कभी नहीं हुवा कि मैंने असल बात सही तौर पर न निकाल ली हो। ग़लती का शुबह उस पर बाक़ी नहीं रहा। बाबू मदन मोहन लाल ख़ूब किया कि इन तहरीरात को छपने नहीं दिया और वह ऐसा ही करते रहें। जब तक उन के छपने का वक़्त न आ जाये। मैंने रूहानियत के साथ-साथ दौलत भी तुम्हारी तरफ़ ढकेल दी है। लिहाज़ा तुम्हें इस के छपवाने में कोई तकलीफ़ न होगी। मैं इस काम के लिये बाबू मदन मोहन लाल से बेहतर कोई और आदमी तजवीज़ नहीं कर सकता। वह इसको मेरी service समझें। ख़ुदा इस का उजर देगा। सब से पहली बात तो यह है कि तुम्हारे बिरादरे अज़ीज जग्गू तुम्हारे क़ब्ज़े में आ जावें, फिर यह बात मुमकिन हो सकेगी।

मैं समझता हूं कि तुम रुपया मेरी ख़ातिर और अपनी ज़ात भी मेरे लिये न्यौछावर के लिये तैयार हो। मगर तुम पर मैंने इस क़दर बार छोड़ा है कि ख़ुदा उसको पूरा करेगा। एक शख़्स सब काम नहीं कर सकता। उसके मद्दगार होना लाज़मी हैं। जो

काम कि कोई नहीं कर सकता, वह तुम्हारे सुपुर्द किया गया। और जो काम कि तुम नहीं कर सकते वह दूसरे के सुपुर्द होना चाहिये। इस वक़्त में, मैं अपना दिल खोल कर नहीं दिखला सकता कि मुझे बाबू मदन मोहन लाल से किस क़दर मुहब्बत है। और लोगों ने साथ नहीं दिया वरना यह ही बात दूसरों के साथ भी होती। मैं समझता हूं कि वह बुड्ढे हैं और ज़ईफ़ी का आलम है। घर की बातों से नालाँ हैं। मगर साथ-साथ मैं यह भी कहता हूं कि यह बातें उन के लिये मुफ़ीद साबित हो रही हैं और मैंने उनके लिये इन्तज़ाम कर दिया और कर रहा हूं। वह ज़रा भी अपनी तबियत में हिरासाँ न होवें। वक़्त सब कुछ करा लेता है। क्या रामचन्द्र जी महाराज की सवानेह-हयात इस बात को नहीं बतलाती कि युग पुरुष मुसीबत से नहीं बचते। अज़ीज़ रामचन्द्र का एक special केस (case) है, उसकी तश्बीह हर जगह नहीं दी जा सकती।

अगर बाबू मदन मोहन लाल को दौलत की ज़रूरत है तो मैं दे सकता हूं। हालांकि मैंने उनके गुज़ारे के लिये इन्तज़ाम कर दिया है जो अन्क़रीब रोशन होगा। और मुमकिन है कि हो गया हो। मैं फिर कहता हूं कि दोनों दौलत एक साथ नहीं मिलतीं। मेरी मिसाल सामने है। ख़ुदा ने जब मुझ को मुलाज़मत के ज़रिये सब कुछ दिया तब भी मैं पस-अन्दाज़ न कर सका। बल्कि विसाल के बाद क़र्ज़ा छोड़ा।

रामचन्द्र के लिये हमारे क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की यह तहरीक थी कि इसको दोनों दौलतों से भरपूर कर दो। वजह यह थी कि उसने सब चीज़ें होते हुये अपने आप को ग़रीब और बेनवा समझा। उसका कभी दौलत की तरफ़ ख़्याल ही नहीं गया। उसने सिर्फ़ मुझ ही को अपना समझा। उस को जो कुछ ख़ुदा ने दिया है या आगे देगा, हमेशा दूसरों की ख़िदमत के लिये समझा। हत्ताकि मुझे याद है कि एक वक़्त उस पर ऐसा पड़ गया कि वह अपनी बीवी और बच्चों के लिये कपड़े भी न बना सका, मगर दूसरों के लिये उसने इन्कार न किया। यहां पर यह सवाल नहीं है कि उस का फ़ेल जा था या बेजा। रूहानियत के साथ-साथ उसकी दौलत की भी तरक़्क़ी हो रही है। मैंने यह बातें ख़ाली ही नहीं कीं बल्कि तवज्जोह भी देता गया, जैसा कि मेरा दस्तूर था

मैं बाबू मदन मोहन लाल के समझाने के लिये यह कहता हूं कि मालदार आदमी कहीं मुश्किल से एक निकलता है जो परमारथ में भी तरक़्क़ी करे। और अगर निकल जाता है तो ऐसा भरपूर होता है कि बायद-व-शायद। यह ईशर (ईश्वर) की देन है।

मिस्राअ= **मुख़्तार है, किब्रिया बना है।**

ज़माने की नैरंगी अब मैं तुमको सुनता हूं। यह तजुर्बे की बात है। रामचन्द्र ने सब को अपना समझा मगर उस बेचारे को इस का एवज़ नहीं दिया गया। और अगर कुछ दिया भी गया तो लोगों की ज़ाती ग़रज़ शामिले हाल थी। उससे वाक़ई तौर पर किसी ने मुहब्बत न की। बाबू मदन मोहन लाल की ज़ात को छोड़ता हूं। और उसको सब ने भाड़े का टट्टू बनाया। वह अपनी हस्बे-इस्त्ताईयत हर ख़िदमत के लिये तैयार रहता था मगर उसकी किसी ने दाद न दी। और लुत्फ़ यह है कि इसकी समझ बावजूद इस क़दर रसा होने के, उसने अपने दिल में यह ख़्याल नहीं आने दिया और अपने आप को कमज़ोर समझा। हमारे बरर्ख़ुदार जग्गू की ख़ुद मिसाल सामने है कि उन्होंने उस से इतनी मुहब्बत न की जिसका कि वह मुस्तिहक़ था। हालांकि मैं दावे के साथ में कह सकता हूं कि दुनिया उसका साथ छोड़े दे मगर यह नहीं छोड़ सकता और इस का एहसास उनको भी है। यह बात जग्गू के शान व शायाँ न थी। वह मेरी औलाद हैं। इसलिये उन से कहने का और राहे-रास्त पर लाने की तल्क़ीन करने का मेरा हक़ है। औरों को मैंने उन्हीं पर छोड़ रखा है। अब फ़रमाईये कि जिस की ऐसी हालत हो उसकी कुदरत मदद क्यों न करे। मेरा बेकार समाअ-ख़राशी करने का मक़सद नहीं है। बल्कि लोग इस से फ़ायदा उठायें कि आला दर्जे के संस्कारी के, जो कमयाब हैं, यह लक्षण हुवा करते हैं।

एक बात ऊपर के मज़मून में लिखने से रह गई है। वह यह है कि इन सब बातों को करते हुये उसने (R.C.) अपने हवासों को इस क़दर Dormant कर दिया था कि उसको इस का एहसास भी नहीं होता था। यह एक बहुत ख़ास बात है। मेरी ग़रज़ महज़ उसकी तारीफ़ करने की नहीं है। अगर तारीफ़ का ख़्याल किया जाये तो जो कुछ कहा जाये, वह थोड़ा है। बल्कि ग़रज़ यह है कि लोग ऐसा बनने की कोशिश करें ताकि गुरु की दया व कृपा अपनी तरफ़ मब्ज़ूल या नाज़िल कर सकें।

उसूलों की पाबन्दी करने का, जो लिखाये जा चुके हैं, सिर्फ़ एक तरीक़ा बेहतरीन है। मगर बहुत मुश्किल भी है। वह यह है कि अपने जुमला जज़बात को ख़ामोश कर दे। किसी से कुछ लगाव न रखे। इस का मज़ा किसी वक़्त अज़ीज़ रामचन्द्र की सोहबत में आ जायेगा। और आ चुका भी है। (मदन मोहन लाल से मतलब है)।

अस्नाए गुफ़्तगु में जो तज़किरा था (दरमियान बाबू रामचन्द्र साहिब और मदन

मोहन लाल) कि ग़फ़्फ़ार साहिब ने रूह को हुक्मे ख़ुदा बताया है।

तुम्हारा (R.C.) यह ख़्याल पैदा हुवा कि यह दोनों लफ़्ज़ यानी हुक्म पहले और ख़ुदा बात को लाया जाता है, यह ग़लत है। यह ख़्याल तुम्हारा बिल्कुल ठीक है। अगर बोल-चाल में बजाये हुक्मे ख़ुदा के ख़ुदाई हुक्म कहा जाये तो यह गुत्थी सुलझ जाती है। ख़ुदा के लग़वी मानी यह हैं कि जो ख़ुद-ब-ख़ुद मौजूद हो गया हो, और चीज़ें उस के बाद नमूदार हुई हों। जब कोई चीज़ जिसमें शाहाना ताक़त होती है, हुवैदा होती है तो कारोबार चलाने के लिये जो सब से पहली बात उससे निकलती है, वह हुक्म है। मुसलमानों ने इसी को **कुन** कहा है। हिन्दुओं ने ख़ुदा के बाद की ताक़त को माया या महामाया के नाम से मौसूम किया है। वह छौब (क्षोभ) जो ज़ात में पैदा हुवा बज़ाते-ख़ुद मुत्तेहरिक़, ग़ैर मुत्तेर्हीरक होते हुये कहा जा सकता है। उस के पैदा होते ही Viberation शुरू हो गई। यह माया की आख़री हालत है। और फिर ताक़तें परवरिश व परदाख़्त लिये और पैदायश करना शुरू हो गईं। मज़मून तूल हो रहा है, इस को इख़्तसार के साथ मैं यूँ कहता हूं कि ख़ुदा के बाद जो ताक़त सब से पेश्तर निकली थी, वह ही हुक्म या अव्वल इरादा था। इससे आगे मैं क्या कहूं! तुम्हारे, वह बात ख़्याल में आई जो आज तक किसी के ख़्याल में नहीं आई थी। ख़ुदा करे तुम को मख़लूक़ ख़ुदा की service का मौक़ा मिले और मेरा नाम जिन्दा करो। आमीन!

यह बात सुनकर मैं ख़ुशी में उछल पड़ा और इस बारीकी के सद्क़े। तुमसे वह मरहले तय होंगे जिन के लिये लोगों की अक़्ल हैरान रहेगी। Points को Expand करने की आदत बनाओ।

फ़रमाया= पढ़ते रहो, इस से सब कुछ हो जायेगा। तुम्हारे लिये किसी क़िस्म का लिट्रेचर हो, सब पढ़ने की इजाज़त देता हूं। अख़बार पढ़ने की तुम्हारे लिये मुमानियत नहीं है। तुम वह ही बातें उस में चुनोगे जो तुम्हारे लिये मुफ़ीद होंगी। मगर यह हर शख़्स के लिये इजाज़त नहीं है। और न तुम इजाज़त देना। तुम्हारी इबारत मेरी तर्ज़ पर जा रही है और यह बात एक अरसे से है। तुममें तुम्हारे वालिद की क़ाबलियत का भी असर है। और उनसे बस यह ही असर तुम्हें मिला है। बाक़ी जो दो-एक कमज़ोरियां हैं वह भी विरसे में तुमको मिली हैं। अफ़सोस! तुम्हारे इस माद्दे को किसी ने नहीं उभारा। अगर मैं राहबर न होता तो लोग तुम को तहतुलसरा तक पहुंचा चुके होते। अगर इत्तफ़ाक़ से यह हो जाता तो मैं उस जज़्बे को जो मेरे दिल में पैदा होता,

इज़्हार नहीं कर सकता। इस माद्दे को ठोस बनाने की कोशिश की गई। अहमक़ों ने यह न समझा कि मेरा सज्जादा नशीन **अगर बेहतर सूरत अख़्तियार करे तो उनकी भी नामवरी थी और उनका फ़र्ज़ भी था कि उस को ऐसा बनाते कि मेरा नाम भी रोशन होता। यह मेरी ख़िदमात का मुझे सिला दिया गया है। इस गुनाहे कबीरा की कभी मुआफ़ी न होगी। मैं किस के सामने रोऊं। मेरे साथ जो कुछ किया गया, उस की भी दुनिया में मिसाल नहीं। (मुन्शी चचा के लिये)**

हमारे क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की शाख़ तुम से ख़त्म होती थी। उन्होंने ग़रज़ेकि कोई कसर उठा नहीं रखी। यह मज़मून भी मुतनब्बी बाबू को दिखा देना।

मुझे औरतों का एक मश्ला याद आया-

पाल पाल, तोहे होईयें काल।

अर्थात= (तुम हमारा पालन पोशन करो, हम तुम्हारी मौत बनेंगे)

मेरे मामलात में यह बिल्कुल सही साबित हुवा। जिसका जी चाहे इसको देख ले। यह सब खुदा की महरबानी थी कि उसने मेरे नाम को ज़िन्दा रखा। मेरा ज़िन्दगी में यह उसूल रहा=

ला तक़्नुतुवा मिन रहमतुल अल्लाह। (अर्थात= परमात्मा की रहमत से कभी निराश न हों। Donot feel disappointed from the Mercy of God).

तुम भण्डारे में खुले तौर पर Challenge दे दो। देखूं तो कौन कितने पानी में है और कौन मुक़ाबले पर आता है। मैं तुमको उस वक़्त ऐसी हालत पर खड़ा कर दूंगा कि तुम्हारी एक निगाह की ताक़त कोई बरदाश्त न कर सकेगा। और यह वह हालत है जिस से मैंने तुम्हारे कहने से तुम को उतार दिया। अगर इस की तरक़्क़ी की यही हालत रहती तो किसी को बरदाश्त की ताक़त ही नहीं होती। अब भी उस हालत पर जाना तुम्हारे हाथ पर है मगर मैं तुम्हारा ऐसा ख़्याल पैदा होने नहीं देता। और अगर ज़रूरत पड़ जाये तो उससे आगे फिर मेरी ताक़त भी है जो हर वक़्त तुम्हारे साथ है। खुदा मुझ को उस ताक़त के दिखलाने का मौक़ा न दे। मैं इस मेहनत का बाबू मदन मोहन लाल को अजर दे दूंगा। यह वायदा करता हूं।

डॉक्टर श्री किशन और चर्तुभुज सहाय साहब को लिख दो कि अगर एक हफ़्ते

के अन्दर अपने आप को न संभाला तो मैं कुल विलायत आप की सलब कर लूंगा। मज़मून इस तरह पर होना चाहिये। कि आप के अफ़आल बारे-ख़ातिर हो रहे हैं। अब बरदाश्त की ताब नहीं है। लिहाज़ा आप को आगाह किया जाता है कि आप अपने अतवार को एक हफ़्ते के अन्दर संभाल लीजिये वरना मुझे हुक्म दिया गया है कि उनकी कुल विलायत सलब कर ली जाये। और मैं ऐसा ही करूंगा। और इस के बाद आप और भी सज़ा के मुस्तहिक़ होंगे। ताकीद जानो। आप की इजाज़त मुन्क़ता हो चुकी है और यह आपके फ़लों का नतीजा है। Diplomacy वहां चलती है जिसके आंखे न हों। यह सिर्फ़ डॉक्टर चर्तुभुज सहाय को लिखा जाये। नीचे लिखना- ख़ादिम-पीर रामचन्द्र। दोनों ख़त रजिस्टर्ड जावें। अगले इतवार को मैं तुम्हें सलब करने का आर्डर दे दूंगा, अगर यह न संभले।

हज़रत मूसा अलै० ने तजल्ली देखी थी। इस की बड़ी तारीफ़ है। मगर निगाहे ग़ौर से देखा जाये तो वह माया की बेहतरीन हालत थी। उसकी क़दर इस लिये ज़्यादा हो गई है कि एक पैग़म्बर ने उसका एहसास किया था। यह उस मुक़ाम की तजल्ली थी जो महामाया के मुक़ाम पर ज़ात का परतव पड़ता है। अगर कोई शख़्स इस से आगे बढ़ कर देखे जहां कि घाटियों और वादियों का ख़ात्मा होता है तो वह लहलहा उठे। यहां पर सब मज़मून ख़त्म होते हैं। एक भाव फ़क़त रह जाता है और यह ज़ात तक पहुंचने का दरवाज़ा है। अभी देहली दूर है। तुम्हारी बड़ी ख़्वाहिश थी कि इस तजल्ली को देखते और तुमने इस तरीक़े पर ख़्वाहिश की थी कि मैं दिखाने पर मजबूर था। हालांकि तुम्हारा क़दम उससे आगे बढ़ चुका था।

मेरा मन्शा इस बात के लिखाने का यह है कि तुम्हारी समझ में आ जाये कि यह चीज़ उसके मुक़ाबले में, जो तुम्हें हासिल है, कुछ हक़ीक़त नहीं रखती। यह हक़ीक़त है जो मैंने बयान की। इससे आगे बयान करने में ज़बान क़ासिर है। यह मज़मून मैंने ज़ात की हैसियत से लिखाया है। मतलब सिर्फ़ तुम्हें समझा देना था। बाबू मदन मोहन लाल भी इससे आगे क़दम रख चुके हैं। और कोई (मुरीदैन) शख़्स अभी तक इस मुक़ाम तक नहीं पहुंचा।

तुमको बराहे-रास्त भी हुक्म मिल सकते हैं। मगर उसके समझने की क़ाबलियत नहीं है। यह क़ाबलियत जिस्म छोड़ने के बाद पैदा होगी। इस वक़्त नामुमकिन है।

मेरी ज़ात हमेशा तास्सुब और जानिबदारी से बरी रही है। अगर सच पूछो तो

भारतवर्ष में बहुत से मूसा (अलै०) गुज़र चुके हैं। हिन्दुओं की तबाही का बायस एक यह भी हुवा है कि लोग मोज्ज़ा पसंद बन गये थे और उनके सामने बस यह ही हक़ीक़त थी।

22-8-44

तुम्हारी ज़ात से बहुत घनी निस्बत हो चुकी है और क़दम आगे जा रहा है। अब तुम मेरी ही हालत पर आ रहे हो। और आ चुके हो। अगर पहले वाली बात क़ायम रखी जाती तो यह हालत लाना मुश्किल हो जाती। मौजूदा लोगों में कुछ लोग अच्छे भी हैं। और कुछ तुमसे कतरा भी जायेंगे, उनसे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं रहेगा। मास्टर रामदयाल के लिये मदन मोहन लाल दुआ किये जायें वरना आख़िर में, मैं तुमको हुक्म दूंगा।

नसीहतः- मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूं कि जो ख़्याल किसी नेक काम के लिये आवे, उसको फौरन कर डालो। यह न इन्तज़ार करे कि अभी वक़्त बहुत बाक़ी है, फिर कर लूंगा।

सवाल (R.C.) छीर (क्षीर) सागर में बिश्नु भगवान सैन (शयन) कर रहे हैं। और लक्ष्मी पैर दाब रही है और शेष नाग के ऊपर बैठे हुये हैं?

फ़रमाया= यह सब इस्तयारा है। छीर सागर से मतलब रूहानियत के समन्दर से है और सांप से मतलब नफ़्स से है। माया लक्ष्मी है जो पैर दाबती है। जो शख़्श नफ़्स पर क़ाबू पा लेता है, माया उसी की ग़ुलाम हो जाती है। तुम्हारे कहने पर मैंने मायनी पहना दिये, बाक़ी यह सब कारस्तानी ब्राह्मणों की अपनी प्रतिष्ठा के लिये है। बाक़ी इस क़िस्म का कहीं आकार भी क़ुदरत में कहीं नहीं है। ज्यों-ज्यों ज़माना बिगड़ता गया ठोसता बढ़ती गई। यहां तक कि लोगों की अक़्ल पर पत्थर पड़ गये और इन पत्थरों ही को यह सब कुछ समझने लगे। यह ज़वाल की निशानी है। उम्मुलदिमाग़ को कैलाश पर्वत कहा जा सकता है जहां से कि रोशनी नफ़्स को पहुंचती है।

डॉक्टर चर्तुभुज सहाय ने सब धान बाईस पंसेरी के समझ लिये। मैं उन की मद्द करता रहा जिस वक़्त कि मुख़ालिफ़ लोग अपने ज़ोरों पर थे। तुम्हारी बात की वुक़अत इस हैसियत से करना चाहिये थी (अगर कोई ख़ास बात तुम्हारी निस्बत उनको मालूम

न थी) कि तुम उन के भाई थे और उन्हें ख़ुश होने को मौक़ा था। उनको कुल बिरादराने सतसंगी को मुहब्बत की नज़र से देखना चाहिये था और उन की ख़ूबियां बढ़ाने में मद्द देना चाहिये था। अगर किसी में ख़ास ख़ूबी होती तो ख़ुदा से दुआ करके उसके बढ़ाने की कोशिश करते और वह उनके फ़ायदे की बात अगर कहता तो मानना चाहिये था। यहां अहमियत का कोई सवाल नहीं है। मेरी निगाह में सब यकसाँ हैं या दूसरे मायनों में, मैं मुहब्बत की नज़र से सब को देखता हूं। इसकी उनको पैरवी करना चाहिये थी। मैंने उनके पास जाना छोड़ दिया है। और यह बड़े अफ़सोस की बात है कि जब मेरे ही लोग मेरे काम में रख़ना अन्दाज़ हों। अगर कहीं इन लोगों (श्री किशन लाल, चर्तुभुज सहाय) को तुम्हारी सोहबत का मौक़ा इस दौरान में मिल जाता तो ज़िन्दगी का लुत्फ़ आ गया होता। अगर उनके पास दिल होता और उनको आने का मौक़ा मिलता तो मैं तुमको ख़ुद वहां जाने का हुक्म देता।

बदरियफ़्त हालत मदन मोहन फ़रमाया= हर चीज़ अपने असल से मिलने की कोशिश करती है। अगर तरक़्क़ी याफ़्ता शख़्स है तो उसको एहसास होगा। यह कैफ़ियत उनकी (मदन मोहन लाल) उरूज की है और ज़ात से निस्बत की ख़ुशख़बर दे रही है। मगर यह दरिया नापैदाकिनार है, इसको काफ़ी समझ नहीं लेना चाहिये। तरक़्क़ी की इन्तहा नहीं। सब कुछ तय हो जाने के बाद फिर भी बाक़ी रहती है।

23-8-44

मैं तुम्हें अपनी ज़िन्दगी में क़ुत्ब बना कर इस से और ऊंचा पहुंचा चुका था। एहसास नहीं होने दिया और लोगों की आंखों पर भी परदे पड़े रहे। अब बाबू **मदन मोहन लाल** की शुरूआत है। शिकायत बेजा है, वरना कुफ़्राने-नेमत हो जायेगा। सींक की ओट पहाड़ है।

क़ुत्ब की हालत इन्सान के बहुत क़रीब ही लगी हुई होती है। यह राज़ है, इसको कोई नहीं जानता। मैं तुमको बता चुका हूं। confidential रखने की ज़रूरत है। मुझ से तजुर्बा सीखो। अब तुम ख़ुश हुये, तुम्हारा कहना मान लिया। उनका (मदन मोहन लाल) क़दम आगे जा रहा है। दरवाज़ा तरक़्क़ी का खुल चुका है। जितना ज़्यादा अपने आप को कन्ट्रोल करेंगे, उतना ही ऊंचा दर्जा होगा। मगर अब किसी की सिफ़ारिश न करना। यहां हाथ से बेहाथ हो जाने का सवाल है। हर शख़्स इस दर्जे के लायक़

नहीं होता। बाबू मदन मोहन लाल के लिये भी मुझको जाने क्या-क्या करना पड़ा ताकि कन्ट्रोल से बाहर न हो जायें। मुहब्बत की कोई शिकायत नहीं। मिज़ाज का शाकी हूं, सिर्फ़। बाबू मदन मोहन लाल इस ओहदे के हरगिज़ लायक़ नहीं हैं, उन पर कभी कोशिश मत करना। रामेशर पर भी अगर राहे-रास्त पर आ जाये तो यह चीज़ मत दे बैठना। बहुत सोच समझ के काम करने की ज़रूरत है। दुनिया बहुत मक्कार है। तुम सब को साफ़ बातिन समझते हो, ऐसा नहीं है। फिर कहता हूं यह Power हरगिज़ न दी जायें, जब तक मैं हुक्म न दूं। बाज़ औक़ात तुम बेक़ाबू हो जाते हो, इस आदत को छोड़ो। प्रार्थना करने पर फ़रमाया, मैं इस का ख़्याल रखूंगा, बेक़ाबू नहीं होने दूंगा। इस वक़्त एक भी ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसको यह ताक़तें बख़शी जावें। ताकीद जानो। जब होगा तब बता दूंगा। अगर शुबह हो तो मुझसे पूछ लेना।

इस सोसायटी में उंगलियों पर गिनने लायक़ ऐसे लोग हैं कि ईशर मार्ग में अच्छी तरक़्क़ी करें। बक़िया महज़ ख़ानापूरी है और यह वह लोग होंगे जो तुम्हारी तरफ़ झुकेंगे। और उनका ज़ाती मतलब कोई नहीं होगा। तर्जुबा बतला देगा। और मैं भी बतलाता रहूंगा। यह ड्यूटी जो तुम्हारे सुपुर्द की है, कोई मामूली काम नहीं है।

मिस्रा= **जिन के रूत्बे हैं सिवा, उनकी सिवा मुश्किल है।**

मेरा ज़माना अच्छा था, तुम्हारा ज़माना इतना इच्छा नहीं है। यह ही वजह है कि हर ताक़त से तुम को भरपूर कर दिया और हर ताक़त अपने-अपने दरजे पर कमाल पर है। यह बात अभी तक किसी को नसीब नहीं हुई। और आगे भी उम्मीद कम है। तुम्हारे लिये मुझ को क़ुदरत ने मजबूर किया था वरना यह बात नसीब नहीं होती। इस हद तक का सन्सकारी मुझे उम्मीद नहीं है कि तुम्हें मिले। फ़र्क़ ज़रूर रहेगा। मैंने कहीं पर ज़िक्र किया है कि क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) को मैं मिला और मुझको तुम मिले। इस का यही मतलब था कि इस हद तक आगे मिलने की उम्मीद नहीं है। ज़माना ख़राब आ रहा है। मन की चंचलता बढ़ रही है। बड़े फूंक-फूंक कर क़दम रखने की ज़रूरत है। मगर फिर भी ख़ुदा की रहमत से नाउम्मीद नहीं होना चाहिये। वह सब कुछ कर सकता है। मेरा यह ही उसूल था। अभी तक लोगों ने मुहब्बत भी करना नहीं सीखा, महज़ ठूंस-ठांस से थोड़ा बहुत काम चल रहा है।

सतसंग में ज़्यादा लोगों के बढ़ाने की ज़रूरत नहीं। मगर जो आयें वह ठीक हों। और तुम्हें बदनाम न करें। मैंने जो कुछ किया अपने गुरु के हुक्म की तामील की। तुम

मेरे हुक्म की पाबन्दी करो।

तुम्हारा यह ख़्याल था कि मैं बैअत जहां तक हो सकेगा, नहीं करूंगा। यह ख़्याल किसी हद तक ठीक है, क्योंकि इस में ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। मैं इस ख़्याल को appreciate करता हूं कि जब इन्सान काफ़ी तरक़्क़ी कर जाये, और गिरने का शुबह न रहे, तब करना चाहिये। मैं इस ख़्याल को समझ कर बहुत ख़ुश हुवा और बाक़ी मेरी भी मर्ज़ी यह ही है। मगर जिनको मैं बैअत कर चुका हूं उनका संभालना अपना फ़र्ज़ समझो। यह मेरी ही ख़िदमत है। मगर साथ ही साथ मैं **यह भी हुक्म देता हूं कि जो लोग नाकारा हैं, उन को इस दायरे से निकाल देना ताकि बायसे बदनामी न हों। और मैं भी अपने फ़र्ज़ से सुबकदोश हो जाऊं। (यह नोट बुक में सुर्ख़ी से लिखना चाहिये।** ताकि फ़ौरन नज़र पड़ जाये अगर ज़रूरत हो।) इसमें से कुछ लोग गुमराह हो चुके हैं और कुछ नन्हे के शिकार हो चुके हैं। उनसे उम्मीद कम रखो। मैं बता दूंगा ताकि ग़लती न हो जाये। जिनको मैं बता चुका हूं उनके नाम रखने की ज़रूरत नहीं। अगर ज़रूरत समझूंगा तो भण्डारे में इसका ऐलान भी करा दूंगा। तुम सब नोट तैयार रखना। भण्डारे में यह कोशिश की जायेगी कि तुम को दिक़्क़तें पेश न आवें और इत्तफ़ाक़ से अगर कोई आ भी जावें तो घबराने की ज़रूरत नहीं। मैं सब संभाल लूंगा।

सोहबते-बदः- आज इस वक़्त की बात (यानी सोते में तबले का सुनना) का जो तुमने अभी ज़िक्र किया, यह वाक़ई संस्कार था जो मैंने साफ़ कर दिया। यह सोहबत का असर तुमने देखा। उन लोगों के बारे में मैं क्या कहूं जिन को इसका ख़्याल ही नहीं होता। और अकसर को नेक व बद सोहबत की तमीज़ ही नहीं होती। हर सोहबत, अगर बारीक निगाह से देखो तो जो अपने ख़्याल के ख़िलाफ़ हो, मुज़िर है। जहां तुम गये थे (आग़ापुर) वहां का atmosphere बड़ा ख़राब था। ज़र्रे-ज़र्रे में काम शक्ति का असर था। मगर इतना ही बताता हूं कि जितना जल्दी तुम पर असर हुवा, और पर न होता। यह और बात है कि तुमने उस असर को क़बूल नहीं किया बल्कि असर को ज़ायल कर दिया। बुरी सोहबत से बचना, जहां तक हो सके हर शख़्स का फ़र्ज़ है। मजबूरी दूसरी बात है। वाक़ई तुम्हें ऐसी जगह जाने से मुमानियत नहीं है, इसलिये कि तुम्हारी ताक़त उस असर को हवा से भी ज़ायल कर देगी। मगर भला सोचो तो सही अगर और लोग इस की पैरवी करें तो उनके लिये किस क़दर मुज़िर होगा। इस का रिवाज यूँ नहीं देना चाहिये कि दूसरे लोग इस की नक़ल न करने लगें। तुम को तो मैंने क़सदन् ऐसी जगह से मन्डी जाते वक़्त निकाला था जहां का atmosphere

निहायत ख़राब था। बात यह थी कि मुझे साफ़ कराना मन्ज़ूर था। अगर तुम्हारे साथ में और लोग जो मुब्तदी हैं, मौजूद होते तो हरगिज़ यह हुक्म न देता। इसका मक़सद यह है कि सोहबते बद से हर शख़्स को बचना चाहिये।

मज़मून

दुनिया एक ऐसी जगह है जहां कि तंग और तारीक परमाणु मौजूद हैं मगर उन परमाणु के दरमियान एक चमक है। इसके मानी यह हैं कि माया और पुरुष आलम की इब्तदा से अब तक साथ-साथ मौजूद हैं। जो लोग कि अक़लमंद हैं और दूरदर्शी (दूरबीन) हैं और ईशर मार्ग में तरक़्क़ी करना चाहते हैं, उनकी निगाह में वह ही हिस्सा परमाणु जोकि मुनव्वर है, आता है। और फ़ायदा उठाने में बरख़िलाफ़ इसके वह लोग जो दुनियादारी और बेकार ख़ुराफ़ात में पड़े हुये हैं, वह उस तारीक तब्क़े से जो परमाणु में मौजूद है, in touch रहते हैं और वह ही असरात अन्धकार वाले अपने अन्दर दाख़िल करते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि वह सरापा एक अन्धेरे में फंस जाते हैं और बढ़ते-बढ़ते वह ही हालत ठोस होती जाती है। जिस का जैसा ख़्याल होता है, वैसे ही असरात अपने अन्दर लेता रहता है और उसी के मुताबिक़ ताक़त पकड़ता रहता है। नतीजा यह होता है कि वह उस darkness में Envelope हो जाता है। और रफ़्ता-रफ़्ता मायावी असरात उसमें पूरे तौर से दाख़िल हो जाते हैं। अब यह ज़र्रात जो उसने अपने अन्दर दाख़िल किये हैं, आबोहवा मुवाफ़िक़ मिलने पर तरक़्क़ी करते चले जाते हैं। इस माद्दे का असर जिस्म के ज़र्रात पर जो पड़ता है, उसका फ़ोकस दिमाग़ की उस बारीक झिल्ली में पड़ना शुरू हो जाता है जिस को अंग्रेजी में membrane कहते हैं। जब उसमें असर पड़ने लगता है तो दिमाग़ का वह हिस्सा जिसमें मग़्ज़ रहता है, असर ले लेता है और नक़्श बनना शुरू हो जाते हैं। जब नक़्श ज़्यादा गहरे हो जाते हैं और उस शख़्स को जो इस का शिकार हुवा है, आदत हो जाने की वजह से बहुत तेज़ी से असर बालाई लेने लगता है। तब यह बातें संस्कार बनना शुरू हो जाती हैं। जब इन बातों की आमद जारी रहती है और कोई सोहबत उसको ऐसी नहीं मिलती जो इस ख़्याल को घसीटने में रोड़ा डाले तब उसकी कैफ़ियत और भी तेज़ हो जाती है। और बद से बदतर बनता चला जाता है। मुर्शद कामिल अगर कहीं ख़ुशक़िस्मती कभी मिल जायें तो वह अन्धा घुप हालत जो उसने

अपने में भरी है, अपनी तवज्जोह से मुनव्वर करना शुरू कर देते हैं। तालिब का ख़्याल बजाय अन्धेरे के रोशनी में तबदील होना शुरू हो जाता है। जिस का नतीजा शुरू ही में यह होता है कि वह शक्ति जो अन्धेरा खींचने में मसरूफ़ थी अब उजैले को अपने अन्दर दाख़िल करना शुरू कर देती है और रफ़्ता-रफ़्ता उस का काम बनना शुरू हो जाता है। यानी अन्धेरे से उजैले में आने लगता है। और उस की शक्ति इस तरफ़ काम करना शुरू कर देती है।

फ़रमाया= यह राज़े कुदरत है जो तुम्हारे सामने बयान किया गया ताकि उन बातों से बचो जो कि मुज़िर हैं और उन बातों को ग्रहण करो जो मुफ़ीद हैं। यह मज़मून हमारी ही नोट बुक में लिखा जाय ताकि लोगों को यह मालूम हो कि मैंने ज़िन्दगी के बाद भी कैसी तालीम दी। इस में शुरू के चन्द अल्फ़ाज़ मेरे हैं बाक़ी यह सब मज़मून इसी का (R.C.) है।

आदाब पीर में यह ल.ज इस्तेमाल न किये जायें जो मामूली लोगों के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं। और न उसको इस हैसियत का समझा जाय। इस हैसियत का समझना गुरु पशु होने की दलील है।

26-8-44

बाबू मदन मोहन लाल को फ़तेहगढ़ जाना चाहिये और उनसे यह कह देना चाहिये कि मैं हुकमन् आया हूं। डेढ सौ (150) रुपये लेकर भेजो। मैंने तुम्हारा जाना मुनासिब नहीं समझा। रुपये की जितनी ज़रूरत हो तुमको लिखा जावे। तुम परेशान मत हो। इस दुनिया में रहकर मुसीबत आना लाज़मी है और संस्कार का भोग अवष्य है।

नसीहतः- वो आदमी ज़्यादा बेहतर होता है जो कुल काम करते हुये हर काम से अपने आप को आज़ाद रखता है। जगू से कह देना बवजह दर्द और कमज़ोरी राम चन्द्र को आने की इजाज़त नहीं दी गयी। इस ख़्याल से कि अभी तक तो एक ही फ़िक्र है, कोई दूसरी फ़िक्र उनकी कमज़ोरी बायस न पैदा हो जाये। हालांकि वो आने को तैयार थे। क्योंकि दौरा तेज़ था इसलिये मैंने मना कर दिया। मुझे लाला जी साहब ने तुम्हारे पास आने की हिदायत फ़रमायी है। रुपये की बाबत उन्हीं की हिदायत है कि सिवाय रामचन्द्र के और किसी को न कहा जाय। डाक्टर चर्तुभुज सहाय की खोपड़ी इतनी औंधी हो गयी है कि इन्सान को इन्सान ही नहीं समझता। रूहानियत का देवता

बना हुआ बैठा है। तुम्हारे साथ जो बर्ताव किया वो बुर्जुगों तक को नागवार हुआ। अब अपनी ख़ैरियत न समझें। मैंने तुमको रात वो ताक़त अता की है कि जिस वक़्त तुमने इस्तेमाल की तो उनका नशा हिरन हो जावेगा। अब तुममें वो ताक़त मौजूद है कि एक सैकिन्ड में ऊंचे से ऊंचे बुर्जुग को सलब कर सकते हो। देखूं तो किसके आधार पर इसको रोक सकेंगे। मेरी तबियत अब उसकी शक्ल देखने को नहीं चाहती। यह उन्हों (चर्तुभुज सहाय) ने मामूली बद्तमीज़ी नहीं की है। जो कुछ लिखा है मुझको लिखा हैं। ऐसे लोगों को मैं सिलसिले में नहीं रखना चाहता। उनकी बाबत में इतना ही कहना है, दूसरे (श्री किशन) का इन्तज़ार है।

28-8-44

रात को जो तुम बिरादराने सतसंगी से रूजुअ हुवा करते हो उसमें किसी-किसी रोज़ नागा कर जाया करो। और जो फ़ी कस (फ़रदन्-फ़रदन्) मुझको रूजुअ हो रहे हैं, हरगिज़ करने की ज़रूरत नहीं है। हफ़्ते में एक योम काफ़ी है। अगर किसी को किसी वक़्त तवज्जोह देना चाहते हो, उसके लिये, मुमानियत भी नहीं।

बसवाल R.C. फ़रमाया= बाबू सेवती प्रसाद नेक आदमी हैं मगर अक़ल रसा नहीं है। वह श्याम बिहारी लाल से मिलते-जुलते हैं। बाबू सूरज प्रशाद पेश्कार कानपुर को अगर तुम्हारी सोहबत मिले तो अच्छे निकल जावें। बाबू मन मोहन लाल चर्तुभुज सहाय की इजाज़त के अहसानमन्द हैं। मगर उनकी इजाज़त का उन पर कुछ असर नहीं है। वह अगर ईमान तुम पर लायें (यानी तुम को मेरा सज्जादा नशीन यानी क़ायम मुक़ाम यक़ीन करें) और तुम्हारी हिदायतों पर अमल करें तो तरक़्क़ी अच्छी करेंगे। इजाज़त के लिये अभी रूको। ऐलान के बाद देखा जायेगा। ठाकुर राम सिंह बेहतर आदमियों में है। वह सीधा भी है और उसमें अक़ीदत अच्छी है। इजाज़त के लिये मैं ज़रा सख़्त हो गया हूं। मेरी तबीयत अभी उनको इजाज़त देने उकसा रही है। जब कभी दी जावेगी तो शर्तिया इजाज़त दी जावेगी। तुमको लोगों पर सख़्ती करना होगी। क्या सख़्ती करना चाहिये, यह मैं तुम को बता दूंगा। वाक़यात जल्द-जल्द तब्दील हो रहे हैं और तुम से मुख़ालफ़त बढ़ रही है। अपना किया ख़ुद भुगतेंगे। चतुर्भुज सहाय नस्ल का अच्छा नहीं है। नक़्शा सामने आ गया। असल से ख़ता नहीं होती। इसलिये अगले बुर्जुगों ने ब्रह्मण को इस तालीम के मुस्तहिक़ समझा। मगर अब उन में भी

amalgamation शुरू हो गया। यह ज़माने की रफ़्तार है।

बसवाल R.C. खुद फ़रमाया= वक़्त आने दो, यह सब ठीक हो जावेगा। जो कुछ कर रहे हो, किये जाओ। अब मैं जग्गू के पास जा रहा हूं। अपनी तन्दरूस्ती का ख़्याल रखो। उनको (जग्गू को) तपिश कम रही नींद भी आई।

30-8-44

आज चर्तुभुज सहाय को कृतअन् सलब कर लो। तरकीब यह है कि अपना ख़्याल उनके अन्दर दाख़िल कर दो और उसमें आकर्षण शक्ति पैदा कर दो और सब खींच कर अपने अन्दर दाख़िल कर लो। और हज़म कर जाओ। मैं ऐसे शख़्स को सिलसिले में रखना नहीं चाहता। Connection काट दो और फ़हरिस्त बैअत से उसका नाम उड़ा दो। और भण्डारे में इस का ऐलान कर दो। मैं आक़ कर चुका हूं। जो मज़ीद बात की उसके मुत्तालिक भण्डारे में ज़रूरत पड़ेगी, मैं बता दूंगा। डॉक्टर साहब ने क़दम-क़दम पर ग़लतियां की हैं और मैं मुआफ़ करता रहा। मगर यह ग़लती क़ाबले मुआफ़ी नहीं है। मैं अपनी दी हुई सम्पता सब वापस ले लूंगा। यह काम आज ख़त्म कर दो।

बदरियाफ़्त हाल जग्गू फ़रमाया= जग्गू के बारे में फ़िक्र मत करो, बस दुआ करते रहो। उसके ज़ख़्म में सड़न है, होमियोपैथिक दवा बहुत देर में फ़ायदा करेगी।

एक ख़त बाबू श्याम बिहारी लाल को लिख दो कि मैंने ख़त मोरख़ा 3 जुलाई भेजा था। आपने उस पर इल्तफ़ात न की। मैं समझता हूं कि जो कुछ लिखा था आप की बेहतरी के लिये था। ज़माना कुछ और है। बहुत दिन ग़फ़लत में रहे। हम लोगों की आह अर्शे मोल्ला तक पहुंच चुकी है। और नतीजा मतलूब ज़हूर में आ गया। और मुवाफ़िक़ हवा चलने लगी है। इस मौक़े पर अगर आपने होशियारी से काम न लिया तो शिकायत का मौक़ा न रहेगा। पेश्तर जो ख़त भेजा था वो अमल करने के लायक़ था। अब महरबानी करके शुरू कर दीजिये। सुबह का भूला शाम को आ जाय तो भूला नहीं कहलाता। एक मौक़ा और दिया जाता है। हमारे सतसंग का, नहीं मालूम क्या हाल हो गया है कि अच्छी बात भी बुरी मालूम होती है। उस की वजह या तो यह हो सकती है कि अपने आप को सब कुछ समझ बैठे, या अपने भाईयों को तुच्छ

समझ लिया। आदमी को हन्स का ख़्वास लेना चाहिये। अगर यह बात पैदा न हुई तो सही मायनों में उसने अपने गुरु महाराज से तालीम हासिल नहीं की। यह उनकी दया व कृपा थी कि आपको ख़लीफ़ा बना दिया। और यह बात भी उनके यानी गुरु महाराज के इख़्तियार में है कि इस दरजे से जब चाहें गिरा दें। उनका कोई शरीक और समीअ नहीं। अलबत्ता काम करने के लिये जिस को चाहें वह मक़र्रर कर दें। बस मैं इतना ही कहना चाहता हूं। आगे आपको इख़्तियार है। मानने में भला है और अच्छी बात हर शख़्स को मानना चाहिये।

अज़ीज़म जग्गू के कारबन्कल निकल आया है, ईशर उसको शफ़ा दे। डॉक्टर श्री किशन को मैंने छोड़ रखा है। उनहोंने अभी इस हद तक क़दम नहीं बढ़ाया है।

मेरी निगाह जिस तरफ़ जाती है, अफ़सोस ही होता है। हैरान हूं कि क्या किया जावे। अगर सख़्ती करता हूं तो मेरी यह आदत में नहीं। मजबूरन कुछ भी करना पड़े वह भी तुम्हारे ज़रिये से। रामेशर ठीक ज़रूर आ गये हैं मगर अभी ऐत्बार नहीं करना चाहिये क्योंकि उन्होंने एक मरतबा शैतान के पास जाने का वायदा किया है। वहां (कानपुर) से वापसी पर उन्हें तोलना। वाक़यात ऐसे तब्दील हो रहे हैं कि किसी राय को क़याम नहीं। उस रोज़ तुम रामेशर को ज़रूरत से ज़्यादा बातें बतला गये। मैंने उसको बुरा नहीं माना। मौक़ा ऐसा ही था। अपना राज़ न खोलना। भुलावे में रखो। हज़रत 12 बजे दिन के तशरीफ़ ले गये। और फ़रमाया कि कई रोज़ से मैं आलमे बाला की तरफ़ नहीं पहुंच सका हूं। वाक़यात कुछ ऐसे हो रहे हैं जिनसे नाउम्मीदी सी नज़र आती है। मैं समझता हूं कि मैं हमातन तुम्हीं से रूजूअअ हो जाऊं और यह समझ लूं कि मैं सिर्फ़ तुम्हीं को बना सका। भण्डारे तक इन्तज़ार करूंगा। उसके बाद क़िब्ला हज़रत मौलाना साहब (रहम०) से इजाज़त लेकर ऐसा ही करूंगा। तुमने इस दौरान में जितनी मेहनत की है, अगर पत्थर भी होता तो मोम हो जाता। बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि अपनी पौध समझ बूझ कर बढ़ायें। मुझे बहुत तर्जुबा हुवा है। धुनिया जुलाहों को भरने की ज़रूरत नहीं। शेर भरें। अगर एक भी शेर बना लिया तो उनकी जुम्मेवारी पूरी हो गई। मैं तुम को इजाज़त देता हूं कि अपनी दुनिया अलेहदा बनाओ। मगर इस हिदायत का ख़्याल रखना जो मैंने बाबू मदन मोहन लाल को की है।

मैंने (R.C.) सवाल किया कि यह काम ऐलान के बाद शुरू करूं?

फ़रमाया= कि मुझे ऐलान में भी शक है। ख़ुदा करे तुम्हें कामयाबी हो। मैं समझता हूं कि तुम्हारी बूआ को भी यह बात पसंद न आवेगी। ज़माना नेकी का नहीं है। अफ़सोस तुम्हारे दिल को किसी ने नहीं समझा। मेरे पास जो कुछ भी है और जो कुछ बुज़ुर्गों ने दिया है मैं तुमको सब Transfer किये देता हूं। हुक्म हुवा कि आंख बंद करके बैठो। तामीले हुक्म की गई। वक़्त 2.15 PM था।

तुम आज शाम को खाना न खाना, मिस्री के साथ दूध पीना। तुम्हारी क़िस्मत का आज फ़ैसला कर दिया। जो फ़ायदा उठाना चाहे, तुमसे रूजूअअ हो। जिम्मेदारी अब सब तुम्हीं पर है। मैंने तुम्हें आज हर बात के लिये तैयार कर दिया। अगर यह ही हालत रही तो तुम सबको सलब कर लेना और Connection काट देना और इत्तलाअ कर देना कि अब कोई और घर तलाश कीजिये। इसमें वह लोग मुस्तस्ना हैं जो तुम पर ईमान लावें। जो शख़्स कि तुम्हारे काम में रख़ना अन्दाज़ (बाधक) हों उनको भी सलब कर लो। किसी की रिआयत करने की ज़रूरत नहीं। मैं वायदा करता हूं कि जिस का Connection तुम काट दोगे उसको कोई भी जोड़ न सकेगा। और बुज़ुर्गों को इससे इत्तफ़ाक रहेगा। मैंने इसमें बिरजू को भी शामिल कर लिया कि अगर ज़रूरत पड़ जाये तो उनके साथ भी यही फ़ेल किया जा सकता है। तुम्हारे काटे हुये connection को उनके पीर साहब भी नहीं जोड़ सकेंगे और न कोई ताक़त उनको सलब होने से बचा सकेगी। तुममें वह ताक़त है जो किसी के वहम व गुमान में नहीं आ सकती और न उसका जवाब है। तुम्हें देखने के लिये आंखें चाहियें और ऐसी आंख अभी तक किसी की नहीं हुईं। दूसरे तुम्हारी सादगी से भी लोग धोखा खा रहे हैं। तुम ने बाबू मदन मोहन लाल को बना लिया, एक शख़्स ऐसा और बनाने की कोशिश करो। ऐसे दो शख़्स मेरे काम चलाने के लिये काफ़ी होंगे। मेरे ख़लीफ़ा सब निकम्मे निकले। उसमें से एक तो संभल गये (मुराद बाबू मदन मोहन लाल से) और यह तुम्हारी सोहबत का असर था। इलावा इसके उनको भी तुम से बहुत मुहब्बत है और मुहब्बत का तुम को एहसान मानना चाहिये। और वह (मदन मोहन लाल) ऐसे निकले कि खूब निकले।

ख़ुदा ऐसी औलाद किसी को न दे जैसी मेरी निकली।

मैंने (R.C.) अर्ज़ की, "हर तरीक़े से कोशिश करूंगा कि मेरे भाई लोग संभल जायें।"

इरशाद हुवा= कि तुम्हारी नीयत नेक है मगर इस का मैं क्या करूं कि कोई मुख़ातिब नहीं होता। इस लिये ऐलान की और भी ज़रूरत है ताकि लोग अन्धेरे में न रहें। यह सब उन्हीं के फ़ायदे का इन्तज़ाम है, वरना तुम तो बन चुके। तुम्हारी यह तनदरूस्ती और यह मेहनत, इस का सिला मैं भी दे सकता हूं। अच्छा अब मैं जा रहा हूं। चर्तुभुज सहाय वाला काम आज ही ख़त्म कर दो। किसी बात की ज़रूरत हो तो मुझ से Consult कर लेना।

2-9-1944

मैंने बाबू मदन मोहन लाल के गिलान दूर करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। रात भर उनकी वही कैफ़ियत रही और इस वक़्त भी वह ही कैफ़ियत है। ताक़त का उभार दिखा दिया। अब मेरा तजुर्बा सुनो। जुमला ताक़तों के होते हुये मैं अपने आप को एक अदना बन्दा समझता था। उस की **मौज के ताबे** रहता था और हर हाल में ख़ुश रहता था और शुक्र भेजता था। इसका नतीजा यह होता था कि मुझे ख़्याल करना भी नहीं होता था और काम ख़ुद-ब-ख़ुद बन जाते थे। यह एक ऐसा औज़ार (Instrument) था जिस को बहुत तजुर्बे के बाद मैंने अपना कर लिया। इसमें ग़लती का शुबह-नहीं रहता। इलावा इसके मौज का ताबे होना शराफ़्ते इन्सानी है। और बन्दगी का असल जुज़ है। क्या यह बात तुम लोगों के लिए क़ाबिले मिसाल नहीं है? और मैंने इस हालत से वह काम कर दिखाये जो दूसरे के लिये अमर मुहाल था। कया यह क़ाबिले तरजीह और मानने के लायक़ नहीं है? बाबू मदन मोहन लाल ने (ख़ुद) कभी गिलान की वजह तलाश नहीं की वरना वहीं पर जवाब मिल जाता।

जो कोई शख़्स, जितनी बुलन्दी पर जाता है उतनी ही पस्ती नज़र आती है। **यह राज़े कुदरत** है। एक शख़्स अपने गुरु में चिपटा हुवा जब आला तरक़्क़ी करता है, अगर उसको पस्ती महसूस होती है तो यह क्या **कोई हालत** नहीं है? इसकी वजह अभी ऊपर कह चुका हूं। जज़बा यह होना चाहिये कि जो कुछ भी है **सब तेरा** ही है। और जब यह बात है तो गिलान कैसा। जब किसी शख़्स की तबीयत किसी चीज़ से सेर हो जाती है तो उस को हिज़ उस दरजे तक नहीं रहता। रफ़्ता-रफ़्ता यह बात पैदा हो जाती है कि वह उसको मामूली बात समझने लगता है। यह ही मामूली बात **गिलान या गिरी हुई** हालत समझना चाहिये। इलावा इसके नज़ूल में रहना बनिस्बत उरूज के

ज़्यादा बेहतर है। इसमें बन्दगी है और उस में कुल्लियत का ख़्याल क़ायम है। बस इससे ज़्यादा क्या कहूं। यह एक राज़ है जो (मदन मोहन लाल) को बता दिया गया।

हिम्मत की तारीफ़ मैं बता चुका हूं जो गुज़िश्ता नोट में मौजूद है। जिस बात की उन्हें (मदन मोहन लाल) शिकायत थी अगर उसको गिलान से मन्सूब न किया जावे तो वह ही कैफ़ियत रह जाती है। क्या यह नेमते ख़ुदाबन्दी नहीं है? जिस वक़्त इन्सान अपनी अहमियत खो बैठता है और उसको किसी तरीक़े से सीधे-उल्टे अपने आपे का गुमान नहीं रहता उस वक़्त जो काम करता है, वह ही करता है जिस को करना चाहिये।

यह हालत अगर ख़ुदा दे देवे तो सब हालतों से बेहतर है। हर शख़्स को इसके लिये कोशिश करना चाहिये। जब कोई शख़्स एक हालत से दूसरी हालत पर जाता है तो कुछ ठहराव महसूस होने लगता है। इस को यूँ समझ लो कि अगर कोई शख़्स दरिया के इस किनारे खड़ा हुवा है और उसको दूसरी जानिब पहुंचने के लिये दरिया का पार करना लाज़मी होगा तो उस का पहला काम यह होगा कि उसको पार करने के लिये नाव की ज़रूरत पड़ेगी। फिर उसके ऊपर बैठेगा और जितनी देर बैठा रहेगा उसको वह तेज़ी महसूस न होगी जो उसको दौड़ कर किनारे तक आने में महसूस हुई थी। इसी को बरज़ख़ भी कहते हैं और हमारे यहां क़दम-क़दम पर ऐसा होता रहता है। कुछ लोग ऐसे हैं जो इस दरिया को फ़ौरन पार कर लेते हैं। और उनको पता भी नहीं चलता। और कुछ ऐसे हैं जिनको देर लगती है। बहरहाल अगर एत्क़ाद पुख़्ता है और मुहब्बत दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है तो मंज़िले मक़्सूद पर एक ना एक दिना सब पहुंच जाते हैं। जितनी इधर ख़ामी रहती है उतनी उधर ख़ामी पड़ती है। इस सिलसिले में बेशुमार रम्ज़ हैं। और मैं यह भी यक़ीन दिलाता हूं कि राहरौ (सच्चे जिज्ञासू) को जितनी बातें पेश आती हैं वह सब की सब उम्मीद अफ़ज़ा हैं। और उसी लिहाज़ से तरक़्क़ी होती है। जिस लिहाज़ तक उनकी मुहब्बत और एत्क़ाद अपने पीर में शामिल है। यह ही लिहाज़ दरजात का है। एक शख़्स A से B तक पहुंचता है उसमें वह बात पैदा नहीं होती जो दूसरा A से B तक पहुंचने में हासिल कर लेता है। कहने के लिये पहुंच तो दोनों ही गये मगर उनके ख़्याल और मुहब्बत में जितनी कमी बेशी रही उतना ही उन दोनों की हालतों में फ़र्क़ रहा। गुरु ने अपना फ़र्ज़ दोनों के साथ एक ही तरीक़े से अदा किया और दोनों को ठिकाने पर पहुंचा दिया। मगर जो चेला जिस हद तक अपनी फ़र्ज़ अदायगी और नफ़्स कुशी में क़ासिर रहा उतनी

ही उसमें कमी पड़ गई। इन उसूलों से सब अपने आप को तौल लें और जितनी जिस में मुहब्बत और एत्क़ाद और नफ़्स कुशी है उतना ही अपना दरजा समझ लें। यह बातें मैंने आज साफ़-साफ़ कही हैं ताकि आयन्दा लोग अपने गुरु पर आक्षेप न करें।

सबसे बेहतर तरीक़ा मैं तुमको आज बताता हूं कि **अपने गुरु पर सब कुछ छोड़ दे।** यह बेहतरीन तरीक़ा है। ऐत्क़ाद और मुहब्बत सब इसमें गुम हो जाय। जिज्ञासु को यह पता न रहे कि मैं क्या कर रहा हूं। मतलब इसका यह है कि बिल्कुल शरण में आ जाय। इसको Complete surrender कहते हैं। न मालिक से शिकायत बाक़ी रहे और न अपनी तरक़्क़ी की परवाह। वह जिधर चाहे उधर ले जाये। उसे इन बातों से कुछ मतलब नहीं।

इससे घटिया दरजे की एक बात और है, वह यह है कि अच्छा बुरा जो कुछ भी हो उसको मालिक की तरफ़ से समझ ले। मैंने जाने कितनी कोशिश मदन मोहन लाल की कमज़ोरी और कम हिम्मती के दूर करने के लिये कीं। और ऐसा रूत्बा अता किया जो हर शख़्स को नसीब नहीं। और यह भी कहा कि इस का शुक्रिया अदा करना चाहिये ताकि कुफ़रान-नेमत न हो जाये। मगर वह अपनी आदत से जौ भर नहीं हिले। आदत से मेरा मतलब शिकायत से है। (जो वह अपनी हालत की बाबत करते रहते हैं)। चुनाँचे मेरे ख़्याल ने जहां तक काम किया, आज मैंने जितने ख़ास-ख़ास रम्ज़ जो हो सकते हैं उनके (मदन मोहन लाल) सामने रख दिये। अब मुझे अफ़सोस होगा अगर आयन्दा इस क़िस्म की शिकायत करें। इस तरह की शिकायत करना गोया हालत को न समझना है। कमज़ोरियां वाक़ई हर इन्सान को क़दम-क़दम पर रहती हैं। इसके दूर करने की कोशिश ख़ुद करें। उनके पास will मौजूद है जो काफ़ी develop हो चुकी है। हां, मैं यह भी यक़ीन दिलाता हूं कि इस will की मिसाल हमारे यहां तो क्या दूसरी जगह भी मुश्किल से मिलेगी, और न यह हालत मिलेगी। अपने आप को ख़ास कैफ़ियत में समझें। अपना दरजा उन्हें ख़ुद मालूम है, बार-बार कहने की ज़रूरत नहीं। जिस वक़्त मैं इस दरजे पर था, मैंने वह कारेनुमायाँ किये कि लोगों की अक़्ल हैरान हो जाती, अगर वह सोचते। भण्डारे में उनके (मदन मोहन लाल) दरजे का ऐलान कर दिया जावे और कह दिया जावे कि जिस को ताक़त हो देख ले। मैं यक़ीन दिलाता हूं कि इस दरजे का मेरे यहाँ कोई आदमी नहीं है।

अज़ीज़ जगमोहन की वफ़ात का मुझको भी अफ़सोस है मुशिय्यते ईज़दी में कुछ

चारा नहीं। आँअज़ीज़ भी सब्र करें। मैंने यह ख़बर तुमको क़सदन् नहीं सुनाई गो तुम्हारे दिल में यह लफ़्ज़ (इन्तक़ाल-इन्तक़ाल) साफ़-साफ़ उतर चुके थे। मेरा मतलब आराम पहुंचाने का है, तकलीफ़ देने का नहीं। इसलिये पोशीदा रखा। इस बात का ख़्याल रखो कि जब तक कोई ख़राब या अनहोनी बात दो चार लोगों की ज़बानी न सुन लो, नहीं बताना चाहिये। तुम्हारा ख़्याल ठीक है कि **ख़बरे-बद ब बूम व ज़ाग़ बेनाह (अर्थात= बुरी सूचना उल्लू-कव्वों की गवाही परन मानो)**। मजबूरी दूसरा सवाल है। बच्चों की निगरानी की बाबत परेशान न हो। ख़ुदा मसबब-उल-असबाब है।

करूणा शंकर के बारे में तुम्हारा ठीक ख़्याल है कि उस का दिमाग़ नहीं खुलता। वजह यह है कि रट-रटा कर कोर्स याद कर एन्ट्रेंस पास कर लिया गया। दिमाग़ को वसीह बनने का मौक़ा नहीं दिया गया। दिमाग़ की नशवोनुमा छुटपन ही से होती है और उसी वक़्त की मेहनत आगे काम देती है।

भण्डारे का काम तुम अपने ज़िम्मे ले लो तो बेहतर होगा। इम्साल जैसा चलता है, चलने दो। क्योंकि तूती की सदा भी नक़्क़ार ख़ाने में कौन सुनता है। रुपये की मदद दे देना। आयन्दा से तुम मेरे नाम से भण्डारा किया करो और अपने आप को उस का मुखिया समझो। इम्साल यह लाज़मी होगा कि सब को बज़रिया ख़त इत्तलाअ दी जावे कि भण्डारा अपने वक़्त मोईना पर इम्साल मुनक़्क़िद होगा और आयन्दा भी होता रहेगा। यह मेरी यादगार है, इसको तोड़ना नहीं चाहिये। इम्साल अगर मुतबन्नी बाबू के नाम से भण्डारे की ख़त्तो किताब की जावे तो बेहतर होगा। महाराज नरायण इस की क़ाबलियत नहीं रखते। मद्दगारों में उनको शामिल कर लेना चाहिये ताकि उनको गिराँ न गुज़रे। भण्डारे से कुछ पहले किसी आदमी को तुम्हारी माँ (मुराद चची साहिबा से) के पास इस सलाह मश्वरे के लिये जाना चाहिये। इतने पेश्तर जाना चाहिये कि उन लोगों के पास ख़तूत वक़्त से काफ़ी पहले पहुंच जायें। तुम्हारी सोसायटी में इस काम के लिये बेहतर तो तुम ज़रूर हो मगर तुम बग़ैर मदद के कुछ नहीं कर सकते। इसलिये बाबू मदन मोहन लाल को मैं तरजीह देता हूं और उनके पास वक़्त भी है। जहां-जहां नवीद भेजने की ज़रूरत होगी, मैं बतला दूंगा। मेरी यह ख़ाहिश है कि इस कुल मुआमले को अपने हाथ में ले लो। यह काम मैं तुम दोनों के (M.M and R.C.) सुपुर्द करता हूं।

4-9-44

स्वामी जी को बहुत भद्दे तरीक़े से भरा गया है। अब इस हालत को सलब करके अगर तालीम दी जाये तब तुम्हारे तरीक़े की तालीम होगी।

करूणा शंकर की हालत संभल रही है। तुम्हारा सही ख़्याल था कि उन की समझ खोल दी जाये, और तुमने कोशिश भी की। वह काम मैंने सरअन्जाम दे दिया। अब क़ायम रखना उनके हाथ में है। अगर ख़्याल रखा और वो develop करते गये तो बारीकबीन हो जायेंगे।

नया तरीक़ा तालीम

मैंने तुम को जो इस वक़्त तवज्जोह दी और तुमको एक कैफ़ियत के साथ viberation महसूस हुवा, यह असली ताक़त है। इसके ज़र्रात भरे जा सकते हैं।

बसवाल अज़ीज़ रामचन्द्र फ़रमाया= यह अमल उसी शख़्स पर करना चाहिये जो कुबरा का मैदान पार कर चुका हो और जब उसकी कैफ़ियत आलमे-उलिया में ताक़त पैवस्त करना मंज़ूर हो। इससे नीचे दरजे के इन्सान के लिये यह अमल ग़लत होगा। यह बात मैंने तुम्हें शुरू में अनुभव कराई थी। यह सिर्फ़ उलिया के लिये है। इससे आगे और तरीक़ा है। आलमे कुबरा में जो परमाणु दाख़िल किये जाते हैं वह उससे कम रोशन होते हैं। विलायते सुग़रा में जो पंज लतायफ़ कहे गये हैं, उनका तरीक़ा तालीम जुदागाना है। इस को मैं तुम्हें अभी अनुभव करा चुका हूं। उनका Explain करना मुश्किल है। यह Practically ही समझाये जा सकते हैं। इशारे के तौर पर लिख लो।

क़ल्ब= दिल में जो परमाणु दाख़िल किये जाते हैं उनमें क़दरे अन्धेरा होता है मगर ठोसता नहीं होती अगर ठोसता है तो माद्दियत के ज़र्रात हैं।

रूह= रूह चक्र के बारे में सिर्फ़ इन ज़र्रात का छिलका उतर जाता है।

सिर्रा= सिर्रा में यह ज़र्रात इस तौर पर होते हैं कि जैसे तेज़ आग की गरमी और सुर्ख़ी का ज़्यादा हिस्सा खींच लिया जावे। अगर सिर्रा को ज़्यादा तेज़ करना मन्ज़ूर होता है तो तेज़ी छोड़ दी जाती है (यानी उसको नहीं खींचते हैं) या यूँ कहो कि उसको

touch नहीं करते।

ख़फ़ी= ख़फ़ी में इसी चीज़ की शक्ल तबदील हो जाती है। आग का सिर्फ़ शुबह ही शुबह रहता है जिस को अल्फ़ाज़ अदा नहीं कर सकते।

अख़फ़ा= अख़फ़ा में यह ज़र्रात मिस्ल बिजली की रोशनी के कुछ नीलगूं मायल हो जाते हैं। बस इतना ही कहना था।

यह भी एक तरीक़ा है जो हर जगह नहीं किया जाता। इसके अहल बहुत कम लोग हुवा करते हैं। इसके अहल सिर्फ़ उंगलियों पर गिनने लायक़ हैं। इसमें कुल ताक़तें develop हो जाती हैं। इसलिये आमतौर पर करने की मुमानियत है। इसका कुछ यानी थोड़ा-थोड़ा हिस्सा कहीं-कहीं पर इस्तेमाल किया जा सकता है। मगर इसकी तमीज़ बड़ी मुशकिल है कि कहां पर इस्तेमाल किया जावे। इस से बेहतर यह है कि न किया जावे। मैंने **नन्हे** के साथ फ़क़त एक चक्र पर किया था। नतीजा सामने है। मैं ऐसी बहुत सी बातें अपने सीने में रख कर ले गया। मजबूरी थी, कोई शख़्स ऐसा नहीं मिला जिसको दिल खोल कर बतलाता। तुम्हारे ऊपर यह अमल सब चक्रों पर आखीर वक़्त किया गया था। यह राज़ है, इसको बताने की ज़रूरत नहीं। और हर शख़्स ऐसा कर भी नहीं सकता है। इसके लिये भी बड़ी ताक़त की ज़रूरत है। बाबू मदन मोहन लाल को हिदायत कर दो कि इस राज़ को अपने ही तक रखें। **असुरों** ने इस पर दस्तगाह हासिल की है। **रावण** पंज लतायफ़ का मास्टर था। उसमें यह ताक़त कूट-कूट कर भरी थी।

बदरयाफ़्त फ़रमाया= **नन्हे** का मैंने सिर्फ़ क़ल्ब लिया था यह हज़रत सिर्फ़ एक ही को लिये पड़े रहे और ख़ूब ताक़त बढ़ाई। और तुम मुझसे इस क़दर चिपटे रहे कि अज़ ख़ुद develop करने का मौक़ा नहीं मिला। लिहाज़ा इस का develop करना मेरा फ़र्ज़ हो गया। तुम इस हालत को एक इन्फ़रादी तौर पर इसलिये महसूस नहीं कर रहे हो कि तुम एक बड़ी ताक़त में develop हो चुके हो। जहां से यह सब ताक़तें आती हैं। मुचेटा पड़ने पर मालूम हो सकता है।

वैसे दिल से बातें न करना ख़ामोशी कहलाती है। यानी जो गुफ़्तगु कि की जा रही हो तो वह ज़रूरतन हो और अपनी दिलचस्पी न हो। मैं शाम जिस वक़्त कि तुम्हारे पास से क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) के पास गया था, तो जगू के बच्चों का मामला दरपेश था। हज़रत क़िब्ला को बच्चों का बड़ा ख़याल है। तुम चूंकि बैमज़ला

मेरे हो लिहाज़ा उन की परवरिश व परदाख़्त तुम्हारा भी फ़र्ज़ रहेगा। बच्चे अच्छे निकलेंगे। तुम अपनी मां (बूआ साहिबा) को कोई तकलीफ़ न होने देना और अपना बुज़ुर्ग समझना। उन्हें भी तुमसे उन्सियत पैदा हो जायेगी।

5-9-44

मैं समझता हूं कि **क़याम** की हालत को लोग बहुत कम समझे हैं। इस वक़्त यह मसला अच्छा उठा। क़याम के दरहक़ीक़त मानी ठहराव के हैं यानी जो चीज़ कि गुरु ने बख़्शी, वह ठहर गई। इस से ज़्यादा इसके कुछ मानी नहीं हैं। जिस हालत को बाबू मदन मोहन लाल ने बयान करना चाहा उसकी हक़ीक़त यह है कि असलियत भासने लगे। क्या वह कह सकते हैं कि यह बात उन्हें नसीब नहीं है। असलियत के मानी भी लोग ग़लत समझे हुये हैं। और उस को चड़क-भड़क और तेज़ी तुर्की के नाम से मन्सूब करते हैं, बिल्कुल ग़लत है। असलियत के होते हुये जो कैफ़ियत कि एहसास होती है उस की शक्ल या मिसाल सूरज और उसके प्रतिबिम्ब यानी साये से है। कैफ़ियत दूसरे की मातहत होती है और उसको क़याम नहीं होता। यह हालत बयान से बाहर है। अनुभव से समझ में आ सकती है। तजुर्बा भी एक ख़ास चीज़ है। इससे बस असलियत का पता चल सकता है।

बाबू मदन मोहन लाल कुत्ब की हालत में काफ़ी पैर चुके हैं। मगर ज़ाहिरदारी भी ऐसी बना लें तब मुझे ख़ुशी होगी। तबीयत में लोच ज़रा कम है। उनमें यह ताक़त (लोच) मौजूद है, ज़रा will को उधर रूजूअअ कर दें। इससे मतलब मेरा यह है कि आवाज़ में करख़्तगी न हो। क्योंकि उनको काम करना है। ऐसा न हो कि उनके मुरीदैन इसी बात की नक़ल करना शुरू कर दें और यह निस्बत दूर तक चली जाय और लोग इस का प्रमाण लेने लगें।

जिन के रूत्बे हैं सिवा उनकी सिवा मुश्किल है।

तरकीब= लोच पैदा करने की तरकीब यह है कि तबीयत में **इन्तहाई इज्ज़** पैदा किया जाय। इस तरह पर कि उसमें मुहब्बत का ऐसा जज़बा भर जाय कि तबीयत

किसी तरीक़े से दूसरे के दिल को दुखाने को न चाहे। अल्फ़ाज भी ऐसे हों कि दूसरे का दिल किसी तरह से न दुखे। अगर यह बात उन्हों (मदन मोहन लाल) ने कर ली तो यह मेरी नक़ल होगी जो हर एक का फ़र्ज़ है। इसको पैरवी **पीर** कहते हैं। यह मेरी ख़ास निस्बत थी जिस की नक़ल किसी ने नहीं की। मगर मैं तुमको (R.C.) इस नक़ल की इजाज़त नहीं देता। इसमें सख़्ती काफूर हो जायेगी। तुम मेरी **मिसकीनी** की सिफ़्त को अभी तक नहीं समझे हो, इसलिये तुम को अकसर उलझन रहा करती है। यह बात इस तरह पर है कि मैं उसकी बन्दगी में हाज़िर रहता था। इस तरह पर कि अपने आप को अदना बन्दा समझता था। ज़ाहिरा चड़क-भड़क से कुछ निस्बत नहीं रखी थी। कुल सामान मय झोंपड़े के उसी का समझता था और हर हाल में खुश था। तुम भी जो कुछ खुदा ने तुमको दिया है, उसी का समझो या मेरा समझो और शाकिर रहो।

शिवाजी की मिसाल मौजूद है कि गुरु ने उससे भिक्षा मांगी तो जो कुछ उस के पास था, ज़र व माल, तख़्त व ताज, सब उनके हवाले कर दिया। और यह सब उन्हीं का समझने लगा। यह मिसाल क़ाबिले क़दर है और इससे मेरा मतलब ठीक अदा होता है। इसके कहने से मेरा यह मतलब नहीं है कि **नन्हे** की तरह पुकारते फिरो कि यह सब लाला ही जी का है। बल्कि यह जज़्बा होना चाहिये और तबीयत में सच्चा तर्क। यह आख़री क़िस्म का वैराग है। तुम परेशान मत हो। तुम्हारी हालत ऐसी ही होगी और तुम में जज़्बा भी यह मौजूद है। झाड़-झंकार की वजह से इसका उरूज महसूस नहीं होता। यह बात जो मैंने तुम्हें आज बताई है, कुल तालीम का लब्बोलुबाब है और बालातर है। इसकी कोई पैरवी सच्चे मायनों में करके देखें तो सही रूहानियत का लुत्फ़ आ जायेगा। इस का तरीक़ा सब से अच्छा यह है कि हर अच्छी बात खुदा से निस्बत दे और बुरे कामों से परहेज़ करे। इस का हवाला मैंने तुम्हें, तुम्हारी डायरी के जवाब में दिया है। बस इतना ही अमल काफ़ी होगा। इस बात को मामूली न समझो। अपनी डायरी में से वह जुमले नोट कर देना; बेहतर है कि कुल ख़त नक़ल कर दिया जावे।

नक़ल ख़त हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब,

मोरख़ा 27 नवम्बर सन् 29 ई०, सुफ़ा 19 डायरी

अज़ीज़ मन सल्माहु!

तरक़्क़ीये दरजात की दुआ के बाद वाज़े हो कि आँ अज़ीज़ ने जो हालत उरूज और तरक़्क़ीये मदारज की निस्बत तहरीर की है, वह अल्लाह मुबारक करे। वह अहंकार नहीं हैं, बल्कि हिम्मत अफ़ज़ा हैं। उन का शुक्रिया अदा करना चाहिये। तो फिर अहंकार नहीं रहेगा। अगर ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब कर लिये जावें तो फिर ग़रूर कहां, क्योंकि वह तो ख़ुदा की तरफ़ से हैं। उसमें कुछ नहीं।

शेर=

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नीस्त,
गर न बख़शद ख़ुदाये बख़शन्दा।

(अर्थात= यह सौभाग्य बाहुबल से प्राप्त नहीं होता, यदि बख़शनहार परमात्मा की कृपा न होती)।

बेकैफ़ी की हालत अच्छी है और यह देरपा होती है।

परेशान किया जाना अच्छा है। घर हिल्म और बरदाश्त का स्कूल है। हमारे यहां इन्हीं बातों पर सब्र करना तप कहलाता है। और जुम्ला इक़्साम के तपों से बालातर है। पस बजाय ग़म के ग़ैरत अख़्तियार करना चाहिये। ग़ैरत कहते हैं उस जज़्बे को जिसमें दूसरों के कहने-सुनने और मलामत करने पर यह मालूम होता है कि वाक़ई मेरा ही क़सूर है और फिर ज़ब्त कर लेना पड़ता है। औरों के वास्ते जंगल और तन्हाई और गोशा नशीनी, तहम्मुल और बरदाश्त और दुनिया की ज़क़-ज़क़, बक-बक से रिहाई के असबाब हैं और हमारे वास्ते घर वालों, दोस्तों, दुनिया वालों की झिड़कियां और ताने और मलामतें, रियाज़त और चिल्लाकशी हैं। पस चिड़चिड़ापन दूर करें और सब्र अख़्तियार करें। इन्शा अल्लाह इसके बाद तसलीम और रज़ा भी आ जावेगी।

दुआगो हज़रत क़िब्ला राम चन्द्र

अज़ फ़तेहगढ़

27-11-29

मैं तुमको अपने जाने के बाद खोल भी चुका था। ताक़त और खुलाव एक साथ ही अमल में आयें। मगर जब मैंने देखा कि मुख़ालफ़ीन, कहीं ऐसा न हो कि इसका एहसास कर जायें, क्योंकि तुमको ज़ाहिर करना मक़्सूद नहीं था। इसलिये उसको बन्द

कर दिया था। और हमारे हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की भी यह ही राय हुई।

रात मैंने रामेशर को चढ़ाना शुरू किया है। उनसे कहो कि तोबा करें कि आयन्दा से ऐसी ग़लती न करें। मेरे सामने वायदा ले लो। जब यह वायदा कर लें तब आगे की इबारत सुनाना चाहिये। उनसे कह दो कि मैं मौजूद हूं, और रामचन्द्र के पास से किसी वक़्त नहीं हटता। यह जो कुछ कहें, वह मेरा हुक्म होगा। इसके इज़्हार की कहीं ज़रूरत नहीं वरना मोरिज़े इताब होंगे। साफ़ कह दो कि मैं अपना काम उनको सुपुर्द कर चुका हूं। उनकी इताअत मेरी इताअत होगी। ग़फ़लत का ज़माना ख़त्म हो गया। उनके चचा को मैंने तो उन्हीं (R.C.) के ज़रिये से सलब कराया है। बक़िया नतीजा आगे देखने को मिलेगा। साफ़ कह दो कि मैं अपना उनको (R.C.) सज्जादा नशीन बना चुका हूं। मगर इस का इज़्हार कहीं न होवे। अगर शक होवे तो जिस तरह से चाहें, इम्तहान ले लेवें।

मेरी क़तई राय नहीं है कि यह शख़्स (रामेशर) कानपुर जावे। तुम मेरे मुजस्सिम Record हो। आयन्दा से सतसंग बाबू मदन मोहन लाल के यहां होगा। रामेशर को भी उनकी सोहबत से फ़ैजयाब होना चाहिये। कदूरत निकाल दें। आख़िर को बड़े भाई हैं। और मैं उनको अपना चुका हूं। और यह भी वाज़े हो कि उनकी (मदन मोहन लाल) कुत्ब की हालत है। अन्धेरे में न रहें। अगर रामेशर अपने वायदे में पक्के निकल गये और मेरी तामील हुक्म जो राम चन्द्र के ज़रिये से होगी, कर गये तो मैं वायदा करता हूं कि उनको (रामेशर) भरपूर कर दूंगा। उनसे कह दो, मैं उनकी इजाज़त सलब कर चुका हूं। औरों की भी इजाज़त मैंने सलब कर ली है। अब जिसको रामचन्द्र इजाज़त देंगे वह मुस्तनद होगी। मैं उनको सब हिदायतें कर चुका हूं और जब ज़रूरत होगी तो करूंगा। यह जो कुछ भी किया गया है, यह उनके फ़ायदे के लिये है। उन पर चचा का असर पूरे तौर पर आ चुका था और वह (रामेशर) रामचन्द्र के क़ातिल बनना ही चाहते थे। अगर मेरी ताक़त उनके साथ न होती तो मुझे यह बेचिराग़ कर चुके थे। मैं इस वक़्त जो कुछ लिखा रहा हूं सब उन्हीं (रामेशर) के लिये है। मुमकिन है मेरी कही हुई बातों का एयादा (Repetition) हो जावे। यह बात ऐसी नहीं है कि हर जगह खोली जाये। मुझे इस दौरान में अपनी दी हुई ताक़त को कम भी करना था ताकि उसमें मिल कर उनके चचा की ताक़त जो दूसरे को मारने के लिये दी गई थी, ज़ोर न पकड़

जाये। उनसे दोबारा कह दो कि यह जो कुछ किया गया या औरों के साथ किया जा रहा है, सब उन्हीं (मुरीदैन) के फ़ायदा के लिये है। रामेशर Extnemist बनना छोड़ दें। मेरे वक़्त की और बात थी कि मैं निभा ले गया। जो कुछ उनको शकूक हों, रामचन्द्र से रफ़ाअ कर लें। मैं भी यहां पर मौजूद हूं और जो पूछना चाहें, ख़्वाह इम्तिहानन्, ख़्वाह वैसे, पूछ सकते हैं। मैं इन्तज़ार कर रहा हूं। एक महीने तक उनसे ईशर से प्रार्थना करवाई जावे कि उनको सही रास्ता बता दे। इस दौरान में बाबू मदन मोहन लाल की अज़मत और बुजुर्गी उनमें फूकं दी जावे। मगर रामचन्द्र का इज़हार किसी तरीक़े पर न हो। मैं अगर उनको **(R)** रामचन्द्र के कारनामे बताऊं तो उनको और भी ताज्जुब होगा। मैंने एक ही बनाया है और एक ही रहेगा। बस उनके बारे में इतना ही कहना काफ़ी समझता हूं।

मैंने ऊपर जो इबारत लिखाई है उससे यह मतलब नहीं है कि दूसरे लोग तरक़्क़ी न कर सकेंगे। मतलब यह है कि मैं एक में अपनी पूरी ताक़त से फ़ना हो चुका हूं। अब मेरी ख़्वाहिश यह है कि जो मुझ से ताल्लुक़ रखते हैं या जिन को मुझ से मुहब्बत है वह मेरे ही पास रहें। उनको दूसरी जगह जाने की ज़रूरत नहीं। और जो शख़्स दूसरे से इलाक़ा रखते हैं और वह फ़ैज़ लेने के लिये आवें तो कुछ हर्ज नहीं है जो शख़्स मेरे बनाये हुये लोगों के पास आना नहीं चाहते, मुझे उनकी क़तई ज़रूरत नहीं है। जो रास्ता चाहें अख़्तियार कर लें।

6-9-44

इरशाद बिरादरे अज़ीज़ जगमोहन नरायण उर्फ़ जग्गू= मैं आज़ाद हो गया। दुनियावी झंझटों से पाक हूं। सदमे की मुझे कुछ परवाह नहीं। दीनानाथ को मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। मुझे इस वक़्त कोई ऐसा नहीं मालूम होता जो इस काम को संभाल सके और मेरे मुरीदैन जो हैं वह रस्मी तौर पर हैं। अगर वह तुम से रूजूअअ हों तो तुम तालीम करना। समाधी का इन्तज़ाम तुम्हारे सुपुर्द है। इस्कूल का इन्तज़ाम इन्सपैक्टर साहब के सुपुर्द कर दो। अगर वह कर सकें तो अच्छा है वरना उसकी (खुदा) मर्ज़ी। अगर तुम चाहो तो यह मेरी तहरीर मुतनब्बी चचा के पास भेज सकते हो। मगर तावक्तेकि लाला जी साहब आपका इज़हार न कर दें। इस को Confidential रखने की ज़रूरत है। **मुन्शी** (Munshi) को मेरे यहां आने के लिये क़तई मुमानत कर

दी जावे। अगर आयें भी तो बिला पुकारे अन्दर दाख़िल न हों। यह मज़मून या और जो कुछ मैं कहूं उसकी बाबत जनाब लाला जी साहब से दरियाफ़्त कर लिया जावे कि वहां (फ़तेहगढ़) ले जाया जाय या नहीं। मेरे ऊपर क़र्ज़ा भी है। उसको मैं अभी तक अदा नहीं कर सका। एक बात मैं आपको अपने तर्जुबे की बतलाता हूं कि दुनिया में कोई किसी का नहीं होता। ज़्यादातर ख़ुद ग़रज़ होते हैं। तुम जिस वक़्त मुझे बुलाओगे मैं जनाब लाला जी साहब की तरह आता रहूंगा। मैं अपना कुल काम तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। मेरे कारज में फ़ज़ूल रुपया न बरबाद किया जावे। ग़रीबों को खिला दिया जावे। यह बात ख़ासतौर से मेरी मां से कह देना। दीनानाथ को यह बात समझा दी जावे कि मैंने बाबू राम चन्द्र शहजहाँपूरी के सुपुर्द किया है। उनकी इताअत मेरी इताअत होगी। वह तुमको धुरपद तक पहुंचाने की ताक़त रखते हैं। अपनी भावज का ख़्याल रखना। अगर आप इस ज़िम्मेवारी को पूरा न कर सके तो हश्र में जवाबदेह होंगे। मुझे जो कुछ कहना है, वक़्तन फ़वक़्तन आप से कहता रहूंगा। एक मुझसे भी ग़लती हुई। उसकी मैं आप से माफ़ी मांगता हूं। वह यह है कि मैं आप की मुहब्बत को न समझ सका। अब आज़ाद होते हुये मुझको इस का एहसास है। अपनी कम समझी से जिसका एवज़ अपनी ज़िन्दगी में न दे सका। अब मैं वायदा करता हूं।

इरशाद हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब= जो कुछ जग्गू ने लिखाया है वह ठीक है। तुम्हें उसकी तामील करना चाहिये। यह इबारत जो उन्होंने लिखाई है उसको आज ही भेज दो। आग़ाज़ मज़मून यह होना चाहियेः-

वाज़े हो कि जग्गू आज़ाद मुतलक़ हो चुके हैं और उन्होंने बहैसियत भाई के मुझ से जो कुछ कहा है, हसब ज़ैल है। इसकी तामील हरफ़-ब-हरफ़ होना चाहिये। जग्गू एक बात कहने के लिये भूल गये। उसको मैं लिखाये देता हूं। वह यह थी कि मेरे Record कि जो कुछ भी है तबाह व बरबाद न किया जावे। न किसी ग़ैर शख़्स को दिया जावे। उसकी एहतियात पूरी रखी जावे। जग्गू का क़र्ज़ा ऐसा ज़्यादा नहीं है। तुम निपटा सकोगे। जो कुछ जग्गू ने लिखाया है उसकी लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ तामील होना चाहिये।

मैं फ़तेहगढ़ से आ रहा हूं। वहां के सब मुआमलात मेरी नज़र के सामने हैं और गुज़रे। जग्गू की अदम मौजूदगी ने मुझ पर और भी जिम्मेदारी बढ़ा दी। हर शख़्स अपनी-अपनी शेख़ी बघारता है। ताज़ियत तो एक तरफ़ रही, मतलब सिद्ध कर रहे हैं।

अब तुम भी alert हो जाओ। दोनों जगह की ज़िम्मेदारी तुम्हारे सुपुर्द है। लोग बहुत गड़बड़ कर रहे हैं। तुम्हारी मां (बड़ी बूआ साहिबा) सीधी-सादी आदमी हैं और उनकी अक्ल भी इस वक़्त हैरान है। आज तुम ख़त रजिस्ट्री करा दो। फिर मैं तुम्हें सोच कर बताऊंगा कि तुम्हें क्या करना चाहिये। तुम तीन रोज़ के लिये कुल काम छोड़ दो। दिमाग़ को आराम दो। फ़तेहगढ़ जा रहा हूं, तीसरे पहर को आऊंगा। बिस्तर भी तैयार रखना, न मालूम मैं क्या हुक्म दे दूं।

फ़तेहगढ़ से मैं आ रहा हूं। **"दो गूना रंजो अज़ाब अस्त जाने मजनूं रा" (अर्थात= ग़रीब मजनूं की जान को दो तरह की मुसीबतें और दुख है)**। अभी जाने से रूको। आज का इरादा मुल्तवी कर दो। जग्गू को मैंने वहां situation watch करने को छोड़ दिया है। मुझे एक ऐसे आदमी (जग्गू) की ज़रूरत भी थी।

फ़रमाया= फिर आंसू निकले। कई मरतबा मैं तुम्हें समझा चुका हूं। रामेशर को फ़ौरन बुलाओ।

इरशाद बिरादरे अज़ीज़ यानी पीरज़ादा साहब= वहां की हालत बड़ी ख़राब है। नफ़्सा नफ़्सी बढ़ने लगी। दद्दा (मदन मोहन लाल) का तजुर्बा बहुत अच्छा था, इस हद तक मैं भी नहीं समझा था। मैंने सोचा था कि अभी उलट दूं मगर लाला जी साहब ने रोक लिया। जनाब लाला जी साहब ने तुमको सब कुछ दिया है। एक बात मैं देता हूं उसको नज़राना समझ कर क़बूल कर लो। मुझसे मराक़्बा करो। मराक़्बे के बाद फ़रमाया= मैंने आप को ताक़त से भर दिया। कभी-कभी मुझ से भी ख़िदमत ले लिया करो। जैसा समझते हो वैसा ही समझते रहो। लाला जी साहब ने बदरंजा मजबूरी मुझ को बिरजू भैया के सुपुर्द किया था। उनका तमाशा अब देखने में आ रहा है। भाई साहब अगर ज़िन्दगी में मुझे आप की इस दरजा मुहब्बत का पता होता तो अपनी जान निसार कर देता। मेरी वाक़ई ग़लती थी। मैंने क़राबतदारी को फ़ौक़ियत दी। मेरी एक आरज़ू है कि उस कुल ख़ित्ते को तुम उलट दो जहां ऐसे शैतान रहते हों। यह मेरी तबीयत की बात है। मैं भी हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा। और हर काम में मददगार हूंगा। मैं तो कह चुका कि ख़ित्ते को उलट दो। आप मेरे मुरीदैन में से जिस वक़्त मुनासिब समझो, मेरी तरफ़ से इजाज़त दे सकते हो। जब तुम destruction करोगे तो मैं तुम्हारी निगरानी करूंगा। मेरी तरफ़ से रामेशर से कह दो कि तुम ने बड़ा अच्छा किया जो लाला जी का कहना मान लिया। अगर उधर फंस गये होते तो नजात नहीं मिलती।

इरशाद हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब= जग्गू ने जो कुछ फ़रमाया है उसका अभी मौक़ा नहीं है। जग्गू ने तुम्हारे बारे में मुझसे इस वक़्त कुछ कहा, मैंने उसको मन्ज़ूर कर लिया। जग्गू का कोई मुरीद इस वक़्त तक इस क़ाबिल न था कि उसको उनका सज्जादा नशीन बनाया जाता। इस लिये मैं बहमा जहत यह मुनासिब समझता हूं कि यह ओहदा तुम्हीं को दिया जावे। यह उनकी राय है और मैंने मंज़ूर कर लिया है। तुम अपने आप को उनकी तरफ़ से भी ऐसा समझो जैसा कि तुम मेरी तरफ़ से अपने आप को समझते हो। तुम जग्गू के हाथ पर बैअत भी कर सकते हो। उन्होंने कुल अपनी ताक़त तुम में Transfer कर दी और मैंने मंज़ूर कर लिया।

इरशाद पीरज़ादा साहिब= भण्डारे में कुछ बातें मेरी बताई हुई क़ायम रखना। एक तो शान्ति पाठ। दूसरे मेरे बनाये हुये उसूलों की पाबन्दी। मेरी समाधि बनने में तो कोई हर्ज़ नहीं है। मगर बिरजू देखो समाधी ही बनवायेगा। मैं मुनासिब समझता हूं कि यह राज़ दीनानाथ को बतला देना चाहिये ताकि वह धोखे में न रहें। जिस वक़्त मैंने अपना जिस्म छोड़ा और रूह ने परवाज़ की और असल में पहुंचा तो मुझे बहुत ताज्जुब हुवा कि आप (R.C.) पहले से वहां मौजूद थे।

इरशाद हज़रत क़िब्ला= तुम फ़तेहगढ़ का इरादा मुल्तवी कर दो। कुछ वक़्त और काटो। मैंने वहां की situation सब study कर ली है। इस वक़्त में तुम्हारी कोई नहीं सुनेगा। और न बाबू मदन मोहन लाल की चलेगी। दोनों की मिली भगत क़रार दी जायेगी। तुम्हारी मां की समझ काम नहीं कर रही है। सदमा बहुत है। मुतबन्नी को कोई कुछ नहीं समझता। वहां बड़े पीर (बृज मोहन लाल) मौजूद हैं। लोग भी उनसे गरवीदा हो रहे हैं। अगर तुम्हारे काम में यह रख़ा अन्दाज़ हुये तो इनको भी समझना पड़ेगा। अभी दम बखुद हूं। वक़्त का इन्तज़ार है। जग्गू को मैं ज़्यादातर तुम्हारे ही पास छोड़ा करूंगा। उनके वहां जाने की ज़रूरत नहीं। रामेशर से कह दो अब इनसे रूजूअअ हुवा करें, यह (R.C.) सब कुछ कर सकते हैं। इसके यह मानी नहीं है कि मदन मोहन लाल की सोहबत में न बैठा जाये। यह मैंने फ़र्ज़ समझ कर कह दिया।

7-9-44

इरशाद पीरज़ादा साहब= दीनानाथ को एक ख़त लिख दिया जावे कि जो कुछ मुतबन्नी चचा को लिखा गया है उस पर अमल करें। मुझे उनका ख़्याल बहुत है। और

घर की भी ख़बरगीरी रखें। साफ़ा जयपुरी, मेरी मां से कह देना कि किसी को दे न दें। बल्कि एहतियात से रख लें।

रामेशर को मेरी तरफ़ से मरहबा कहो। वह खूब संभला वरना बक़ौल जग्गू, जमोगे ने पकड़ लिया था। फ़तेहगढ़ में मैंने बहुत कुछ रोक-थाम कर दी है। अपने दिल को परेशान मत करो। मदन मोहन लाल से कह दो कि वह भी आज़ुर्दा न हों। मेरा असूल यह रहा है कि सांप मर जाय मगर लाठी न टूटे। मतलब काम से है। उन्हों (मदन मोहन) ने मुझे रात बहुत परेशान किया मगर यह उन की मुहब्बत थी। सोते वक़्त वह इस ख़्याल को ले गये थे। उन की परेशानी दूर कर दो। तुम्हारी तवज्जोह तुम्हारी माता जी पर काम कर गई। उनकी तबीयत अब सहूलियत पर है। जग्गू की बीवी को इस से ज़्यादा Touch नहीं करना चाहिये।

सवाल रामेशर प्रसाद= मुझको विसाल के वक़्त और समाधि में जब अस्थि रखे गये थे तो उस वक़्त मुझ को क्यों हाज़िर नहीं होने दिया गया?

फ़रमाया= रामेशर से कह दो, उस वक़्त यही मसलेहत थी। बहुत सी बातें उन की कानपुर वालों को नागवार हुईं। जिस वक़्त तुम और रामेशर लखनऊ मेरे देखने के लिये गये थे और वहां से कानपुर पहुंचे। रात का वक़्त था। नन्हे चारपाई पर बैठे हुये कुछ वाअज करा रहे थे। कृष्ण सहाय वकील भी उस वक़्त मौजूद थे। हज़रत (नन्हे) के दिल में मेरी तकलीफ़ देख कर यह ख़्याल पैदा हुवा कि मेरा (हज़रत क़िब्ला का) जिस्म छूट जाता तो अच्छा था। यह बात गो मेरी तकलीफ़ देख कर पैदा हुई थी मगर मुहब्बत के खिलाफ़ थी। उनको मेरी बीमारी का कुछ सदमा नहीं था। उनका यह फ़र्ज़ था कि मेरे पास बैठते और मुझ को आराम पहुंचाने की कोशिश करते, क्योंकि मेरे रिश्तेदार थे। बजाये इस के मेरी ख़िदमत दूसरों के सुपुर्द की गई। यह ब्योहार की बात है जो मैंने तुम्हें बतलाई। इसका हर शख़्स को ख़्याल रखना चाहिये। जब मेरी तबीयत ख़राब थी, दर्द बहुत ज़्यादा था तो हज़रत (नन्हे) हुमक रहे थे कि अब यह काम मैं ही करूंगा। लोग तो पहले हीं से उनके गरवीदा हो चके थे, इसलिये उनका यह मरहला आसान हो गया। आयन्दा से अगर कोई शख़्स ऐसा पैदा हो जावे तो मैं तुम्हें इजाज़त देता हूं कि सिर निकालने से पहले उसका Complete डिस्ट्रकशन (Destruction) कर देना। इसमें रियाअत की ज़रूरत नहीं। उस की रूह क़ब्ज़ कर लेना। तरीक़ा मैंने तुम्हें अभी बता दिया।

मदन मोहन ने कहा कि विसाल के बाद मैं बरगदिया घाट गया था। चचा ने एक मरतबा उसके बाद फ़रमाया कि तुम्हारी जान उसी वक़्त निकल गई थी। अब ढ़ांचा है।

फ़रमाया= यह बात उन्हों (नन्हे) ने बहुत ठीक कही थी। उनकी (मदन मोहन) की energy नन्हे ने सलब कर ली थी। बरख़िलाफ़ इस के रामेशर में उन्होंने अपनी (energy) भरी थी मगर वह energy क्या थी। इस को अल्फ़ाज़ बयान नहीं कर सकते। तुमको (R.C.) सब रोशन है। बता दो। मैंने (R.C.) अर्ज़ किया कि वह यह कि रामेशर की लताफ़त को कसाफ़त में तबदील कर दिया था। इसका नतीजा यह हुवा कि वह अपने आपको कुछ भरा हुआ सा महसूस करते थे। अपना एत्क़ाद (नन्हे को) जमाना था। उससे उनका (रामेशर का) नुक़्सान हुवा। उसे अब हिदायत कर दी जावे कि वह किसी ग़ैर के पास न बैठें और यह ही मैं सब के लिये कहता हूं। इसके बारे में अगर हिदायत की ज़रूरत हो तो रामचन्द्र से तलब कर लें। रामेशर का रास्ता अब खुल गया है। और वक़्त भी अच्छा है। तरक़्क़ी की कोशिश करें। मुझे उनसे मुहब्बत भी है। अगर रामेशर इस वक़्त मेरा कहना न मानते और मेरे काम में रख़ना अन्दाज़ होते तो मैं Destruction का हुक्म देता। उनसे कह दो कि मैंने यह ही आख़री औज़ार मुन्करीन के लिये रखा है। यह तुम्हारी मुहब्बत थी कि उन को (रामेशर को) इस ज़द से बचा ले गये। वरना यह काम automatically शुरू हो जाता (क्योंकि) जिस से मुहब्बत होती है उस के असरात मामूल में जाते हैं। लिहाज़ा जो बात मैं उनके (नन्हे वग़ैरा) लिये कर रहा हूं वह ही उन की तरफ़ भी तैर जाती। नन्हे के जो मुरीदैन हैं उनको अपनी ख़ास ताक़त से रोके हुये हूं। कि ऐसा न हो कि वह ही कैफ़ियत उन पर न आ जाये क्योंकि वह बेक़सूर हैं।

8-9-1944

बाबू मदन मोहन से कह दो कि जो वकील (बाबू मदन मोहन लाल) बदायूनी में कमी थी, दुरूस्त कर दी गई। अब तालीम करते रहें। इस साल भंडारे में ज़रूर शरीक होना चाहिए। जहां तक तादाद बढ़ सके, अच्छा है। जो चिट्ठियां उनको (उनको यानी मदन मोहन लाल बदायूनी) जा चुकी हैं, उन पर अमल करें। और एक ही को दिल देवें। इसी से सब कुछ हो जावेगा। ये हिदायात सब मेरी (हज़रत क़िब्ला) तरफ़ से समझें जो उनकी बेहतरी के लिये की गई हैं। रात का वक़्त अच्छा है। अपने पीर के

ख़्याल में सोवें। और हर बात मालिक की मौज़ पर छोड़ दें। **"यक गीर व-महकम गीर"** (अर्थात= एक को पकड़ें और मज़बूती से पकड़ें।) के मस्ले को ख़्याल रखें। बाबू मदन मोहन लाल से बेहतर हालत उनको नहीं मिलेगी। दूसरे का ख़्याल दिल से हटा देवें।

इन लोगों की की हुई हुई बैअतें, यानी श्री किशन, चतुर्भुज सहाय (या और जिस किसी ने हज़रत क़िब्ला के नाम पर फ़र्ज़ की हैं) अपनी तरफ़ मुन्तक़िल करना होंगी।

उनको (बाबू मदन मोहन लाल बदायूनी को) इसी वक़्त **शर्तिया इजाज़त** दे दो। मेरी तरफ़ से तुम खुद दे दो। भाई साहब (मदन मोहन लाल) भी ताईद कर दें और मंजूर कर लें। देर करने की ज़रूरत नहीं। उसकी तस्दीक़ मैं करता हूं और मैं भी शर्तिया इजाजत देता हूं।

8-1-44 वक्त बाद 10 बजे दिन।

ह० Madan Mohan

ह० Ram Chandra

हज़रत क़िब्ला ने फ़रमाया कि रामेशर से कह दो कि जिन-जिन साहब ने कसाफ़त भरी थी उन्हीं में वापिस कर दी गई। अब मैंने तुम्हारे लिये रामेशर को साफ़ कर दिया, अब तुम तवज्जोह दे सकते हो।

बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि लल्लन के साथ जो कुछ कर रहे हैं, वो किये जायें। इस के यह मायनी नहीं हैं कि हिम्मत हार जावें। अब नहीं, आगे काम देगा।

इरशाद जग्गू- रामेश्वर से मेरी तरफ़ से कह दो कि जो कुछ लाला जी साहब क़िब्ला ने वायदा किया है, उसमें पक्के रहें। सिवाए गुरु के कोई साथ नहीं देता। सतसंग की हालत मुझे ख़ूब रोशन है। कोई भी ऐसा नहीं है कि जिस से दिल लगाया जावे। अब रूजूअअ उन्हीं से होना चाहिये। जिनको हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब ने अपना समझा है। कोई किसी का नहीं होता, यह मेरा तजुर्बा है। कब्र में सिर्फ़ ईमान साथ जाता है। अज़ीज़ व रिश्तेदार, हत्ता कि बीवी तक सब अपने मतलब के यार हैं। दिल उस को देना चाहिये जिसके पास दिल न हो।

इश्क़ क्या शै है, किसी कामिल से पूछा चाहिये।
किस तरह जाता है दिल, "बेदिल" से पूछा चाहिये।।

इरशाद लाला जी साहब क़िब्ला= रामेशर से कह दो कि मैंने बड़ी मेहनत से उनको (रामचन्द्र) बनाया है। यह मेरा ही जिगर था कि उनको ऐसी पुरख़तर घाटी से निकाल लाया। यह जो कुछ भी कहा गया, सब तुम्हारे फ़ायदे के लिये। जिस पुरख़तर घाटी से मैं उनको (रामचन्द्र) बचा कर लाया हूं, मैं नहीं चाहता कि अब कोई उस तरफ रूख़ करे। (घाटी से मुराद कानपुर के शैतानों से है)। वहां क़दम-क़दम पर राहज़न हैं। और जो वहां पहुंचा, कोरा (बेदाग खाये) वापिस नहीं हुआ।

बिरादरे अज़ीज़ **जगमोहन**= मैं भी इसकी ताईद करता हूं।

9-9-1944

फ़रमाया= मैं फ़तेहगढ़ से वापिस आ रहा हूं। हालत बदस्तूर है। समाधी पर कूड़ा करकट बहुत जमा हो गया है। दीनानाथ को लिख दो कि उसको साफ़ करा दें। वो (**मदन मोहन लाल**) इत्मीनान रखें। रामेशर को आज किसी वक़्त बुला लेना। मैं यह चाहता हूं कि वह तुम्हारे पास आया करें। वह तुम्हारे घर में, तुम्हारे मुतालिक़ कुछ रोशनी दे दें। मदन मोहन से कह दो, सतसंग बढ़ेगा। जो आये उसे Welcome करें। उनको (लोगों को) वक़्त दें। तरीक़ा हर शख़्स को बताने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारे (RC) लिये भी यह ही हिदायत है। आने वालों की कसाफ़त की सफ़ाई करते रहें। ऐसे, यानी नये शख़्सों की सफ़ाई रफ़्ता-रफ़्ता होगी। एक दम से नहीं। नया शख़्स जो आयेगा, वो **मदन मोहन लाल** के पास जायेगा। मदन मोहन लाल आम सतसंग में शास्त्रों की दक़ीक़ बातें साफ़-साफ़ न कहा करें। इस क़िस्म की बातें ख़ास सोहबत में होना चाहिये। हवा बदल रही है।

तुम दोनों ने रात अच्छा काम किया। इजाज़त अब किसी को न दी जावे, जब तक हुक्म न हो।

सवाल= जब destruction का काम सुपुर्द हो, उस वक़्त में लोगों को तवज्जोह देना चाहिये या नहीं?

फ़रमाया= कि तुम यक रूख़ हो जाते हो और तुम्हारी ताक़त और तवज्जोह, काम सुपुर्द करदा पर, पूरे तौर से काम करने लगती है, इसलिये तुम्हारे लिये मुमानियत है। जब ऐसा मौक़ा पड़े तो लोगों को **मदन मोहन लाल** के पास भेज दिया करो। **रामेशर की दौड़ दिल** से आगे नहीं है।

जग्गू ने जो कुछ भी था रामचन्द्र को Transfer कर दिया। इससे पहले यह मुमकिन था। इसमें मजबूर न करें।

इतने ज़ोर लगाये गये फिर भी उनको (**मदन मोहन**) अपनी हालत की खबर नहीं होती। बस इस बात पर इतमीनान कर लें कि जो हालत उन्हें (मदन मोहन) नसीब है, दूसरे को **मुश्किल** है। अब Proper utility उनके हाथ में है। मेरा बाबू **मदन मोहन लाल** की तारीफ़ करने को जी चाहता है। मेरी ख़ुशी **इसी में है कि अपना सा एक और बना लें। मैं चाहता हूं कि मैं भी देख लूं।** क्योंकि राम चन्द्र के **विसाल** के बाद मुझे इससे **मतलब** नहीं रहेगा।

सवाल मदन मोहन= चचा को शायद यह ख्याल, या इल्म नहीं था कि विसाल के बाद भी गुरु सज्जादा नशीन की विसाल के वक़्त तक बराबर साथ रहते हैं।

फ़रमाया= **यह ख़बर मेरे सिवा किसी को नहीं है, या जिस को मैंने बतलाया है, उसको खबर है। यह इन्तज़ामे-कुदरत है।** हर शख़्स को इससे वाक़फ़ियत नहीं होती। बैअतें कम अज़ कम की जायें। फ़ायदा पहुंचाने में कोई हर्ज नहीं, जिस को चाहें, पहुंचायें। या जो रूजूअ हो, उस को पहुंचायें। इसका तुम्हीं (**मदन मोहन लाल**) को इख़्तियार है। एक दो साहब ऐसे हैं, जिनको तुम्हें (RC) बैअत करना पड़ेगी। मैं बता दूंगा। **रमा शंकर** को तुम मेरे हाथ पर बैअत कर लो। लेकिन किसी को आख़ीर वक़्त पर जिस के संस्कार बाक़ी हों, बैअत करना या क़ल्ब फाड़ तवज्जोह न देना, क्योंकि ऐसा न हो कि उसके संस्कार तुमको भुगतना पड़ें। बैअत शुदा में जो मेरे खास शैदाई हैं उन के साथ यह अमल करना जायज़ होगा। यह मेरा ही **जिगर** था कि मैंने लोगों को **बेलोस** भेजा और उनके **संस्कार खुद ही भोगे**। तुमको इस तक़लीफ़ में डालना नहीं चाहता।

संस्कार जलाये भी जा सकते हैं। मगर यह तरीक़ा क़ानूने-कुदरत के ख़िलाफ़ है। तुमने ग़लती की जो तुमने अपने वालिद के संस्कार जला दिये।

अब तुम चाहो, यानी जैसा कि तुम्हारा ख़्याल कई मरतबा उठ चुका है, अपनी उस हालत पर जहां कि वाक़ई तुम्हारी स्थिति है, पहुंच सकते हो।

तुमने पितृ ऋण चुका दिया। रात तुमने अपने वालिद को ख़्वाब में देखा और उन्होंने जो कुछ कहा, वह असल हिज़ की बिगड़ी हुई सूरत थी। यह आख़िरी संस्कार था। उन्होंने इस फ़ायदे की उम्मीद में, जिसके वह हमेशा ख़िलाफ़ थे, अभी तक जिस्म धारण नहीं किया। अपने मरते वक़्त भी कुछ असर तुम से ले गये थे। यह आख़िरी संस्कार जो मैंने बतलाया है, यह उनका ख़्याल ही ख़्याल है। उस मुक़ाम पर फैंक देने से यह बात जाती रहेगी। मगर यह अमल तीन रोज़ बाद करना। बाक़ी बुर्ज़गों को फ़ैज़ पहुंचाते रहो। ऐसा अमल करने की ज़रूरत नहीं। अगर तुम्हारी मां इस पर ऐतबार करें तो उनको सुना देना।

इरशाद अज़ीज़ **जग्गू=** दद्दा (**मदन मोहन लाल**) ने रात खूब काम किया।

सवाल RC= यह **ब्रज मोहन लाल** जो फ़तेहगढ़ में मौजूद हैं, वाक़ई लोगों को फ़ायदा पहुंचाना चाहते हैं या यूं ही।

फ़रमाया= बाबू ब्रज मोहन लाल की नीयत नेक है मगर साथ ही उस की ख़ुद **सताइश** चाहते हैं। एक बात और यह है कि वह **गुरु बन कर अपना ख़र्च चलाना चाहते हैं**। उन्हें अपनी **इज़्ज़त** बढ़ाने का भी ख़्याल है। वह यह भी चाहते हैं कि उनके बच्चों की इज़्ज़त की जावे.... अगर सच पूछो तो इन मायनों में यह घर का घर उस्ताद है। भंडारे में जब तुम्हारा इज़हार हो जाये, तो सज्जादा नशीनी की खबर चप्पे-चप्पे में फैला दी जाये। जब कोई इस क़िस्म का सवाल करे तो तुम्हीं को बताया जावे। इस बात के जितने जानने वाले होंगे, उतना ही उन लोगों के लिए फ़ायदा है। बाबू **मदन मोहन लाल** को मैं तुम्हारी **वज़ारत** देता हूं। वह अपनी Duty का ख़्याल रखें। **रामेशर** Canvassing का काम अच्छा कर सकते हैं। मगर इसकी तुम्हें ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हारे और बाबू **मदन मोहन लाल** में ऐसा बरतावा चाहता हूं जैसा कि मेरा और मौलवी **अबदुल ग़नी खां** साहब का था। अगर वह तेज़ मिज़ाजी से बाज़ आवें, तो वही बात पैदा हो जायेगी। **कृष्णा** को बाबू मदन मोहन लाल बैअत हरगिज़-हरगिज़ न करें। बाक़ी बच्चों पर उन्हें इख़्तियार है। **कैलाश** को पूजा की तरफ़ रूजूअअ न करें, वह इसके लिए नहीं आया है।

10-9-44

यह नई क़िस्म की बैअत है जो आज मैंने अज़ीज़ रामचन्द्र से कराई। इसके करने की मुमानियत है। सिर्फ़ वह शख़्स कर सकता है जिस को संस्कार जलाने की ताक़त हो। और पीर हुक्म दे। ख़ुद नहीं कर सकता। अज़ीज़ रामचन्द्र ने अपने वालिद मरहूम की बैअत हज़रत क़िब्ला से उनकी वफ़ात के करीब 12 साल बाद कराई। तारीख़ वफ़ात 7 जनवरी. 1933 ई०।

बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि अपने मुरीदों को उस वक़्त तक मृगछाला पर बैठने की इजाज़त न दें, जब तक उनकी सब वृत्तियाँ अन्दर को न हो जायें। यह पुरानी पड़पाटी (परिपाटी= प्रथा) है, इसको मैं मिटाना नहीं चाहता।

दो एक आलमे बाला में बैअत करने को हैं। उन शख़्सों की फ़हरिसत अलेहदा रहेगी। और उसमें तुम्हारे वालिद का भी नाम होगा। **चन्द्र लोक** के साकिनान सब तुम्हारी तरफ़ रूख़ कर रहे हैं। और तुम्हारे (RC) फ़ैज़ के खाहिशमन्द हैं। उस तरफ़ रूजूअअ हो जाया करो। इसकी तहरीक और लोकों में भी पहुंच चुकी है। मैं तुम्हें (RC) एक तरीक़ा बताऊंगा जिससे इन लोगों को बराबर फ़ायदा आसानी से पहुंचता रहे। तुम्हारे काम का दायरा बहुत वसीअ है।

बाबू **मदन मोहन लाल** को जो तुमने कल रात तवज्जोह दी, उस का असर यह हुआ कि **कुत्ब** की हालत से आगे क़दम (मदन मोहन) निकाल दिया। अब इस हालत पर उनको रूकना चाहिये। इससे फ़ायदा है। यानी **कुत्ब** की हालत छूट गई। जो बात तुमने सुबह बताई थी उस पर मश्क़ करना लाज़मी है। यह बात सिर्फ़ उनके इत्मीनान के लिये (बतलाई गई) हालत में कोई कमी नहीं है। यह मराक़िबा **निगहदाश्त** उन्हीं (**मदन मोहन**) का बताया हुआ है।

11-9-44

रामेशर अब ठीक हालत पर है। तुम्हारी (MM and RC) तरफ़ से उन्सियत बढ़ने लगी। आज तुम फिर किसी की तरफ मुत्वज्जह न होना। ग़िज़ा दूध ही रहेगी।

मुमकिन है कुछ अरसे तक इस ग़िज़ा पर क़ायम रखना पड़े। जैसी ज़रूरत होगी मैं आज बता दूंगा। आज दिन में मत सोना। सोड़ा पीने में कोई हर्ज़ नहीं। इससे सुद्दा नहीं बनेगा। यह जो तुम्हें दूध पर रखा गया है यह मेरी बड़ी मसलहत है। कुछ अन्दाज़ तुम्हें हो गया है। और आगे हो जायेगा। तुम्हारी मां को फ़तेहगढ़ में अब शान्ति है। हालांकि ख़्याल ज़रूर है।

बिरादरे अज़ीज़ **जगमोहन-** मैं रात भर तुम्हारे साथ रहा। हज़रत लाला जी साहब भी मौजूद रहे। इसका नतीजा बहुत अच्छा निकलेगा। भाई साहब (RC) मेरी भी उम्मीदें तुम्हारे साथ लगी हुई हैं। ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त तुम्हारी मैं करूंगा। और किसी वक़्त साथ नहीं छोड़ूंगा। ज़रा आज़ादी हो जाने दो। **मुन्शी** को न छोड़ना। जब मैं कहूं तब काम शुरू कर देना। यह मेरे दिल में एक ख़ार है। मैंने भी तुम्हें कोई कसर नहीं छोड़ी। और दद्दा (**मदन मोहन लाल**) को भी खूब समझा । हज़रत लाला जी साहब ने तालीम का रूख (ढंग) बदल दिया। किताबें जो छपी हुई हैं, तक़सीम ने की जावें।

तरीक़ा ऊपर के लोकों के बाशिन्दगान को तवज्जोह देने का जो हज़रत ने फ़रमाया। अपने ख़्याल से उनको अहाता कर ले। (जुमला लोकों का) और यह तस्व्वुर बांधे कि हम तवज्जोह दे रहे हैं।

इरशादात बिरादरे अज़ीज़= तरीक़ा दोयम जो अज़ीज़ **जगमोहन** ने बतलाया। अपना सूक्ष्म शरीर वहां पर क़ायम कर दे और उसको हुक्म दे दे कि तवज्जोह देते रहो। जब अन्दाज़ पूरी हो जाये तब इत्तलाह दो। यह तरीक़ा किसी ख़ास लोक की निस्बत हो सकता है। लाला जी साहब ने जो तरीक़ा बतलाया वह तुम्हारी (RC) Duties में से है। इस का लिहाज़ तुम को हर वक़्त रखना पड़ेगा। अगर कोई रूह तुम से ख़ास तौर पर मुख़ातिब हो जाये, तो तुम्हें भी उसी लिहाज़ होना पड़ेगा।

चन्द्रलोक में एक बुर्ज़ग हैं, उन्होंने ज़ात से प्रार्थना की है कि किसी को (किसी शख़्स को) हम लोगों के फ़ैज़ पहुंचाने के लिये मुक़र्रर फ़रमाईये। लिहाज़ा जनाब लाला जी साहब क़िब्ला ने तुमको (RC) मुक़र्रर किया है। और इसकी उनको ख़बर दे दी गई है। अब अपना फ़र्ज़ समझो। दद्दा (मदन मोहन लाल) के काम का दायरा बढ़ रहा है।

आपस में ज़िक्र होने पर रामेशर प्रसाद ने कहा, "कि चचा ने मुझसे, जब मैं

कानपुर गया था तो कहा था, कि मदन मोहन लाल अपने गुरु से मुन्हेरिफ़ हो गये। और उनका अन्जाम बख़ैर न होगा।”

हज़रत क़िब्ला से वाक़या अर्ज़ किया।

फ़रमाया इस शख्स (नन्हे) ने नुक़सान रसानीं की इस हद तक कोशिश की थी कि कोई तस्मा लगा हनीं रखा। इसने (नन्हे ने) यह समझ लिया था कि हमारा तीर (मदन मोहन लाल पर) कारगर हो चुका है। जिस का नतीजा उनके ख़्याल के मुताबिक़ यह था जो रामेशर ने कहा। यह उनको शुबह ही शुबह था कि वह (मदन मोहन लाल) अपना ईमान क़ब्र में सलामत न ले जा सकेंगे। पसे-पुश्त मेरी ताक़त मौजूद थी। मैंने थोड़ी ढील ज़रूर डाल दी थी। उस की वजह यह थी कि मैं जल्द अज़ जल्द एक शख़्स को तैयार कर रहा था। यह समझ कर कि उसकी ताक़त इन सबको (नन्हे बच्चे वग़ैरा) ज़ेर कर लेगी। उन्हों (नन्हे) ने जो कुछ भी किया है इसका नतीजा उन्हें मिलेगा। इस के बारे में, मैं बहुत कुछ पीछे कह चुका हूं। वह (नन्हे) बाबू मदन मोहन लाल को उतार नहीं सके। और इस तरफ़ उनकी कोशिश भी नहीं थी। जो कार्रवाई मदन मोहन लाल के साथ की गई थी उसका नक़्शा दिखला दिया। नक़्शा यह था जैसे **ज़ैद, उम्र** को जो एक आला रूहानी तरक़्क़ी याफ़ता है, इस तरीक़े से दबाता चला जाये कि उस की आला हालत इस तरह से दब जाये कि अदना और आला हालत में कोई तमीज़ न रहे। जब आला दरजे की कैफ़ियत उसकी **(उम्र)** निगाह से ओझल हो गई तो अदना की तरफ़ उसके ख़्याल का अटकाओ होने लगा और उसकी कसाफ़त तबीयत में भरने लगी। उस दवा के असर (इशारा मिन जानिब उस चीज़ के जो कानपुर में बाबू **राम चन्द्र** साहब को आलू के शोरबे में खिलाई थी) से जिस वक़्त तुम्हें चक्कर आये थे और मतली छूटी थी और किसी हद तक नशा भी था उस वक़्त भी तुमने मेरा ख़्याल नहीं छोड़ा था। जिसकी ऐसी हालत पैदा हो जाये, वह यह उम्मीद रखे कि जिस्म छोड़ते वक़्त उसका काम बनेगा।

मुतालिक़्क़ा रामेशर प्रसाद- रामेशर ने जिस वक़्त अपनी तबीयत का रूझान उनकी तरफ फेर दिया, हज़रत (नन्हे) की बाछें खिल गईं कि अब मैदान हाथ में आ गया। पहली बात जो उनके साथ की गई थी कि जो उनकी मुहब्बत मेरी तरफ़ थी, वह अपनी तरफ़ रूजूअ कर ली। सबसे बड़ा नुक़सान तो यह था जिस वक़्त वह (नन्हे) यह अमल कर चुके और इसका असर होने लगा और उनकी (रामेशर की) रग़बत

उनकी (नन्हे) की तरफ़ बढ़ने लगी तब इजाज़त का लसतग्गा (Lastagga) लगा दिया। जिसने मेरी इजाज़त पर भी असर डाला। उनका (नन्हे) मतलब था कि इस इजाज़त को फरज़ी तौर पर आगे बढ़ाते चलें और फिर इस के हर स्टेज को उनके सुर्पुद कर दें। ताकि यह (रामेशर) एक गिरोह ऐसा तैयार कर सके जो उनके (नन्हे) मुवाफ़िक़ पड़े और बाबू मदन मोहन लाल को ज़क पहुंचे। और तन्हा रह जायें। यह मैंने उनकी (नन्हें) पॉलिटिक्स (Politics) बयान की। उन्होंने रामेशर में वह कसाफ़त भरी थी। उसमें माद्दी ज़र्रात ऐसे भर दिये थे जो उनको ताव देने के लिये काफ़ी थे। इस माद्दे में चूंकि ज़मीनी असर था, इसलिये लताफ़त के ज़र्रात को (उन्होंने) दबा दिया। एक अरसे तक इसी में क़ायम रहने से तबीयत ज़ोरदार बन गई और ख़्याल ने इससे हम-आहंगी हासिल कर ली। इस हालत को जिसको कसीफ़ कहा जा सकता है, ज़ोर पर थी जिस को मैंने अज़ीज़ रामचन्द्र से सलब कराया था। और नुक़सान रसानी की बातें मैंने सलब की थीं। क्या रामेशर को यह अच्छा मालूम होता कि उन के धोके में आकर मुझ को बेचिराग़ कर देते? उनकी बहुत बड़ी भूल थी, बल्कि नासमझी थी। रामेशर से मेरी तरफ़ से एक मर्तबा और कह दो कि उन पर (नन्हे) पर नालत भेजें।

12-9-44

मैंने अज़ीज़ रामचन्द्र के साथ इस तीन दिन में वह काम किया जिसको कि बुज़ुर्ग लोग चालीस रोज़ में ख़त्म करते थे। और अक्सर बेआबोदाना रखते थे। जितनी ताक़तें कि हो सकती हैं, इस तीन दिन में सब भर दी गईं। अज़ीज़ रामचन्द्र के एहसास पर मरहबा कि उसको पता चल गया था कि मेरा क्या मन्शा है। इज़हार करने की मैंने मुमानियत कर दी थी, इस लिये उसको ज़ाहिर नहीं किया। बाबूमदन मोहन लाल को ख़ुशख़बरी दो कि आयंदा से इनसे (अज़ीज़ रामचन्द्र) **ख़्वारक़** सरज़द होंगे जो **ग़ौस-उल आज़म** के लिये ज़रूरी हैं। मैंने उनको ताकीद कर दी है कि उस तरफ रूजूअअ न हों। **अन्नमय कोश** उनका (अज़ीज़ रामचन्द्र) टूट चुका है।

तरीक़ाः- जब किसी में यह हालत पैदा करना हो तो उसको मेयादे-मोईना तक नमक खाने को नहीं देना चाहिये। इसलिये मैंने उनको मुमानियत कर दी थी कि नमक किसी शक्ल में इस दौरान में इस्तेमाल न किया जावे। बलिहाज़ तंदरूस्ती, आख़िरी

रोज़ सिर्फ़ सोड़ा वाटर पीने की इजाज़त दी थी। **आज बड़ी ख़ुशी का दिन है कि वाक़ई तौर पर मैंने उनको (अज़ीज़ रामचन्द्र को) आज मुकम्मिल कर दिया। उनको यह भी इख़्तयार है कि अगर किसी बुर्ज़ग से करामात तकलीफ़-देह सरज़द होने लगें तो उनको सलब कर सकते हैं।** अब आप (मदन मोहन लाल) दिल खोल कर कह सकते हैं कि जिसका जी चाहे, जिस तरह से इनको (अज़ीज़ रामचन्द्र को) देख ले। **नीज़ लिखो, मैंने आज इनको (अज़ीज़ रामचन्द्र को) मुकम्मिल कर दिया।** और इस बात के कहने में भी कोई हर्ज़ न होग कि अज़ीज़ रामचन्द्र की मुझ (मदन मोहन लाल) से एक अरसे तक सोहबत रही। इसके फ़ायदे को भी ज़रा (मदन मोहन लाल) ग़ौर कर लें। उनकी (मदन मोहन लाल की) सोहबत से उनको (RC) फ़ायदा हुआ है। यह नोट मैंने इसलिये लिखाया है कि उनकी भी (यानी मदन मोहन लाल की भी) यादगार रहेगी।

सवाल= 9 सितम्बर सन 44 ई० को इरशाद हुआ था कि "मैं तुम्हारे (RC) और बाबू मदन मोहन लाल के दरमियान ऐसा बरतावा चाहता हूं जैसा कि मेरा और मौलवी अब्दुल ग़नी खां साहब था।"

फ़रमाया = यानी एक दूसरे को बुर्ज़ुग मानते थे, और एक दूसरे का लिहाज़ करते थे। (बाबत 9-9-44)

लल्लन की दुरस्ती की तरकीब यह है कि उसको शान्ति में लपेटे रखें (मदन मोहन लाल), और नर्वस सिस्टम रफ़्ता-रफ़्ता शान्त कर दें।

तरीक़ा दुआ = जिस वक़्त किसी मरीज़ के लिये दुआ करना मंजूर हो तो उसके लिये बेहतर तरीक़ा यह है कि फूल (एक Metal) के कटोरे में पानी इस तरह से भर कर रख ले कि मरीज़ उसको देखता रहे। और उस हालत में उसके लिये दुआ करे। मगर वह मरीज़ जो जाँकुनी की हालत में हो, उसके लिए दुआए-सेहत बेसूद होगी। दुआए-मग़फ़रत करना चाहिये। दिक़ के मर्ज़ में सख़्त मुमानियत है। अगर दुआ भी की जाये तो ख़्याल को अलेहदा करके करना चाहिए। जो उठ-लगनी बीमारियां जिनको Contagious कहते हैं, उस के लिये दुआ बतौर फ़र्ज़ अलेहदा करना चाहिये। ऐसी हालत में पानी रखने की ज़रूरत नहीं।

आपस में ज़िक्र था कि राज़ कुदरत आज़ाद आत्माओं को सब मालूम हो जाते हैं।

फ़रमाया = **शिमला बर अन्दाज़े-इल्म**। (अर्थात= जितना इल्म (ज्ञान) हो उसकी

मुनास्बत से दावा ज़ेब देता है)।

जो शख़्स कि आज़ाद जाता है, कुदरत के राज़ उस पर अफ़्शां हो जाते हैं। मगर फिर भी बाक़ी रहते हैं।

13-9-44

बाबू **मदन मोहन लाल** को ख़ुशख़बरी दो कि **हज़रत मुजद्दिद् साहब** (रहम०) ने उनको भी फ़ैज़ दिया।

वाक़्याते-शबे-दीरोज़ = हमारे क़िब्ला हज़रत मौलाना साहब **(रहम०)** कल शाम के वक़्त तशरीफ़ लाये थे। बाअदा खलीफ़ा जी साहब (रहम०) भी चन्द मिनट के लिये रौन्नक़ अफ़रोज़ हुये। मतलब मेरे काम की तस्दीक़ थी। हज़रत मुजद्दिद् साहब (रहम०) तक जितने बुर्ज़ुग हैं, सब ने तस्दीक़ कर दी। इस की ख़बर हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) को भी दे दी गई। उन्होंने भी मंज़ूर कर लिया। हज़रत मुजद्दिद् साहब ने अपनी निस्बत रामचन्द्र को अता की। बाबू मदन मोहन लाल भी इससे महरूम नहीं रहे।

नन्हे को यह यक़ीन हो गया कि अब दौलत उनके हाथ से निकल गई। रामेशर को मैंने इस लिये बुलाया था कि उनको भी कुछ तलक़ीन करना है। बाबू मदन मोहन लाल का ख़्याल शाहजहांपुर वालों के लिये बहुत अच्छा था। वह हमेशा उनकी तरक़्क़ी के कोशाँ रहे, मगर उनको किसी ने दाद नहीं दी। उसमें से एक रामेशर भी थे जिनकी आला तरक़्क़ी के लिये बाबू मदन मोहन लाल दुआ करते रहे। यह उन्हीं की कोशिश और दुआ का असर है कि मुझे आज यह दिन नसीब हुआ। मैं उनकी हिम्मत की और नेक ख़्याली की दाद देता हूं। और रामेशर को हिदायत करता हूं कि वह उनसे रूजूअ रहें। उनकी (रामेशर) इजाज़त जो सलब की गई थी, परसों रात करीब 9 बजे के वापिस दे दी गई। उसमें चन्द बातें उनको मद्देनज़र रखना पड़ेंगी। एक यह है कि बाबू मदन मोहन लाल की ग़ैबत में सतसंग करायें और उनकी हिदायतों पर जो इस के मुत्ताल्लिक़ हों, अमल करें। रामेशर एक नुक़्स को दूर करने की कोशिश करें और बाबू मदन मोहन लाल से उसके दूर करने में मदद लें। वह यह है कि उनकी आदत पड़ गई है कि जिस बात को वह लेते हैं उसको इस क़दर तेज़ पकड़ते हैं कि अहमियत आ जाती है। यह नुक़्स रूहानी तालीम लेने वाले के लिये

मुज़िर है। इस का ख्याल रखें। और जो काम बाबू मदन मोहन उन के सुर्पुद करें, अपना फ़र्ज़ समझें।

मुताल्लिक़ा जिल्दान = सब से बेहतर तरीक़ा किसी रूह को शान्त करने का यह है कि यही अमल जिस को मैं पीछे बता चुका हूं, अर्क़ गुलाब सामने रख कर करना चाहिये। अर्क़ गुलाब गिलास में होना चाहिये ताकि उसका असर ऊपर जा सके। जग्गू के लिये इस तरीक़े के करने की ज़रूरत नहीं है। बाबू मदन मोहन लाल को जग्गू के लिये इस तरीक़े के करने की ज़रूरत नहीं है। बाबू मदन मोहन लाल को जो जग्गू की निस्बत अभी बताया गया है, बराबर करते रहें। मैंने इस वक़्त उनको शान्त कर दिया है।

14-9-44

मैंने कल से और अब से क़ब्ल तक वह-वह कारे-नुमायाँ किये जो हर शख़्स की ताक़त से बाहर थे। रामेशर अब ठीक हो गया है, उसको तवज्जोह देने की ज़रूरत है। बाबू **भवानी शंकर** को लिख दिया जाये कि उनको पंडित गिरधारी लाल की सोहबत की ज़रूरत नहीं। यह काम मैं मदन मोहन लाल के सुर्पुद करता हूं, वह जो कुछ चाहें लिख सकते हैं।

गिरधारी लाल सलब हो चुकें हैं। मैं उनसे पहले ही नालाँ था।

ख़्वारक आला मदारज पर तब कहे जा सकते हैं, जबकि करने वाले को इल्म भी न हो और काम हो जाये। बिलक़स्द सिवाये किसी ख़ास सूरत के मैं करने के लिये हुक्म नहीं देता। अगर कोई मार्रका आन पड़े तो इजाज़त है। तुम्हारी सुबह की बातें मैं सब सुनता रहा हूं। कोई बात ऐसी नहीं होती जो तुम से कही जाये और मुझ को इल्म न हो जाये। वजह ज़ाहिर है। इसको कहने की बार-बर ज़रूरत नहीं और अगर चाहो तो लिख लो कि मैं तुम्हारा किसी वक़्त साथ नहीं छोड़ता। तुम्हारे दिमाग़ को आराम देने के लिये थोड़ा खिंच जाता हूं। और यह भी मक़सद है कि तुम्हारी आदत न पड़ जाये और ख़्याल पर ज़ोर देना छोड़ दो। जहां ग़लती होगी, फ़ौरन बता दूंगा।

यह भी एक नया तरीक़ा है और मेरी ईजाद है।

बाबू **मदन मोहन लाल** को मैं किसी वक़्त एक **ताक़त अता** करूंगा। उनके घर के वाक़यात सब मेरे पेशे-नज़र हैं और उनका ज़िक्र भी अभी हो चुका है। ज़रा मुझको

संभल लेने दो। मैं इस का इन्तज़ाम करूंगा। मैंने बहुत सी तकलीफ़ें अपनी ज़िन्दगी में उठाई हैं। समझ लें कि थोड़ी सी मुझ पर (मदन मोहन) भी है। मुसीबतें कभी यकसाँ नहीं रहतीं। हर बात का वक़्त होता है। उनको (मदन मोहन) अब **आना नहीं** है। मेरा दिल मुसीबतों से पक गया था और मेरी भी तबियत अक्सर परवाज़गी को चाहती थी। और यह बात मेरे **इख़्तियार** में थी कि जब चाहूं, **परवाज़** कर जाऊं। मगर हुक्म से मजबूर था। यह **बन्द** मैंने राम चन्द्र का अभी तक नहीं खोला है, वजह ज़ाहिर है। इनको भी मुमानियत है कि जब इन को इस **बन्द** से ख़बर हो जावे तो अपने सज्जादा-नशीन का न खोलें। हमारे हज़रत को एतबार था, इस लिये यह बात उन्होंने मेरे हाथ में दे दी थी।

मैंने अपनी ज़िन्दगी में अपने आप को इस क़दर मिटा दिया था कि मेरी कभी तबियत किसी शख़्स के नुक़सान के लिये नहीं चाही।

मन आँ मोरम कि अज़ पायम बमालन्द।
न ज़ंम्बूरम कि अज़ दस्तम नबालन्द।।

(अर्थात= (मैं वह चिंउटी हूं जो हरेक के पैरों तले कुचली जाती है। वह भिड़ (wasp) नहीं हूं जो किसी के हाथ को डंक मारे।)

मैंने ज़िन्दगी भर यही उसूल रखा और इस का ख़्याल अब भी बाक़ी है। हुक्म से मजबूरी हो जाती है। **बाबू मदन मोहन लाल अगर चाहें तो इस शेर पर अमल कर सकते हैं।** तुम्हारे (RC) लिये कुछ अरसे तक मैं इजाज़त नहीं देता और मुमकिन है कि कभी इजाज़त न दूं।

जदीद तरीक़ा तालीम= तुम्हारी तालीम मैंने बिल्कुल नये तरीक़े में की है। हर बात दिखा-दिखा कर आगे बढ़ाया है। मैंने यह तालीम और लोगों को भी देना चाही, मगर कोई इस के अहल न मिला। इस का नतीजा यह हुआ कि तुम्हारी तालीम भी नये तरीक़े की है। जो तुम्हारे पास बैठेगा, कश्फ़ उसका अच्छा रहेगा। इस तरीक़े (तरह पर) से यह बात फैल जायेगी। जो ख़मीर तुम में मौजूद है और मैंने बख़शा है, वह दूसरों में जायेगा और फिर वह लोग दूसरों को, अगर ख़ुदा ने मदद की, तो वैसी ही तालीम देंगे।

नुसख़ा- बेर की गुठली का मग़्ज़, बेल गिरी, तुख़्म बकायन

6 माशे 2 माशे 8 माशे

ज़ीरा सफ़ेद घी में भुना हुआ

1-1/2 माशे

इन सब को बारीक पीस कर और कपड़ छान करके नमक सिन्ध्या बक़द्र ज़रूरत डालें और अर्क़ लीमूँ काग़जी में तीन पुट दी जावें और जब खुश्क हो कर गोली बनने के क़ाबिल हो जावे तो चने के बराबर की गोलियां बना ली जावें। जिसको दस्त आते हों वह तुख़्मी आम की गुठली उसमें मिला सकता है- 6 माशा काफ़ी होगी। अगर रियाह का ज़्यादा ज़ोर हो तो सुबह को निहार-मुंह, वरना खाना खाने के बाद। हाज़मे की ज़्यादा शिकायत हो तो ज़ीरा सफ़ेद 2 माशे डाला जा सकता है, वरना डेढ़ माशा। वज़न ठीक-ठीक होना चाहिये। खुराक 2 माशे या 3 माशे। यह नुस्ख़ा तुम्हारी (RC) नब्ज़ देख कर बताया गया है इसलिये तुम्हारे ही लिये बतलाया गया है। रामेशर को हब्स रियाह की शिकायत रहती है, इस्तेमाल करके देख लें।

15-9-1944

इस वक़्त उनकी (मदन मोहन लाल) हालत बढ़ाई गई। अब **कुत्ब-उल-अक़्ताब** की हालत है।

हिदायत- मैं राम चन्द्र को हिदायत करता हूं कि जितने ऊंचे दरजे का आदमी हो उतनी ही कम देर बैठालना चाहिये। बाबू **मदन मोहन लाल** के लिये जब कभी मेरा (उनकी) हालत बढ़ाना मक़्सूद हो तो **एक मिनट** तक बिठा सकते हो। दुरस्ती ख़्यालात में उनको (RC) इख़्तियार है कुछ ज़्यादा देर तक बैठाल लें। वजह यह है कि इससे ज़्यादा मामूल में बरदाश्त की ताक़त ही न होगी। यह कोई हैरत की बात नहीं है। पीछे (पहले) मैं इनके (RC) बारे में, मैं बहुत कुछ कह चुका हूं। जो यह (RC) ख़्याल बांधेंगे, वह होकर रहेगा। बाबू **मदन मोहन लाल को भी इस की एहतियात लाज़मी और लायदी है। वह भी इस पर अमल करें**। रामेशर से कह दो कि मैंने अज़ीज़ रामचन्द्र के हाथ बटाने के लिये एक और क़ीमती आदमी (मदन मोहन लाल) तैयार कर दिया है। उससे रूजूअ रहें। इस हालत **कुतुबुल-अक़्ताब** के लिये मैंने **बाबू मदन मोहन लाल** से वायदा किया था, उसको पूरा कर दिया। **यह बहरे-ज़ख़्ख़ार हैं, चले**

जायें। मेरी ख़्वाहिश थी कि इस दौरान में कुछ और असहाब तुम तक आने की हिम्मत करते। मगर यह न हो सका। मेरी आमदो-रफ़्त रामचन्द्र की ज़िन्दगी तक यहां बराबर लगी रहेगी। और आने वाले बराहे-रास्त मुझसे मुस्तफ़ीज़ होते रहेंगे। और किसी को ताक़त नहीं है कि मुझ को बुला सके। **जग्गू** का दौरा भी यहां बराबर रहेगा। और उन्हों (जग्गू) ने भी वायदा किया है कि अज़ीज़ राम चन्द्र का साथ ताज़ीस्त न छोड़ूंगा। और हमेशा मददगार रहूंगा। बवजूहात चन्द दर चन्द फ़िलहाल उनको आने से रोक दिया गया है। मगर यह पाबन्दी हमेशा नहीं रहेगी। रामेशर से कह दो कि अपनी माँ की तरफ़ कभी-कभी रूजूअ हो जाया करें। मगर यह ख़्याल रहे कि उनके संस्कार उन पर (रामेशर) असर न करने पावें। अगर धोखे से ऐसी गलती हो भी जावे तो उस को साफ़ करा लें। यहाँ पर दो आदमी (R.C.-M.M) मौजूद हैं जो इस बात की सफ़ाई कर सकते हैं। इसका पता यूँ चल सकता है कि तवज्जोह के बाद जब गन्दगी महसूस हो या चित्त में गिलान पैदा हो जाये और तवज्जोह देने के बाद जो तबियत खुश होती है, वह न हो तो समझ लेना चाहिये कि संस्कारों का असर हो गया है। अभी तक **रामेशर** की कैफ़ियत उनके **चचा** की बदौलत ऐसी गिरी हुई रही है कि उनको इस हालत के आदी हो जाने की वजह से पता ही नहीं चला। अब यह बात दूर हो गई है और लताफ़त का मज़ा आने लगा है। मैं जिस वक़्त असल भंडार से आया था तो **जग्गू** ने तुम लोगों को सलाम कहला भेजा है। रामेशर से कह दो कि अज़ीज़ रामचन्द्र की हालत के बारे में बाबू मदन मोहन लाल को हमजलीस रहने की वजह से ख़बर है। उनको (रामेशर को) मैं इत्मीनान के लिये अज़ीज़ रामचन्द्र की हालत आज बताता हूं। उसका (RC) हर रग व रेशा मुझ में लय हो चुका है और मैंने भी ऐसी तरक़्क़ी उसको (RC) दी है कि जिस के जानने के लिये लोगों की नज़र ही नहीं है। इस वक़्त तक कोई शख़्स ऐसा मौजूद नहीं है जो उसकी (RC) हमसरी कर सके। उसके (RC) काम का दायरा इस लोक में मुहीत नहीं है। बल्कि आलमे इरवाह व दीगर लोकों में उसकी हुकूमत है। मैंने कोई बात ऐसी नहीं छोड़ी जो उनमें कूट-कूट कर न भर दी हो। अब दरजात का हाल सुनिये। मुमकिन है कि लफ़्ज **ग़ौस-उल-आजम** कहीं किताबों में पढ़ा हो या कहीं सुना हो, यह इस हालत को पार कर चुका है। बड़े-बड़े बुज़ुर्ग, हज़रत मुजद्दिद् साहब को छोड़ता हूं, इस हालत को पार न कर सके। यह रूहानियत का सबसे आला और आख़िर दर्जा है। इस के बाद मेरी **ईजाद** है। उधर उसी के मुताबिक़ मैं इसको (RC) वहां तक पहुंचा चुका हूं। इस का (RC) जिस्म ज़ाहिरी

सिर्फ़ दुनिया में है। यह (दर्जा ग़ोसुल-आज़म) दिल की आख़री दौड़ है।

रामेशर ने कहा कि किताब **"तज़किरा-ए- ग़ोसिया"** में एक बुज़ुर्ग ने आख़िर वक़्त पर थु-थु, फु-फु वग़ैरा किया है। इस का मतलब समझ में नहीं आता?

फ़रमाया = जिन साहब ने **"तज़किरा-ए-ग़ोसिया"** में फ़रमाया है उनकी हालत अहमियत में ठोस हो गई थी, और अपनी कमज़र्फ़ी की वजह से "अहम ब्रह्म" पुकारने लगे थे। जब उस की तेज़ी मौत की तकलीफ़ के असर से कम होना शुरू हो गई तब होश आया, और उस हालत में जो समझ में आया, कह दिया।

हमारे यहां हर स्टेज पर यह कैफ़ियत जिसको "अहम ब्रह्म" कहा है, पैदा होती रहती है मगर गुरु उस पर ज़ोर नहीं देता। जो लतीफ़ा अपने दर्जे कमाल पर पहुंच जाता है उस में यही सदा बरामद होने लगती है। यह और बात है कि कोई एहसास करे या न करे। आख़िर में भी यह कैफ़ियत पक-पका कर आती है। वह असल कैफ़ियत है, इससे आगे बढ़ने पर यह बात क़रीब-क़रीब एहसास में आना बन्द हो जाती है।

17-9-44

बाबू मदन मोहन लाल को ख़ुशख़बरी दो कि जिस ताक़त का मैंने वायदा किया था, वह अता कर दी। **जिस मुक़ाम को साफ़ करना हो, उसी मुक़ाम से तवज्जोह दो। हर स्टेज के Pass करने में दिल ही से तवज्जोह देना होगी।**

18-9-44

डॉक्टर श्री किशन लाल को लिख दो कि बवजूहात चन्द दर चन्द शिरकत से माज़ूरी है। दिल तर्जुबों से पक गया है। अब मैं यह मुनासिब समझता हूं कि **श्री किशन** को भी कुछ मज़ा चखाया जाये। बजाये इसके कि गुत्थी सुलझाने की कोशिश की जाती, और पेंच डाले जा रहे हैं। अपने नशे में सब लोग मख़मूर हैं। लिहाज़ा बहुत सोच समझ कर मैंने यह राय क़ायम की है कि डॉक्टर **श्री किशन को कतअन सलब कर लिया जाये**। यह काम आज ही होना चाहिये। **बाबू मदन मोहन लाल** से कह दो

कि वह भी होशियारी से काम करें। जो ड्यूटी उनके सुपुर्द की जा रही हैं उनको फ़र्ज़े-अव्वला समझें। और जहां तक हो सके उन्हीं कामों में मसरूफ़ रहें। मैं इन कामों को **बहुत जल्द ख़त्म करना चाहता हूं। बरदाश्त की इन्तिहा हो चुकी है।** मैंने श्री किशन को कुछ समझ कर छोड़ रखा था। यह शख़्स (श्री किशन, चतुर्भज सहाय) इस क़ाबिल न थे कि उनको ब्रह्म विद्या का उपदेश किया जाता। **पैरवीये पीर** थी, जिस से मैं मजबूर था। तुम अपने सिखाये हुवों को हरगिज़ इजाज़त न देना। यह तुम्हारे सज्जादा नशीन का काम होगा। अगर कोई स्पेशल केस हो तो मुझसे **Consult** कर लेना। मेरी तकलीफ़ात का कोई सही अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। जिस्म न होने की वजह से उसका एहसास नहीं होता। मेरा ख़्याल था कि इजाज़त देने से यह लोग मख़लूक़े-खुदा को अच्छा फ़ायदा पहुंचा सकेंगे। मगर तर्जुबा बरअक्स हुआ। **जब अपनों का यह हाल है तो ग़ैरों की शिकायत क्या की जाये। ख़ुदा न करे कि मुझे आख़री औज़ार इस्तेमाल करना पड़े। आसार अच्छे मालूम नहीं होते। मुमकिन है कुछ लोगों के साथ ऐसा ही करना पड़े।** डॉक्टर चतुर्भज सहाय को यह यक़ीन हो गया है कि वह **सलब** हो चुके हैं। उनकी हिम्मत काम नहीं देती। मगर वह इस **कमज़ोरी को किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देते।** मतलब साफ़ है। मुझे सिवाय दो शख़्सों (RC-MM) के कोई नज़र नहीं आता जिसको मैं अपना समझूं और काम लूं।

मैं एक तरीक़ा मदन मोहन लाल को काम करने का बतलाता हूं कि **जो काम सुपुर्द किया जावे,** सबसे पहले यह तसव्वुर बांध लें कि यह काम हो गया। इससे उसकी जड़ **पल** जावेगी, फिर काम शुरू कर दिया जावे।

नतीजा मतलूब जल्द पैदा करने की तरकीब यह है कि जिस काम को शुरू करके ख़त्म किया है, उसको ख़त्म ही समझा जाये। इसके ख़िलाफ़ ख़्याल पैदा न हो। यह और बात है कि उसमें पॉवर वक़्तन् फ़ौक़्तन (फ़वक़्तन) देना पड़े। यह सब काम उनको (मदन मोहन लाल) सबसे ऊंची हालत पर चढ़ कर करना चाहिये। तसव्वुर बांध लें कि मैं सब से ऊंची हालत पर आ गया, फिर काम को शुरू कर दें।

तनबीह = अगर किसी काम में अड़चन पड़ जाये तो अज़ीज़ रामचन्द्र से मद्द तलब कर लें। अगर कहीं ऐसा इत्तफ़ाक़ पड़े कि काम करते वक़्त वो मौजूद न हों, उस वक़्त वह ख़्याल से मदद तलब कर सकते हैं। फ़ौरन बेशुमार पॉवर आना शुरू हो जावेगी। मगर यह ख़्याल रहे कि काम के अंदाज़ से ज़्यादा पॉवर तलब न करें।

और यह बात उनका ख़ुद दिल बता देगा।

मेरा जिस्म अब नहीं है। अगर मैं किसी बात की अपनी नक़ल बतलाऊं तो बेसूद होगी। इस वक़्त में एक Ideal रामचन्द्र सामने हैं। अगर उसके एहसास की नक़ल करना शुरू करें तो बहुत फ़ायदा होगा। एहसास उनका (मदन मोहन) खुल चुका है। मश्क़ की ज़रूरत है।

हिदायत= यह तरकीब और किसी को न बतलाई जाये, वरना इस से नुक़सान यह होगा कि लोग रास्ते से फिर कर **करिश्माबाज़ी** शुरू कर देंगे, जिसकी अपने यहां मुमानियत है। **नक़ल** में नादानिस्ता **ज़ौहर** भी साये की तरह अपना असर डालता रहता है। हत्ताकि वह बात मज़बूत हो जाती है। हर शख़्स इसको कर भी नहीं सकता।

तुमने (RC) इस वक़्त कमाल कर दिखाया। मैं ख़ुशी में फूल गया। **ख़ुदा करे तुम्हारा (RC) नाम माहे-दरख़्शाँ की तरह अबद तक रोशन रहे**। यह तीरक़ा जो तुमने सोचा है, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आज तक किसी के दिमाग़ में नहीं आया। इससे बेहतर **सलब** करने का तरीक़ा हो ही नही सकता। बाबू मदन मोहन लाल से कह दो कि **एहसास** इस को कहते हैं।

जो बात तुमने सोची है, श्री किशन का Connection इसी से क़ायम कर दो। उस के बाद जो सोचा है, यह बड़ी Destructive बात है, इसके करने की ज़रूरत नहीं। यह तरीक़ा हर शख़्स कर भी नहीं सकता। तुमने इस वक़्त वह काम कर दिखाया जो मुश्किल था। मैं (उसके) Action को Catch करता रहा। इससे एक यह भी फ़ायदा है कि ज़मीन में रूहानी असरात जो कम हो रहे हैं, शामिल हो गये। मगर ज़मीन को अच्छा बनाने के लिये यह तरीक़ा नहीं करना चाहिये। अपनी Will power से जो कुछ करना चाहो उसके लिये इजाज़त है। यह वह तरीक़ा है कि एक कसीर तादाद की रूहानियत सलब करना चाहे तो एक मिनट में सलब हो सकती है। मगर इसके करने की मुमानियत है। मदन मोहन लाल से कह दो कि इस तरीक़े को किसी को मत बतलायें, बल्कि अपने सीने में ले जायें। जो तुमने रात तरीक़ा मुझसे रूजूअ करने के लिये Suggest किया था, बड़ा मुजर्रिब है। ऐसा करने से यह ज़रूरत नहीं रहेगी कि हर जगह एक आदमी सतसंग के लिये मुक़र्रर किया जावे। और इससे मक़सद बरारी पूरे तौर से हो सकेगी।

जदीद तरीक़ा सतसंग

इस तरीके की तुम्हारी तारीफ़ है और क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने भी इसको बहुत पसंद किया है। लिहाज़ा इसको फ़ोरन रायज कर दो। कुछ परवा नहीं कि इस के अभी थोड़े ही करने वाले या मानने वाले हैं। इस तरीक़े को अगर पाबन्दी के साथ **बाबू मदन मोहन लाल** कर सकें, तो बहुत अच्छा है। अगर वह टाइम जो मुक़र्रर किया जावे, असनाये सतसंग में शुरू हो जावे तो वहीं अमल करना शुरू कर दें। यह ऐसा तरीक़ा है जो आज तक किसी के दिमाग़ में नहीं आया। और इससे मेरी भी तारीफ़ हुई। मैं समझता हूं, जुमला Stages पार कराने के लिये यह ही तरीक़ा काफ़ी होगा।

तुम्हारे लिये इसकी पाबन्दी की ज़रूरत नहीं। लोगों को मेरी **सज्जादा नशीनी का दावा है**। क्या कोई ऐसी मिसाल (मुराद **राम चन्द्र**) सतसंग में मौजूद है। **लोगों का ज़ोअम बातिल है कि अपने आप को मेरा सज्जादा नशीन समझ रखा है**। मैं समझता हूं कि मेरी जुमला रियाज़तों का समरा है जो मुझे मिला है। और मेरी तबियत उनको (RC) देख कर खुश हो जाती है। बस यही एक इत्मीनान है। अपनी नसल में आगे आने वाले लोगों को ख़ास तौर पर हिदायत की जाये कि इस तरीक़े को क़ायम रखें।

आज दो या तीन रोज़ हुये होंगे। तुम्हारे (RC) काम के सिले में जो वायदा किया था उसको पूरा कर दिया यानी **तुम बख़्श दिये गये**।

क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) को जब मैंने तुम्हारे **ईजाद** करदा इस तरीक़े की इत्तलाह दी तो मारे ख़ुशी के उछल पड़े। **मुझे सीने से लगा लिया और फ़रमाया कि खूब बनाया है।** उसके इलावा तुम से मुख़ातिब हुये और चन्द मिनट तक तवज्जोह देते रहे और फ़रमाया कि **ख़ुदा इसको (रामचन्द्र) हर तरह से भरपूर कर दे**। तुमने (रामचन्द्र) तरक़्क़ी की इन्तिहा कर दी। मैं समझता हूं कि शायद तुम्हारे जाँनशीनों में से कोई इस हद तक न पहुंच सके। **ख़लूस के नमूने हो**। तुमसे बहुत सी ईजादें होंगी और इस सिलसिले में जिला हो जायेगी। तुम्हारी सिफ़ारिश **हज़रत मोहम्मद साहब (सल्ल०)** से की जावेगी और इसमें सब बुज़ुर्ग मुत्तफ़िक़ उल राय हैं। तुमने अपनी **सुस्ती** में वह कमाल कर दिखाया कि अच्छों-अच्छों को मुश्किल था। मैं तुम को अपनी **जान** समझता हूं। मेरी मेहनत रायगाँ नहीं गई। कोई निकला तो। **श्याम बिहारी लाल** की इजाज़त मुन्क़ताअ कर दी गई और **श्री किशन** क़तअन् सलब कर लिये गये।

19-9-44

रात तुम दोनों का काम बहुत अच्छा रहा। सिकन्द्राबाद में जलसा होने वाला है। बाबू **मदन मोहन लाल** से कह दो कि इन तारीख़ों में वहीं मौजूद रहें। और जलसा बिगाड़ने की कोशिश करें। **जग्गू** ने तुम दोनों को सलाम कहा है। तुम्हारे लिये क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) ने भी दुआ कहला भेजी है। तुम में हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) की निस्बत भी शामिल है। बुज़ुर्ग लोग तुम्हारे लिये **हज़रत मोहम्मद साहब (सल्ल०)** से रूजूअ हो रहे हैं।

तरीक़ा वृत्ती ख़ामोश करने का = जब वृत्तियों को ख़ामोश करना मंज़ूर हो और एत्दाल पैदा करने को जी चाहे तो मुक़ामे उलिया से तवज्जोह देना चाहिये।

मुहब्बत इस को कहते हैं कि मेरा मदन मोहन लाल को तवज्जोह दिलवाने का यह ही मन्शा था। यह (RC) अज़ ख़ुद वह ही करने लगे। **उलिया** की यह ही कैफ़ियत है जो तुमको (मदन मोहन लाल) इस वक़्त एहसास हो रही है। **बदक़िस्मतों** को क्या करूं जो उनसे (RC) फ़ायदा नहीं उठाते। **अज़ीज़ रामचन्द्र में वहीं ख्यालात मोजज़न होते हैं जो मैं चाहता हूं।**

मिसाल = मैंने फ़तेहगढ़ की जो खबर सुनाई थी कि वहां पर सुनसान ज़्यादा है। मेरा यह मतलब था कि उसको दूर कर दें। चुनांचे बग़ैर कहे हुये उन्होंने ऐसा ही किया। उनसे (RC) जो बातें आइन्दा सरज़द हों, वह मेरी ही मन्शा समझी जावे। यह **रूहानी सम्बन्ध** की मिसाल है और माद्दी सम्बंध की **श्री किशन** मिसाल थे। अब उनमें वह बात मौजूद नहीं है। मेरा इस दारेफ़ानी से किनारा करते ही उनमें यह बात मादूम हो गई।

मर्द वह है कि जिस बात को पकड़े, आख़िर तक निभा ले जाये। तुम्हारे (RC) मौजूदा दर्जे को मैं कुछ कह नहीं सकता। इसके आगे कहना कुफ़्र के दायरे में आता है। जिस जगह से तम निकल जाओगे, तुम्हारे क़दम की ख़ाक भी मौस्सर हो जावेगी। यह बात हज़रत मोहम्मद साहब (सल्ल०) में थी।

बाबू मदन मोहन लाल को ख़ुशख़बरी दो कि एक बात और ईजाद कर दी। इसके लिये जब यह बतलायें तो Confidential नोट में तहरीर कर देना।

20-9-44

मुज़दाबाद, अज़ीज़ रामचन्द्र मक़बूल हो गये। इस दौरान में यके बाद दीगरे उन्होंने तीन ईजादें कीं। आख़िरी ईजाद आबेज़र से लिखने के लायक़ है। इससे मख़लूक़ ख़ुदा के लिये फ़ायदा ही फ़ायदा है। इस आख़िरी ईजाद में सिर्फ़ इतना अन्दाज़ क़ायम रहने की ज़रूरत है कि जुमला हवास एक दम से अन्दर खिंच न जायें। उतना क़ायम रहने देना चाहिये, जितने की ज़रूरत है। यह काम सिर्फ़ सज्जादा नशीन ही कर सकता है। क्योंकि उसके गाइड करने के लिये गुरू की ताक़त हर वक़्त शामिलहाल रहती है। एक ईजाद पॉलिटिक्स (Politics) में ज़्यादा मुफ़ीद है जो बाबू मदन मोहन लाल ने Suggest की थी। और उसी के लिहाज़ से यह बात सोची गई। बक़िया रूहानी फ़ायदा इससे नहीं है। अभी इनको सोचने का और मौक़ा दिया जाये ताकि उस में थोड़ी सी Improvement यह अदा कर सकें। दो ईजादें इनकी बहुत ग़ज़ब की हैं। जो रामचन्द्र की दूसरी ईजाद है। बाबू रामचन्द्र की तरमीम मुझे इस वक़्त बहुत पंसद आयी। यह Confidential नोट में लिख दी जावे।

बाबू श्याम बिहारी लाल को लिख दो कि ब-तारीख़ 18-9-44 उनकी इजाज़त मुन्कताअ कर दी गई। बाबू रामचन्द्र ने आपके पास 3 जुलाई और 30 अगस्त, सन 44 ई० को दो ख़त डाले मगर आप ने किसी का जवाब नहीं दिया। न उन पर तवज्जोह की। यह जो कुछ भी लिखा गया था, वह मेरा हुक्म था। आइन्दा से अगर आप तालीम देंगे तो मुनासिब न होगा। और मुमकिन है कि मौरिज़े अताब हों। क्या आप ने यह समझ रखा है कि कैफ़ीयात मतलूबा किसी दूसरे में पैदा नहीं हो सकतीं। अगर ऐसा ख़्याल है तो आप की नज़र अब तक वसीअ नहीं हुई। बेहतर है कि यह ख़त बाबू मदन मोहन लाल मेरी तरफ़ से लिखें।

22-9-1944

ध्रुव लोक एक ऐसा मुक़ाम है जहां पर कि आला दर्जे के रूहानियत में तरक़्क़ी याफ़्ता इन्सान मौजूद हैं। इस लोक को अपने काम के दायरे में समझो। यहां के साकिनान का जिस्म नहीं है। **आज मैं वायु मण्डल पर पूरा कन्ट्रोल देता हूं।** नक़्शा

सामने आ गया। जिससे यह अन्दाज़ हो गया कि कुर्रा (हवाई) कहां पर है।

जो नक़्शा कि तुम्हारे सामने आया है इससे ऊपर का हिस्सा निहायत लतीफ़ है जो हवा को हरकत देता रहता है। उस कुर्रे को अगर **हवा** का Brain कह दिया जाये तो किसी हद तक ठीक तर्जुमा होता है। यह कुर्रा इन्सानी जिस्म में भी मौजूद है। इसी में अपने आपको फ़ना कर के परवाज़गी की हालत पैदा कर ले। यह एक अमल है जो हर शख़्स को बताना नहीं चाहिये।

मामूल (जिस किसी की हालत जानना है) को पहले थोड़ी सी तवज्जोह दे, यह ख़्याल करके कि इसमें जो भी कैफ़ियत मौजूद है वह उभर गई। ऐसा करने के बाद उससे ख़ुद रूजूअ हो जाये और यह देखे कि असर जो उसका अपने ऊपर आ रहा है, किस क़दर लतीफ़ है। मगर तवज्जोह देने वाले में यह बात लाज़मी तौर पर होना चाहिये कि उसकी हर हालत को एहसास कर सके।

एक बेहतर तरीक़ा और भी है। मगर वह ख़ास-ख़ास लोगों के करने का है। जिसको बाबू रामचन्द्र ने अकसर बताया है। वह यह है कि उसकी हालत को फैला दे। इससे फ़ौरन हालत मालूम हो सकती है। बाबू रामचन्द्र को मैं हुक्म देता हूं कि जो आज इबारत बाबू मदन मोहन लाल के सवाल करने पर लिखाई है, उसको सोचें। मुमकिन है कि कोई बेहतर सूरत निकाल सकें।

एक तरीक़ा यह भी है, मगर कुल्लिया नहीं कि जो लतीफ़ा दूसरे का ज़ोरदार होगा वही असर अपने ऊपर लायेगा।

देखिये बाबू राम चन्द्र ने फ़ौरन् ईजाद कर दी। इससे बेहतर तरीक़ा नहीं हो कसता। मगर इसमें यह बात ज़रूर है कि इस में निगाह ऐसी होनी चाहिये जैसी कि मैंने इनको बख़्शी है। वह तरीक़ा यह है कि जैसे डॉक्टर लोग मुर्दे को जब जांचते हैं तो हर हिस्सा उसका बाहर निकाल लेते हैं ताकि पता चल जाये कि उस की मौत किस बीमारी से हुई है। इसी तरीक़े से मामूल की जो कुछ भी कैफ़ियत हो, उसको बाहर ख़िला में निकाल लें और फिर अपनी तवज्जोह से जो दिल के मुक़ाम से होना चाहिये उसकी कैफ़ियत Expand कर दें। और फिर उसको देखें कि उस में कौन से ज़र्रात भद्दे हैं और कौन से हल्के हैं। और किस लतीफ़े में हालत फैंकने की ताक़त मौजूद हैं। जिसमें हालत फैंकने की ताक़त मौजूद हो, समझ लेना चाहिये कि यह लतीफ़ा उन का

खुल चुका है। यही अमल कुबरा और उलिया में भी काम दे सकता है। बाबू राम चन्द्र की ज़र्रात की थ्युरी बड़े ग़ज़ब की है। और बहुत मौस्सर है। इस तरफ़ किसी की निगाह ही नहीं पहुंची। और न इस ताक़त से कभी किसी ने काम लिया। अगर मुझसे कोई पूछे तो यह तालीम का लब्बो लुबाब है। इस में नतीजा मतलूब फ़ौरन बरामद हो सकता है। इसी के ज़रिये ख़ुदा तक चढ़ाई हो सकती है। यह भी एक ज़रिया है।

मैंने अज़ीज़ राम चन्द्र से उसकी अक़ल को रसा बनाने के लिये एक सवाल कर दिया। जिसका जवाब उसने जदीद तरीके से दिया।

अज़ीज़ रामचन्द्र को सोहरवर्दिया ख़ानदान से भी इजाज़त है। इस लिये उस शख़्स के लिये जो इस दायरे में शामिल होना चाहता है, बहुत मुफ़ीद होगा। यह भी एक नया तरीक़ा है।

तरीक़ा तालीम सोहरवर्दिया

तरीक़ा एक शख़्स जिस की हालत सिर से पैर तक गन्जलक है तो बजाये इसके कि ख़ुद कुछ किया जाये, उसका Connection आला ज़र्रात से कर दिया जाये तो रफ़्ता-रफ़्ता वह ठीक हो जावेगा। और यह बात नैचुरल होगी।

मैंने बाबू रामचन्द्र के Suggestion पर यह बात मंज़ूर कर ली कि उनकी बूआ (यानी जनाबा चची साहिबा) को इजाज़त दे दी जावे। बैअत नहीं कर सकतीं। सिर्फ़ सतसंग के लिये होगी। औरतों में वह ही तालीम किया करेंगी, और इस का ऐलान औरतों में कर दिया जावे। और बाबू मदन मोहन लाल उसकी तसदीक़ करेंगे। अगर कोई ख़ास मुश्किल पेश आ जाये तो बाबू रामचन्द्र को Consult कर लिया जावे। यह भी अगर तवज्जोह देना चाहें तो परदे में बिठा कर, जैसा कि मेरा तरीक़ा था, तवज्जोह दे सकते हैं। और सबके लिये मुमानियत है। अगर फ़तेहगढ़ के लोग सतसंग करना चाहें तो वह अपनी चची से कर सकते हैं। मगर यह लोग उन में से होंगे जिनको वह परदा नहीं करतीं। जलसाये आम में इसके ऐलान करने की ज़रूरत नहीं। फ़तेहगढ़ के लोगों से फ़रदन्-फ़रदन् कह दिया जावे। उनके (चची साहिबा) इस सतसंग के काम में बिरजू या मुन्शी मुख़िल नहीं होंगे। और न उनसे कोई ताल्लुक़ रहेगा। बाबू मदन मोहन लाल को, मुमकिन है कि कुछ पेशतर से जाना पड़े। यह बातें वह तय कर लें। औरतों को आइनदा कभी इजाज़त नहीं दी जायेगी। दीनानाथ भी उनसे (चची साहिबा

से) सतसंग कर सकते हैं।

23-9-44

24-9-44

बिरादरे अज़ीज़ जगमोहन = मैं इस दौरान में खूब घूमा, और सतसंग की हालत को Study किया। मुझे उन में से कोई ऐसा दिखलाई नहीं दिया जो काम चला सके। अब मैं यह मुनासिब समझता हूं कि सेहरा एक ही के सिर रख दिया जाये। और सिर्फ़ एक ही शख़्स उस का काम करने वाला हो। बक़िया लोग उसकी मातहती में काम करें। सिवाये इस तरीक़े के और कोई तरीक़ा सुधार के लिये मालूम नहीं होता। हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब ने खूब किया कि मूढ़ लोगों को जो ख़ुदा बन बैठे थे, सलब कर लिया। मुमकिन है कि यही अमल दूसरों के साथ करना पड़े। दूसरों से मेरा मतलब उन लोगों से है जो क़िब्ला लाला जी साहब से बराहे-रास्त ताल्लुक़ नहीं रखते।

25-9-44

एहसास की क़ाबलियत उस शख़्स में ज़्यादा होती है जिसके जिस्म की हिद्दत शान्ति लिये हुये एतदाल पर हो। सीधापन भी एक ख़ास लोच के साथ शर्त है। यह बात अकसर बच्चों में शुरू ही से पाई जाती है।

सिलसिले में **दाख़िल करने से पहले** यह बात जिज्ञासु में देख लेना चाहिये कि उसको बृह्म विद्या हासिल करने के लिये ताक़त किस हद तक है। यह पता उसके नर्वस सिस्टम और दिमाग़ी कैफ़ीयात से, जो उसको क़ुदरती तौर पर अता हुई हैं, चल सकता है। यह एक जनरल बात है जिस पर सिखाने वाले की नज़र फ़ौरन जाना चाहिये। नर्वस सिस्टम में जितनी हिद्दत ख़िलाफ़े क़ुदरत मौजूद है, उतना ही उसको रूहानी बीमारी का तेज़ असर समझना चाहिये। टप बाथ के असूल का इत्तलाक़ इस पर अच्छा होता है। जो मवाद जिस्म में मौजूद है। डॉक्टर लूई कोमेनी (Naturopathic physician) ने उसको हिद्दत कहा है और वह पानी के ज़रिये से उस मुक़ाम से निकाली जाती है, जहां पर से कि उसके निकलने का रास्ता ठीक है और जल्दी साफ़ हो सकती है। यह बात सिखाने वाले के अनुभव से ताल्लुक़ रखती है कि ऐसे शख़्स

का, जिस हद तक का मर्ज़ है उस हद तक उसको दूर करने की कोशिश की जाये। इसमें एक खास एहतियात की ज़रूरत यह है और इसके लिये क़ाबलियत की ज़रूरत है, कि वह सिर्फ़ उसी हद तक साफ़ करे जो रूहानियत के रास्ते में मुज़िर है। ऐसा न हो कि कुदरती हिद्दत जो जिस्म क़ायम रखने के लिये कुदरत से अता हुई है, साफ़ हो जाये। मैं बाबू रामचन्द्र को इन मामलात में ताक़ समझता हूं और बारीक बीनी की यह मिसाल हैं। जब किसी को (तालीम करने वाले किसी को) ऐसा मौक़ा पड़ जाये कि वह जिज्ञासु के मर्ज़ मज़कूरा को न साफ़ कर सके तो बाबू रामचन्द्र के पास भेज दे। उनसे ऐसी ग़लती सरज़द न होगी जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। इस अमल को हर शख़्स को करने की मुमानियत है। जो बात इस वक़्त इस के दूर करने के लिये बाबू रामचन्द्र ने बतलाई है इससे बेहतर तरीक़ा आज तक किसी के ख़्याल में नहीं आया। यह एक कुदरती Gift है जो (बाबू रामचन्द्र) उसमें मौजूद है।

26-9-44

क़िब्ला मौलाना साहब (रहम०) से मैंने एक और नई दूसरी ईजाद का ज़िक्र किया। बहुत खुश हुये, मुबारकबाद दी।

फ़रमाया = इस तरीक़े को राइज कर दो। यह एक अछूता तरीक़ा है। और निहायत मौस्सर है। किसी के ख़्याल में अब तक यह नहीं आया था। Confidential नोट में दर्ज होना चाहिये। हर शख़्स को बतलाया न जाये। इसके करने वाले उंगलियों पर गिनने के लायक़ हैं। इस तरीक़े में तरमीम की क़तई ज़रूरत नहीं। बिलकुल सही है। बाबू मदन मोहन लाल को इस से फ़ायदा होगा। इस तरीक़े की जो अभी तरमीम की है, इस तरह पर जाड़ों में नहीं किया जा सकता है। तुम्हारी सबसे बड़ी ईजाद ज़मीन के मुत्ताल्लिक़ है। इसको दूसरे नम्बर पर समझना चाहिये।

सवाल मदन मोहन लाल = मन जो यकसू हो कर बुर्ज़गों या देवताओं की शक्ल अपने सामने खड़ी कर लेता है और जो शक्ल बुज़ुर्ग साहिबान या अवतारों की दिखलाई पड़ती हैं, उसमें इम्तियाज़ करने की क्या तरकीब है?

फ़रमाया = अगर मन, पीर को अपनी ताक़त के मुताबिक़ सामने ले आये तो इस बात के अन्दाज़ के लिये कि आया पीर ने खुद महरबानी की है या महज़ मन ने घड़न्त करके एक शबीह क़ायम कर ली है। उस की पहचान यह है कि अगर पीर वाक़ई तौर पर सामने आयेगा तो उसकी निस्बत अपने में ज़ोर मारने लगेगी। और अगर मन

घड़न्त है तो यह बात पैदा नहीं होगी। जब पीर वाक़ई सामने होगा तो ख़लूस तबियत में पैदा हो जायेगा और तबियत हल्की हो जायेगी। बर-ख़िलाफ़ इस के अगर मन-घड़न्त है तो यह बात पैदा न होगी।

अगर देवी देवता अपनी इच्छा से किसी के सामने आते हैं तो जो ख़्वास कि उन में मौजूद हैं वही लहर दिल में मोजज़न होने लगेगी और तबियत भी उस वक़्त वैसी ही बन जावेगी।

लोगों ने बहुत धोखा खाया है कि अपनी मन घड़न्त की शबीह को मुझे तसव्वुर कर लिया है। और जब मैं सामने हुआ तो किसी को तमीज़ ही न हुई।

सवाल मदन मोहन = "क्या कोई ऐसा मुर्जरिब नुस्ख़ा है जिससे पीर की अज़मत उस भाई पर फ़ौरन क़ायम कर दे जो पीर को जिस्म छोड़ने के बाद गया हुआ समझ रहा है और पीर की अज़मत और हैबत उस पर तारी हो जाये?"

जवाब आइन्दा मिलेगा। हवाला वाक्ये कटियान, ज़िला बदाँयू, 30 या 31 दिसम्बर, सन 43 ई० 4 बजे सुबह को मौज़ा कटियान में श्री किशन लाल और मदन मोहन लाल मराक़्बे में थे। उस वक़्त श्री किशन ने देखा कि हज़रत क़िब्ला ने मदन मोहन लाल और चतुर्भज सहाय की तरफ़ देखकर फ़रमाया कि मेरी औलाद नालायक़ निकली लेकिन श्री किशन की तरफ़ सिर्फ़ देखा; जिसका मतलब श्री किशन ने यह लिया कि मैं अच्छा हूं। यह दोनों की बाबत इरशाद हुआ है।

दोपहर आज हज़रत क़िब्ला ने फ़रमाया = श्री किशन बेकार हो गये। उनको चतुर्भुज सहाय की सोहबत अच्छी नहीं मिली। मेरी पैरवी दोनों में से किसी न नहीं की। बदायूं (मौज़ा कटियान) में मैंने बशारत दी थी कि यह बात उनके दिल से लग जाये और वह अपने सुधार की कोशिश करें। मेरा मतलब कुल रूहानी औलाद से था। उसमें तुम (RC) भी शमिल थे इसलिये कि तुमने मेरे होते हुए दूसरे को दिल क्यों दिया। आइन्दा से इसकी सख़्त एहतियात रखी जाये। तुम्हारे दिल देने में एक ख़ास बात यह थी कि तुम (RC) और तुम्हारा दिल वाक़ई तौर पर मेरी तरफ़ पूरे तौर से खिंचा रहता था। मगर इश्क़ की बेक़रारी की वजह से दूसरों से रूजूअ हो जाते थे। सादा लूही भी शमिले हाल थी। इसलिये तुम को (RC) माफ़ कर दिया वरना मैं सख़्त सज़ा देता।

■ ■ ■

GLOSSARY

शब्द		अर्थ
अब्जद ख्वाँ	=	A, B, C, D सीखने वाले, नौसिखिये
आलमे बाला	=	परलोक
अतिया	=	बख़शिश, इनाम दी हुई चीज़, Gift
अन्सर	=	तत्व (यानी आकाश, वायू, अग्नि, जल और पृथ्वी), Element
अकिल हलाल	=	हलाल की रोज़ी, Earning by pious and honest means.
अर्शे–मौअल्ला	=	सबसे ऊँचा आसमान, High heavens
असल	=	Real, वास्तविक
असल हिज़्ज़	=	वास्तविक आनन्द, Real Bliss
अन्नमय कोश	=	Food Sheath
अफ़्शा होना	=	प्रगट होना, ज़ाहिर होना, Reveal
आलमे–इरवाह	=	परलोक, रूहों की दुनिया
अब्द (अबद)	=	अनंत काल, वह समय जिसका अन्त न हो, हमेशगी
अबदी	=	ग़ैरफ़ानी, दायमी, अनश्वर, हमेशा रहने वाला
अबि्दयत	=	हमेशगी, बक़ाएदुवाम, हमेशा ज़िन्दा रहना
अमल	=	अभ्यास, काम करना
आमिल	=	अमल करने वाला, अभ्यासी
औसाफ़	=	गुण, खुबियां, अच्छाईयाँ
अख़लाक़ (इख़लाक़)	=	सद्व्यवहार, सदाचार
अदब	=	सभ्यता, शिष्टाचार, तमीज़, साहित्य, सम्मान

अद्‌बार या इद्‌बार = हत भाग्यता, दुर्दशा, बद–क़िस्मती

आबे–ज़र = सोने का पानी

मुस्तफ़ीज़ = फ़ैज़ चाहने वाला, फ़ायदा उठाने वाला, कृपा पात्र, लाभान्वित

मस्लेहत = नेक सलाह, अच्छा मश्विरा, मुनासिब तजवीज़, खुबी, भलाई, हिकमत, पॉलीसी

मुआज़ना = बराबरी, Comparison

मुहासिबे नफ़्स = अपने मन की पड़ताल करना, स्थूल शरीर की दसों इन्द्रियों से होने वाली समस्त क्रियाओं को नियन्त्रण में रखना और उन के प्रति आसक्ति और करतापन की भावनाओं से मुक्त करना, यानी वृत्तियों का कन्ट्रोल।

मुचैटा = विरोध, आमना–सामना, बहस, तकरार, बराबरी, ज़िद्द, मुख़ाल्फ़त, इख़्लाफ़, Confrontation, Comparison

मुस्तनद = सनद पाया हुवा, Certified, तस्दीक़ किया हुवा, क़ाबिले एत्बार, मोतबर, क़ाबिले एत्माद

मुरव्वत = लिहाज़, रिआयत, भलमन्साई, फ़ैयाज़ी

मुस्तस्ना = अलगा किया गया, वह शख़्स या चीज़ जिसे पृथक कर दिया गया हो, Free

मुन्तक़िल करना = एक जगह से दूसरी जगह करना, Transfer करना

मफ़्क़ूद = खोया हुआ, ग़ायब, नापैद, नदारद

माजून मुरक्कब = कोई मुरक्कब दवा जो कई दवाओं को

मिलाकर आटे की तरह गूंध कर बनाई गयी हो।

मस्लूब उल फ़ेल = जिस से काम काज छीन लिया गया हो।

मुतबन्नी = बेटा बनाया हुवा, लय–पालक, गोद लिया हुवा, फ़रज़न्दी में लिया हुआ, **Adopted Son.**

मुतनब्बी = तनबीह किया गया, ख़बरदार, आगाह, होशियार, चौकस किया गया।

मलऊन बातस्वीर = सरापा मरदूद, लानत किया गया।

मुतनब्बियः = **Warning Administrator**

मुज़रत रसाँ = हानि पहुँचाने वाला

मूरिदे इताब = वह शख्स जिस पर क्रोध किया जाये, क्रोध का निशना बनना, **Liable for punishment**

मोरिज़े इताब = क्रोध ज़ाहिर होगा, (मोरिज़=क्रोध ज़ाहिर होने की जगह)

मुतफ़न्नी = मक्कार, फ़रेबी, दग़ाबाज़

मुतमन्नी = तमन्ना करने वाला, इच्छा करने वाला, इच्छुक

मुन्तहीे = वह शख़्स जो तहसील इल्म मुकम्मिल कर चुका हो। कामिल लायक़, फ़ाज़िल, इन्तहा को पहुँचने वाला

मुशियते ईज़्दी = अल्लाह की मरज़ी, हुक्मे रब्बी, ईश्वरीय आदेश

मियादे–मोइना = मुकर्रर किया हुवा वक़्त, वायदे का समय

मदारिज = बहुवचन दर्जे का, रूत्बे, **Stages.**

मारका	=	लड़ाई, झगड़ा, हंगामा, लड़ाई का मैदान
मामूल	=	वह शख़्स जिस पर अमल किया गया हो, वह बात जो रोज़मर्रा की जाये, रिवाज, दस्तूर।
माज़ूरी	=	मजबूरी, लाचारी
मख़्मूर	=	मदहोश, मतवाला
माहे–दरख़्शाँ	=	चमकता हुआ चाँद
मुजर्रिब	=	तर्जुबा करने वाला, आज़माने वाला, आज़मूदा, मौसर, Effective
मौसर	=	असर करने वाला, Effective
मज़्कूरा	=	ज़िक्र किया गया, कथित
मक़ूला	=	क़ौल, कही हुई बात, Thesis Dissertation, Discourse
मुन्क़ताअ	=	क़ताअ होने वाला, Broken, फ़ैसला शुदा
मुख़्तार	=	स्वाधीन, स्वतन्त्र, अधिकृत,
हम आहंगी	=	सहमती, मुत्तफ़िक़–उल–राय
हज़ूर द्वाम	=	सतत संमुखता, प्रत्यक्षता
हिज़ाब	=	परदा
हमा काह	=	तमाम कटी हुई सूखी घास
हमा	=	कुल, सारा, जुम्ला, तमाम
हस्ब रियाह	=	अपान वायु का ख़ारिज न होना Wind pass न होना
हम जलीस	=	साथ उठने बैठने वाला, साथी
हमसरी	=	बराबरी
हवासे ख़म्सा	=	पाँचों इन्द्रियाँ
हस्बे इस्तताईयत	=	अपनी शक्ति के अनुसार, According to Capabilities

हुवैदा होना = खुलना, ज़ाहिर होना

ग़ैर मोतबर = नाक़ाबिले एत्बार, झूठा

गिलान = गिरी हुई हालत

ग़ैबत = गैर हाज़िरी (Absence)

ग़ीबत = किसी के पीठ पीछे बुरा कहना, चुग़ली करना

इतलाक़ = किसी चीज़ का दूसरी पर मामूल होना, बोला जाना, प्रयोग होना, रवां करना, जारी करना, आयद करना

इस्तियारा = रूपक, लक्षण, Metaplor, Simile, मांग लेना

इल्तफ़ात = तवज्जोह, महरबानी, ध्यान, ख़याल

इज्ज़ = मिस्कीनी, ग़रीबी, मिन्नत समाजत, ख़ुशामद, कमज़ोरी

इक़्तबासात = चुने हुये कलाम, अख़्ज़ करना, Quotations

उम्म उलदिमाग़ = दिमाग की माँ (Rooth of Mind) (इस को कैलाश पर्वत कहा जा सकता है)

उलिया = पार ब्रहमाण्ड मंडल (Para-Cosmic Region)

ऐवज़ = बदला

तिफ़्ल = बच्चा

तिफ़्ले मक्तब = स्कूल के बच्चे

तरमीम	=	इस्लाह, दुरस्ती, मरम्मत, संवारना, Alteration
ताअस्सुब	=	बेजा हिमायत, तरफ़दारी
तक़ाज़ाए बशिरयत	=	इन्सानी ज़रूरत
तल्क़ीन करना	=	तालीम देना, सिखलाना, हिदायत करना, नसीहत करना
तहतुलसरा	=	पाताल लोक
ताक़ समझना	=	पारांगत समझना, माहिर समझना, लासानी समझना, Expert

क़वाअ (या कुव्वा)	=	शक्तियाँ
क़फ़से अन्सरी से परवाज़ करना	=	मौत हो जाना (Literally to leave the prison of Elements)
क़ाबिले तहसीन	=	सराहने के लायक Praiseworthy
क़लन्दर	=	दीन व दुनिया से आज़ाद आदमी
कुफ़्र	=	नाशुकरी, ख़ुदा को न मानना, बेदीनी, हठ, ज़िद्द
कुफ़्राने नेमत	=	नमक हरामी, एहसान फ़रामोशी, नेमत की नाशुकरी
कोशाँ रहें	=	प्रयत्नशील रहें, कोशिश करते रहें
कशफ़	=	अन्दरूनी हालत का खुलना, ज़ाहिर होना, आत्म शक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान
कुबरा	=	ब्रहमाण्ड मण्डल (Cosmic Region)
किब्रिया	=	श्रेष्ठता, ख़ुदा,

ख़िल्जान	=	परेशानी, फ़िक्र, चुभन, ख़लिश
ख़्वारक़	=	मोजज़े, करामतें, Miracles

ख़मीर	= गुंधे हुये आटे को कुछ देर तक गरमी में रख कर या किसी खट्टी चीज़ से फुला देना (Yeast) फितरत, मिज़ाज, तबीयत
ख़्वास	= गुण
बशारत	= ख़ुशख़बरी
बायद व शायद	= जैसा चाहिए, निहायत मुनासिब, जैसा लायक़ है, दुरस्त
बाक़ी हमा काह	= बाक़ी कटी हुई सूखी घास
ब–हमा जहत	= सब तरफ़ से
बिलक़स्द	= क़सदन, जान बुझकर
बहरे ज़ख़्ख़ार	= मौजें मारता हुआ समुद्र (Infinite Ocean)
बराहे रास्त	= सीधे रास्ते से, Directly
बवजूहात चन्द दर चन्द	= किन्ही कारणों से (Due to certation reasons)
परस्तिश गाह	= पूजा की जगह, मन्दिर
पस–पुश्त	= पृष्ठ भूमि, Background
पड़पाटी	= परिपाटी
पेशे नज़र	= नज़र के सामने, दृष्टि गोचर
यके बाद दीगरे	= एक के बाद एक
नीज़	= फिर, दोबारा, Repeat
नालाँ	= रोता हुवा, वावेला करने वाला, फ़रियादी, आजिज़, तंग, शाकी

नफ़्सा नफ़्सी = आपा–धापी, ख़ुदगर्ज़ी
नश्वो नुमा = फूलना फलना, परवरिश पाना

दहरिया = ख़ुदा को न मानने वाला, नास्तिक, बेदीन

शनावरी = तैराकी, पैराकी, Swimming

लाबुदी = आवश्यक, लज़मी, ज़रूरी, यकीनी
लब्बो लुबाब = निचोड़, Essence, निहायत ख़ालिस, सत का सत, ख़ुलासे का ख़ुलासा

रग व रेशा = रग–पट्ठा, गोश्त–पोस्त
ज़ौमे–बातिल = झूठा घमंड
ज़र्बुल मिसल = कहावत, वह जुम्ला जो मिसाल के तौर पर मशहूर है। (Example to be quoted)
जुमला हवास = तमाम इन्द्रियाँ
जमीअ हवासे ख़म्सा = तमाम इन्द्रियों को
ज़माने की नैरंगी = ज़माने की धोखे बाज़ियां, मक्रोफ़रेब, ज़माने की जादूगरी

ज़ईफ़ी = बुढ़ापा, कमज़ोरी
ज़ात का परतौ = ज़ात का प्रतिबिम्ब

परवरिश व परदाख़्त = पालना पोसना, देख भाल करना, हिफ़ाज़त करना

परतौ = अक्स, प्रतिबिम्ब, छाया, रोशनी, किरण, चमक

फ़िलहाल = अभी

फ़र्ज़ अव्वला = First and foremost duty, प्रथम कर्तव्य

फुक़रा = साधू , संत

फ़रोग़ और नज़ूल = उतार चढ़ाव, सरबलन्दी हासिल करना और नीचे गिरना

वुसअत = फैलाव, चौड़ाई, समाई, गुन्जाइश, Expansion

वसीअ = चौड़ा (Wide, Broad) दूर तक फैला हुवा

समरा = फल

साकिनान = रहने वाले

सादा लोही = सादगी, भोलापन, Simple Mindedness

शाबीह = शक्ल

सलब कर लेना = छीन लेना

समाअ ख़राशी = कान खाना, मग़ज़ चाटना

शाकी = शक करने वाला

शरीक व समीअ = परमात्मा का साझीदार, शिरकत करने वाला, साथी, रिश्तेदार, शामिल, मिला हुआ

शिम्ला = पगड़ी का तुर्रा

शिम्ला बर अन्दाज़े इल्म = जितना इल्म (ज्ञान) हो उस की मुनास्बत से दावा ठीक है

शिरकत = सम्मिलित होना

हज़रत मुहम्मद साहब रसूल अल्लाह, उन के साथी, दूसरे पैग़म्बरों, फरिश्तों, तथा महान सूफ़ी सन्तों के नाम के आगे कुछ संकेताक्षरों का प्रयोग होता है, उन का अर्थ तथा संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. सल्ल० "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" – अर्थात उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो। (Peace be on him) हज़रत मुहम्मद साहब का नाम लेते हैं या सुनते है तो आदर और प्रेम के लिये प्रार्थनार्थ यह शब्द बढ़ा देते हैं।

2. रज़ि० - "रज़ी अल्लाह अनहु" – अर्थात उन से अल्लाह राज़ी (प्रसन्न) रहे। हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल० के किसी साथी या परिवार के सदस्य के नाम के साथ आदर और प्रेम के लिये प्रार्थनार्थ यह शब्द बढ़ा देते हैं।

3. रहम० - "रहमतुल्लाहू अलैहि" – अर्थात उन पर अल्लाह की कृपा हो। महान सूफ़ी सन्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते हैं।

4. कु० सि० - "कुद्स सिरर्हु" – अर्थात उन की आदतें और स्वभाव पवित्र हों। सूफ़ी सन्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते हैं।

5. अलैहि० - "अलैहिस्सलाम" – अर्थात उन पर ईश्वर की सलामती हो। हज़रत मुहम्मद साहब स्ल्ल० के अतिरिक्त अन्य पैग़म्बरों तथा फ़रिश्तों के नाम के साथ दुआ के यह शब्द बढ़ा देते है।